ॐ

KUNDLI REPORTS



# गुरु गोचर रिपोर्ट

आपकी कुंडली पर गुरु का गोचर

नाम: **Ananya Sample**

जन्म: **17 अगस्त 1994, 07:42 (स्थानीय समय)**

स्थान: **Jaipur, Rajasthan, India**

लग्न: **सिंह**

चंद्र: **धनु · मूल नक्षत्र**

**नमूना रिपोर्ट (SAMPLE), काल्पनिक जन्म विवरण**

**कृपया ध्यान दें:** ज्योतिष रिपोर्ट केवल मार्गदर्शन, आत्म-चिंतन और मनोरंजन केलिए हैं। ये पारंपरिक पद्धतियों पर आधारित हैं, वैज्ञानिक रूप से प्रमाणित नहीं हैं और किसी परिणाम की गारंटी नहीं देतीं। ये चिकित्सा, कानूनी, वित्तीय, मनोवैज्ञानिक या अन्य पेशेवर सलाह का विकल्प नहीं हैं। रिपोर्ट केआधार पर स्वास्थ्य, कानूनी या वित्तीय निर्णय न लें। कुंडली कंप्यूटर द्वारा गणना की जाती है (स्विस एफ़ेमेरिस, लाहिरी अयनांश) और व्याख्याएँ AI सहायता से लिखी व मनुष्यों द्वारा संपादित हैं। कोई ज्योतिषी व्यक्तिगत रिपोर्ट की समीक्षा नहीं करता। पूरा अस्वीकरण अंतिम पृष्ठ पर है।

# जन्म कुंडली (D1, राशि): उत्तर भारतीय शैली

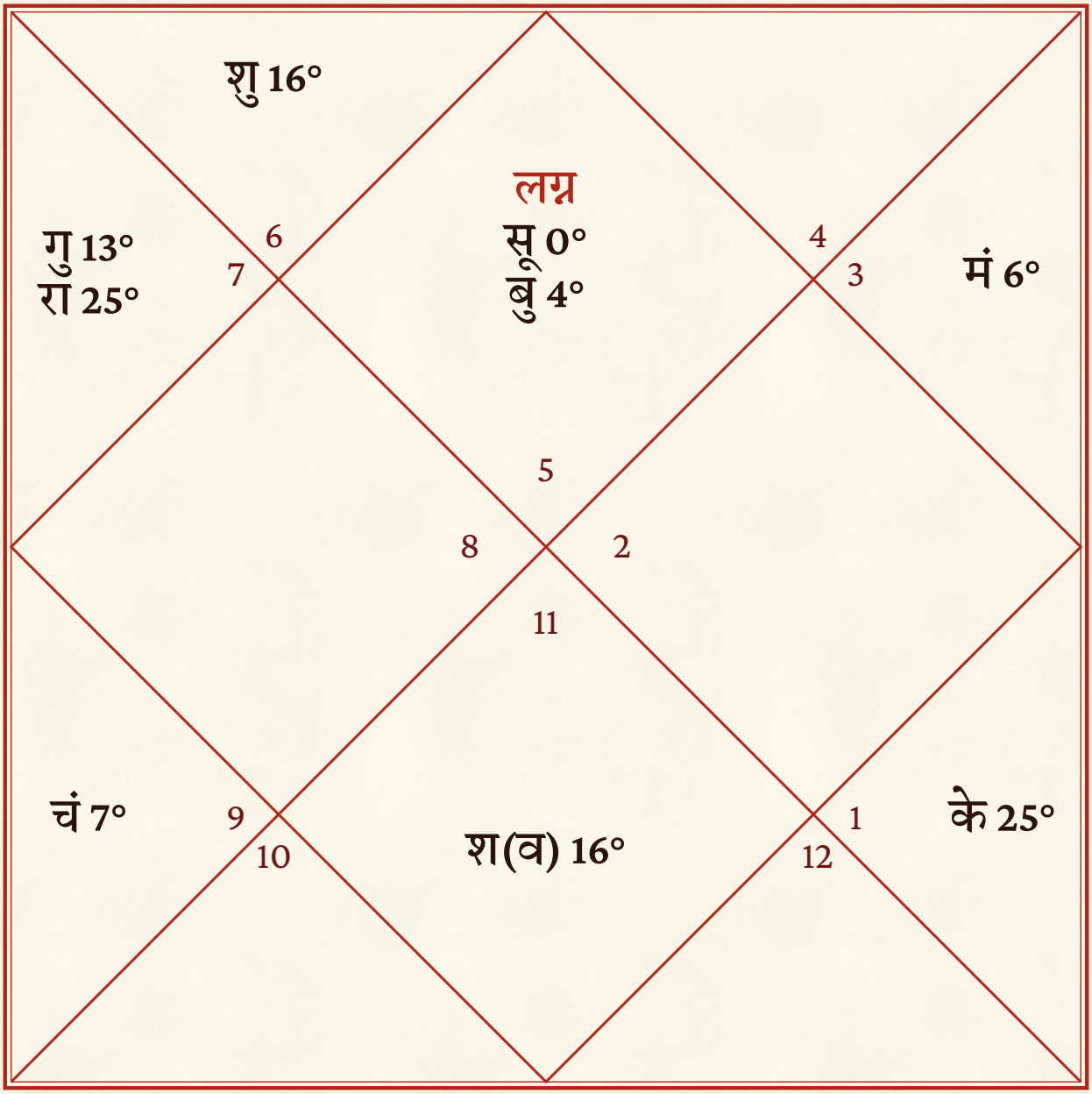


**जन्म कुंडली (D1, राशि): उत्तर भारतीय शैली**

यह आपकी जन्म कुंडली उत्तरी (हीरे जैसी) शैली में है। पहला भाव ऊपर केहीरे में है; भावों में लिखी संख्याएँ राशियाँ हैं (1 मेष है)। ग्रह-लेबल उस राशि में अंश दिखाते हैं। यह स्थितियों का मानचित्र है, घटनाओं का पूर्वानुमान नहीं।

# D1: दक्षिण भारतीय शैली

| | | | |
|---|---|---|---|
| मीन | मेष<br>के 25° | वृषभ | मिथुन<br>मं 6° |
| कुंभ<br>श(व) 16°<br>मकर | D1: दक्षिण भारतीय शैली | | कर्क<br>सिंह<br>लग्न<br>सू 0°<br>बु 4° |
| धनु<br>चं 7° | वृश्चिक | तुला<br>गु 13°<br>रा 25° | कन्या<br>शु 16° |

**D1: दक्षिण भारतीय शैली**

यही जन्म कुंडली दक्षिणी (वर्ग) शैली में है, जिसमें राशियाँ स्थिर हैं (मीन ऊपर-बाएँ कोष्ठ में)। इसे पिछले पृष्ठ की उत्तरी कुंडली से मिलाकर देखें। दोनों एक ही कुंडली का वर्णन हैं।

# चंद्र कुंडली

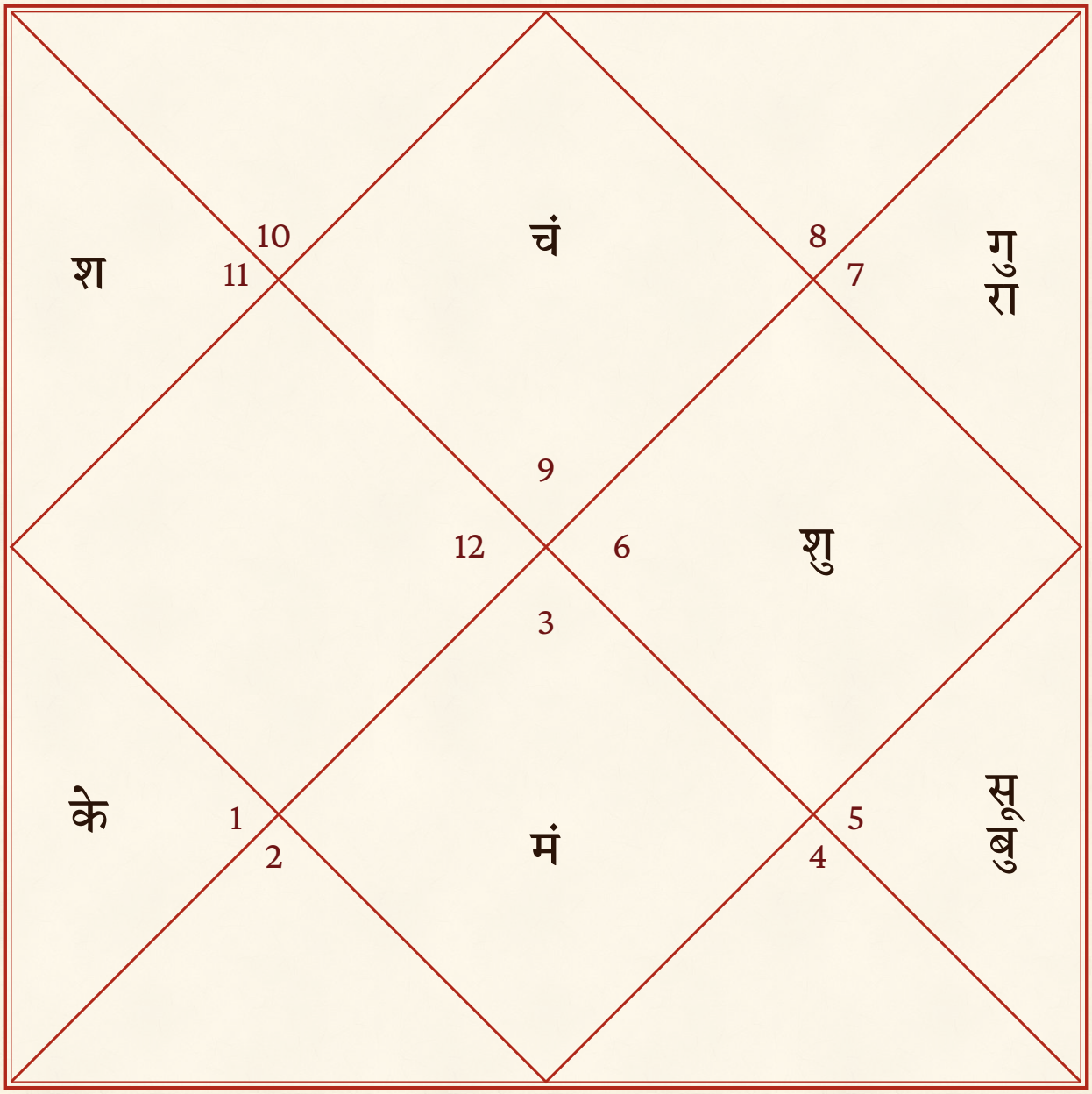


चंद्र कुंडली

चन्द्र कुंडली भावों की गणना जन्म-चन्द्र से करती है। साढ़े साती जैसे गोचर और किसी अवधि केभाव-स्वर केलिए यही संदर्भ प्रचलित है। इसे लग्न कुंडली के साथ पढ़ें, उसके स्थान पर नहीं।

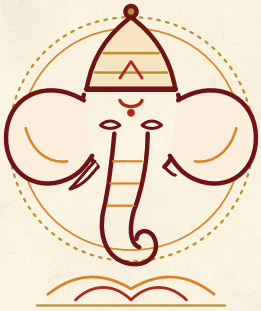

## ॥ श्री गणेशाय नमः ॥

*वक्रतुण्ड महाकाय सूर्यकोटि समप्रभ ।*
*निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा ॥*

# जन्म पत्रिका

| | |
|---|---|
| **नाम** | Ananya Sample |
| **जन्म तिथि (दिनांक)** | 17 अगस्त 1994 |
| **जन्म समय** | 07:42 (स्थानीय समय) |
| **जन्म स्थान** | Jaipur, Rajasthan, India |
| **वार** | बुधवार |
| **जन्म तिथि** | शुक्ल पक्ष एकादशी (11) |
| **नक्षत्र** | मूल · पद 3 |
| **योग** | विष्कुंभ |
| **करण** | विष्टि (भद्रा) |
| **लग्न** | सिंह |
| **राशि (चंद्र राशि)** | धनु |
| **चांद्र मास** | श्रावण (अमांत) |
| **संवत** | विक्रम संवत 2081 · शक 1916 |

ऊपर दिए जन्म विवरण से स्विस एफ़ेमेरिस और लाहिरी अयनांश द्वारा, पारंपरिक जन्म-पत्रिका की रीति से तैयार।

# विषय-सूची

1. इस रिपोर्ट को कैसे पढ़ें
2. आपका व्यक्तित्व
3. सरल शब्दों में आपकी कुंडली
4. अभी आप कहाँ हैं: आपकी वर्तमान दशा
5. सरल शब्दों में इस रिपोर्ट का विषय: गुरु का प्रभाव
6. जन्म विवरण और पंचांग
7. जन्म कुंडलियाँ और ग्रह-स्थितियाँ
8. नक्षत्र और तारा चक्र
9. गुरु का गोचर: अगले तीन वर्ष
10. आपकी जन्म कुंडली में गुरु
11. आज सभी ग्रह
12. गुरु का आशीर्वाद: मुख्य भाव
13. गुरु का आशीर्वाद: कारक ग्रह
14. गुरु विस्तार से: वर्ग और गोचर
15. गुरु का आशीर्वाद: समय-खिड़कियाँ
16. ग्रह-दर-ग्रह विश्लेषण
17. भाव-दर-भाव विश्लेषण
18. विभाजन कुंडलियाँ (षोडशवर्ग)
19. ग्रह-बल: षड्बल और अष्टकवर्ग
20. ग्रह मैत्री (पंचधा मैत्री)
21. ग्रह अवस्थाएँ (जाग्रदादि और दीप्तादि)
22. आपकी कुंडली के योग और दोष
23. जैमिनी चर कारक
24. विंशोत्तरी दशा: अवधियाँ और फल
25. जीवन भर की विंशोत्तरी दशा: सभी महादशाएँ और अंतर्दशाएँ
26. प्रत्यंतर दशा सारणी: अगले 3 वर्ष
27. योगिनी दशा
28. गोचर समय-रेखा: अगले 24 महीने
29. जीवन भर साढ़े साती और ढैया
30. मासिक दृष्टि (12 महीने)
31. पारंपरिक उपाय (वैकल्पिक)
32. शब्दावली
33. महत्वपूर्ण अस्वीकरण

यह रिपोर्ट आपके दिए गए जन्म विवरण से स्विस एफ़ेमेरिस, लाहिरी अयनांश वाली निरयन राशि-पद्धति, पूर्ण-राशि (whole-sign) भाव और माध्य राहु-केतु के आधार पर गणना की गई है, भारतीय (वैदिक) ज्योतिष में सबसे अधिक प्रचलित पद्धतियाँ।

इसे अंतिम निर्णय नहीं, बल्कि आत्म-चिंतन का दर्पण समझें। पारंपरिक ज्योतिष प्रवृत्तियों और समय के विषयों का वर्णन करता है; वास्तव में क्या होगा, यह आपके निर्णय, प्रयास और परिस्थितियाँ तय करती हैं।

इस रिपोर्ट को कैसे पढ़ें

## इस रिपोर्ट को कैसे पढ़ें

इस रिपोर्ट की तीन परतें हैं। पहले आपके जन्म के तथ्य हैं: पंचांग, कुंडलियाँ और सटीक ग्रह-स्थितियाँ। फिर हर ग्रह, हर भाव और उनसे बनने वाले योगों का विश्लेषण है। अंत में समय है: दशाएँ, गोचर और महीने-दर-महीने टिप्पणियाँ।

पहले कुंडलियाँ देखें। उत्तर भारतीय (हीरा) शैली में ऊपर बीच का खाना सदा प्रथम भाव (लग्न) होता है और भाव वामावर्त चलते हैं; छोटी संख्याएँ राशियाँ हैं (1 = मेष)। दक्षिण भारतीय शैली में राशियाँ स्थिर रहती हैं (ऊपर बाएँ मीन, फिर दक्षिणावर्त) और लग्न अंकित होता है।

हर कथन किसी तालिका में दिखाई गई गणना से जुड़ा है। जब कोई अनुच्छेद किसी ग्रह को बलवान बताए, तो गरिमा, षड्बल और अष्टकवर्ग तालिकाएँ देखें। परंपरा कई कारकों को साथ तौलती है, आप भी ऐसा करें; एक कठिन कारक शायद ही कुछ तय करता है।

समय वाले खंड बताते हैं कि कब कौन-से विषय उभरते हैं, यह नहीं कि क्या घटेगा। दशा और गोचर की तिथियों से समीक्षा, बातचीत और प्रयासों की योजना बनाएँ। कोई अवधि कठिन लगे तो उसे चेतावनी नहीं, तैयारी का निमंत्रण समझें।

विभाजन कुंडलियाँ (वर्ग) सटीक जन्म-समय पर निर्भर हैं। यदि आपका समय कुछ मिनट से अधिक अनिश्चित है, तो D10 और उससे सूक्ष्म कुंडलियों तथा दशा की सटीक आरंभ-तिथियों को अनुमानित मानें।

उपाय वैकल्पिक पारंपरिक अभ्यास हैं। इनमें आपके समय के अतिरिक्त कुछ नहीं लगता और कुछ ख़रीदना आवश्यक नहीं। यह रिपोर्ट केवल मार्गदर्शन और चिंतन के लिए है; यह चिकित्सीय, कानूनी, वित्तीय या मनोवैज्ञानिक सलाह नहीं है।

# आपका व्यक्तित्व

शायद आप वही व्यक्ति हैं जिसकी ओर लोग तब देखते हैं जब माहौल को गर्मजोशी, दिशा या थोड़े साहस की ज़रूरत हो।

## ❖ दूसरे आपको कैसे देखते हैं, और आप भीतर कैसा महसूस करते हैं

आपका सिंह लग्न वह चेहरा है जो आप दुनिया को दिखाते हैं। लोग प्रायः आपको सीधा, ऊर्जावान और तुरंत काम करने वाला मानते हैं। आपने देखा होगा कि किसी बैठक या पारिवारिक जमावड़े में सब आपकी पहल का इंतज़ार करते हैं, और बात टलती रहे तो आप बेचैन हो जाते हैं। धनु राशि का चंद्र आपका निजी पक्ष दिखाता है। भीतर आपकी भावनाएँ तेज़ और गर्म बहती हैं: उत्साह, झुंझलाहट और जोश जल्दी आते हैं, और आपको उन्हें दबाकर बैठने के बजाय कुछ करना होता है। चंद्र आपके पंचम भाव में है, जो बुद्धि, पढ़ाई, रचनात्मक काम, प्रेम और संतान का क्षेत्र है; वहाँ जो होता है वह आपके मन को सबसे अधिक छूता है, और वहीं आप सुकून भी खोजते हैं।

यहाँ बाहर का आप और भीतर का आप एक ही भाषा बोलते हैं, इसलिए लोग जो देखते हैं वह आपकी भावनाओं के बहुत क़रीब होता है। इससे आप सच्चे और आसानी से समझ आने वाले लगते हैं, हालाँकि कभी-कभी आपको एक शांत कोना चाहिए जहाँ आप ख़ुद में लौट सकें। आपका जन्म नक्षत्र मूल अपना अलग रंग जोड़ता है: परंपरा इसे इन गुणों से जोड़ती है: जड़ तक पहुँचना, दार्शनिक गहराई और नए सिरे से शुरू करने का साहस। नए लोगों और नई स्थितियों से मिलने के आपके ढंग में आप इन्हें पहचान सकते हैं। भीतर से (सिंह में सूर्य) आप रचना करना, नेतृत्व करना और अपने असली रूप में सराहे जाना चाहते हैं; दिल खोलकर देने पर आप सबसे अधिक चमकते हैं। आपका सूर्य प्रथम भाव (आपका शरीर, ऊर्जा, स्वभाव और लोगों पर पड़ने वाली पहली छाप) में है, जो दिखाता है कि आप कहाँ सबसे अधिक चमकना और सम्मान पाना चाहते हैं; जीवन के उस हिस्से की पहचान आपका आत्मविश्वास बढ़ाती है।

## ❖ आपकी शक्तियाँ, अनदेखी कमज़ोरियाँ और तनाव में आपका स्वभाव

आपका सबसे बलवान ग्रह सूर्य है, जो आपको आत्मविश्वास, नेतृत्व और उद्देश्य की भावना देता है। लोग अक्सर आपको ज़िम्मेदारी सौंपते हैं और निर्णय के लिए आपकी ओर देखते हैं। इसके ठीक बाद बुध है, जो तेज़ और व्यावहारिक बुद्धि, अच्छी अभिव्यक्ति और अंकों या शब्दों की कुशलता जोड़ता है। आपकी कुंडली में शश योग है (पाँच 'महापुरुष' योगों में से एक, जो केंद्र में बलवान शनि से बनता है), जिसे परंपरा आपके व्यक्तित्व में स्पष्ट अनुशासित, सहनशील पक्ष मानती है। लग्न या चंद्र से दशम में शुभ ग्रह है (अमल योग), जो परंपरा में साफ़ छवि का संकेत है: लोग आपकी नीयत पर भरोसा करते हैं। आपकी कुंडली में राजयोग है, यानी कर्म और भाग्य के भावों का जुड़ाव; परंपरा इसे नेतृत्व और पहचान की क्षमता मानती है, जो प्रयास से बढ़ती है।

आपकी अनदेखी कमज़ोरी अधीरता हो सकती है: आप सारे तथ्य आने से पहले निर्णय ले सकते हैं, या कोई तीखी बात कहकर भूल जाते हैं जबकि सामने वाला उसे याद रखता है। जिस क्षेत्र को अधिक अभ्यास चाहिए वह शुक्र से जुड़ा है: संबंध, आराम और आत्म-सम्मान। प्रेम में आपके मानक बहुत ऊँचे हो सकते हैं, या जो पास है उसका आनंद लेना कठिन लग सकता है। तनाव में आप बेचैन या चिड़चिड़े हो जाते हैं और तुरंत कुछ न कुछ करना चाहते हैं। शारीरिक गतिविधि, तेज़ सैर या कोई एक छोटा काम पूरा करना आपको बातचीत से भी जल्दी सहज कर देता है।

**मुख्य बात**

आप तब सबसे अच्छे होते हैं जब अपनी स्वाभाविक अग्नि तत्व वाली शैली पर भरोसा करते हैं; सफल होने के लिए आपको कोई और बनने की ज़रूरत नहीं। जब कुछ ठीक न लगे, तो प्रायः इसलिए कि आप उसे दबा रहे थे।

## ❖ आप निर्णय कैसे लेते हैं और बात कैसे करते हैं

यह सोच और वाणी के ग्रह बुध से आता है, जो सिंह में है। आप जल्दी निर्णय लेते हैं और अपने मन पर भरोसा करते हैं। आपने देखा होगा कि पहला अंदाज़ा अक्सर सही निकलता है, पर किसी बड़े वादे से पहले एक रात रुक जाना कभी-कभार की जल्दबाज़ी से बचा लेता है। आप सीधे और जोश के साथ बात करते हैं; लोग जानते हैं कि वे आपके साथ कहाँ खड़े हैं। संदेश नहीं, कहने का ढंग थोड़ा नरम करने से आप कहीं अधिक प्रभावशाली बनते हैं। बुध आपके प्रथम भाव में है, जो आपका शरीर, ऊर्जा, स्वभाव और लोगों पर पड़ने वाली पहली छाप का क्षेत्र है, इसलिए आपकी योजना, चिंता और बातचीत का बड़ा हिस्सा इन्हीं बातों की ओर मुड़ता है। भावनात्मक रूप से अग्नि तत्व का चंद्र आगे बढ़ना चाहता है: यदि निर्णय लटकता रहे तो आप केवल इंतज़ार ख़त्म करने के लिए उसे ले सकते हैं, इसलिए अपने आवेग से एक दिन बाद की समय-सीमा रखें।

## ❖ आप प्रेम कैसे करते हैं

यह स्नेह के ग्रह शुक्र से आता है, जो कन्या में है। प्रेम में आप वफ़ादार, स्थिर और व्यावहारिक देखभाल से स्नेह जताने वाले हैं: खाना बनाना, बातें याद रखना, साथ खड़े रहना। आपको भरोसा करने में समय लगता है और लगातार निभाने वाला साथी चाहिए; बड़े शब्द आपके लिए भरोसे से कम मायने रखते हैं। शुक्र आपके द्वितीय भाव (बचत, परिवार के संबंध, आपकी वाणी और खान-पान की आदतें) में है, जो दिखाता है कि आपको कहाँ आनंद और सहजता मिलती है, और लोग आपको कहाँ सबसे आकर्षक पाते हैं। आपका सप्तम (साझेदारी) भाव वायु राशि में है, इसलिए मित्रता और बातचीत आपके रिश्तों के केंद्र में हैं; आपको ऐसा साथी चाहिए जिससे हर बात हो सके और जो आपको खुलकर साँस लेने दे। साथी से आपके चंद्र को उत्साह और ईमानदारी चाहिए।

## ❖ आप धन कैसे सँभालते हैं

यह आपके द्वितीय (बचत) भाव से आता है, जो कन्या राशि का है। धन के मामले में आप सावधान हैं और मात्रा से अधिक गुणवत्ता को महत्व देते हैं। आपको बचत बढ़ते देखना अच्छा लगता है और कर्ज़ से बेचैनी होती है; समय के साथ यह धैर्य एक बड़ी पूँजी है। आपके द्वितीय भाव का स्वामी बुध आपके प्रथम भाव (आप स्वयं) में है, इसलिए धन प्रायः आप स्वयं के माध्यम से आता है और उन्हीं पर ख़र्च भी होता है। आपका एकादश (लाभ) भाव वायु राशि में है: संपर्क, विचार और आपके परिचित लोग यह तय करने में बड़ी भूमिका निभाते हैं कि अवसर आप तक कैसे पहुँचते हैं। धन का पारंपरिक कारक गुरु कुछ दबाव में है, इसलिए अति-आशावाद और बहुत अच्छी लगने वाली सलाह से सावधान रहें; धीमे, अच्छी तरह समझे गए निवेश आपके लिए सबसे उपयुक्त हैं।

## ❖ आपकी कार्य-शैली

यह आपके दशम (कर्म) भाव से आता है, जो वृषभ राशि का है। काम में आप व्यवस्थित, भरोसेमंद और धैर्यवान हैं। आपने देखा होगा कि दूसरों का शुरू किया काम अक्सर आप ही पूरा करते हैं, और लगातार बदलाव के बजाय स्पष्ट अपेक्षाएँ और उचित प्रतिफल पसंद करते हैं। आपके दशम भाव का स्वामी शुक्र आपके द्वितीय भाव (संचित धन और परिवार) में है, इसलिए आपका काम प्रायः संचित धन और परिवार से जुड़ता है या आपको उनकी ओर ले जाता है। आपका सबसे बलवान ग्रह सूर्य काम में एक भरोसेमंद प्रतिभा जोड़ता है: आत्मविश्वास, नेतृत्व और उद्देश्य की भावना। कर्म और ज़िम्मेदारी का ग्रह शनि आपकी कुंडली में अच्छी स्थिति में है, इसलिए लंबा, धैर्यपूर्ण प्रयास आपको फल देता है और भरोसेमंदी आपकी पहचान बनती है।

## ❖ आप अपने सर्वश्रेष्ठ रूप में, और किसी कठिन दिन

सब मिलाकर तस्वीर ऐसे व्यक्ति की है जो अपने सर्वश्रेष्ठ रूप में स्पष्ट प्रतिफल वाला स्थिर, सावधान काम पसंद करते हैं, वफ़ादारी और व्यावहारिक देखभाल से प्रेम करते हैं और सावधानी से बचाते और गुणवत्ता को महत्व देते हैं। किसी कठिन दिन आप तनाव में तुरंत कुछ करना चाहते हैं। इनमें से कोई भी "असली" आप नहीं है; दोनों एक ही स्वभाव हैं, बस अलग दबाव में। लक्ष्य कोई और व्यक्ति बनना नहीं, बल्कि यह पहचानना है कि आप किस ओर झुक रहे हैं और उस अवस्था को जो चाहिए वह देना: बोझ ज़्यादा हो तो आराम और थोड़ी जगह, अटके हों तो एक छोटा ठोस क़दम, और कुछ अकेले ढो रहे हों तो किसी से ईमानदार बातचीत।

आज़माकर देखें

एक सप्ताह यह आज़माएँ: स्नेह सरल और नियमित तरीक़ों से दिखाएँ, और ख़ुद को भी उतना ही महत्व दें जितना दूसरों को। देखें कि आपके मन और संबंधों में क्या बदलता है।

यह आपके सिंह लग्न, धनु राशि के चंद्र (मूल नक्षत्र), सिंह के सूर्य और आपके सबसे बलवान ग्रहों सूर्य और बुध से पढ़ा गया है।



# सरल शब्दों में आपकी कुंडली

Ananya जी, यह अध्याय विस्तृत तालिकाओं से पहले आपकी कुंडली को रोज़ की भाषा में समझाता है। हर बिंदु के साथ वह स्थिति बताई गई है जिससे वह निकला है, ताकि आप उसे बाद में चार्ट और तालिकाओं में देख सकें।

32 वर्ष की आयु में आपकी कुंडली सबसे अधिक काम, धन, संबंध, परिवार और स्वास्थ्य की आदतों के बारे में बताती है। नीचे के उदाहरण जीवन के इसी चरण के अनुसार चुने गए हैं।

## ❖ आप दुनिया से कैसे मिलते हैं: सिंह लग्न

आपका लग्न सिंह है। आप गर्मजोशी और आत्मविश्वास से जीवन से जुड़ते हैं, नेतृत्व करना और सराहना पाना आपको अच्छा लगता है।

आपके प्रथम भाव का स्वामी सूर्य उसी भाव में है, इसलिए जीवन का यह क्षेत्र काफ़ी हद तक स्वयं को सँभालता है: इसमें आप जो सीधे लगाते हैं, वही लौटता है। इस भाव पर शनि और केतु की दृष्टि है, जो माँग करने वाला प्रभाव है: यह क्षेत्र अनुशासन माँगता है और सहनशक्ति बनाता है। इसका अष्टकवर्ग अंक 29 है (लगभग 28 औसत है), जो लगभग औसत है। एक ओर भाव का स्वामी अच्छी स्थिति में है; दूसरी ओर पाप ग्रह उस पर दबाव डालते हैं। दोनों को तौलें तो सहारा वास्तविक है पर अपने-आप नहीं: नियमित प्रयास ही उसे परिणाम में बदलता है। अगली बार यह क्षेत्र प्रमुखता से सामने आएगा आपकी चंद्र महादशा में सूर्य की अंतर्दशा में, अप्रैल 2033 से अक्टूबर 2033 तक; यहाँ की योजना के लिए यह अच्छा समय है।

आपके लिए इसका अर्थ

समूह में आप स्वाभाविक रूप से कमान सँभाल लेते हैं और अपनों के प्रति उदार रहते हैं। मेहनत पर ध्यान न जाए तो आपको चोट पहुँच सकती है।

आप क्या कर सकते हैं

ऐसी भूमिकाएँ चुनें जहाँ नेतृत्व अपेक्षित हो, और प्रशंसा की प्रतीक्षा करने की बजाय सीधे प्रतिक्रिया माँगें। श्रेय बाँटने से लोग आपके साथ और ख़ुशी से चलते हैं।

## ❖ आपका भावनात्मक स्वभाव: धनु राशि में चंद्र, मूल नक्षत्र

आपका चंद्र धनु में है, इसलिए आपको स्वतंत्रता, अर्थ और आगे की कोई उम्मीद चाहिए।

आपका जन्म नक्षत्र (उन 27 तारा-समूहों में से एक जिनसे चंद्र गुज़रता है) मूल है। परंपरा इससे ये गुण जोड़ती है: जड़ तक पहुँचना, दार्शनिक गहराई और नए सिरे से शुरू करने का साहस।

आपका चंद्र आपके पंचम भाव (रचनात्मकता और विद्या) में है और सम राशि में है। आपका जन्म शुक्ल पक्ष (बढ़ते चंद्र) में हुआ, जिसे परंपरा बाहर की ओर बढ़ती ऊर्जा से जोड़ती है: आप काम करके और लोगों के साथ बाँटकर फिर से ऊर्जा पाते हैं। मंगल और केतु की दृष्टि आपके चंद्र पर है, जिससे भावनाएँ कभी-कभी अधिक तीव्र हो सकती हैं; नियमित नींद और दिनचर्या बहुत मदद करती है।

आपके लिए इसका अर्थ

यात्रा, नई सीख और खरी बातचीत आपका मन उठाती है; बँधा हुआ महसूस होने पर आप बेचैन हो जाते हैं।

आप क्या कर सकते हैं

किसी ऐसी चीज़ की योजना हमेशा रखें जिसकी आप प्रतीक्षा करें, चाहे छोटी यात्रा हो या कोई पाठ्यक्रम।

## ❖ आपकी स्वाभाविक शक्ति: सूर्य

आपकी कुंडली में: षड्बल (छह प्रकार के बल की गणना) के अनुसार आपके सात ग्रहों में सूर्य सबसे बलवान है; यह आपके प्रथम भाव (आप स्वयं) में स्थित है, स्वराशि में (बलवान)।

सूर्य आपके प्रथम भाव का स्वामी है, इसलिए इसका प्रभाव आप स्वयं पर भी पड़ता है। अपनी स्थिति से यह आपके सप्तम भाव पर दृष्टि डालता है, जिससे इसका प्रभाव साझेदार तक भी पहुँचता है।

आपके लिए इसका अर्थ

सूर्य आपको आत्मविश्वास, नेतृत्व और उद्देश्य की भावना देता है। यह आपके प्रथम भाव में है, इसलिए यह शक्ति सबसे अधिक इन विषयों में दिखती है: आपका शरीर, ऊर्जा, स्वभाव और लोगों पर पड़ने वाली पहली छाप।

आप क्या कर सकते हैं

ऐसी भूमिकाएँ लें जहाँ परिणाम की जवाबदेही आपकी हो: टीम का नेतृत्व, किसी परियोजना का प्रबंधन या दूसरों का प्रतिनिधित्व।

## ❖ अभ्यास से निखरने वाला क्षेत्र: शुक्र

आपकी कुंडली में: शुक्र आपका सबसे कम सहारा पाने वाला ग्रह है, अपनी नीच राशि (सबसे निर्बल राशि) में, जो आपके द्वितीय भाव (संचित धन और परिवार) में स्थित है।

आपकी कुंडली में इस निर्बलता का पारंपरिक परिहार (नीचभंग) भी है, जिसे परंपरा प्रयास से निर्बलता के शक्ति में बदलने के रूप में पढ़ती है।

शुक्र आपके तृतीय भाव और दशम भाव का स्वामी है, इसलिए इसका प्रभाव पराक्रम और साहस तथा करियर और प्रतिष्ठा पर भी पड़ता है। अपनी स्थिति से यह आपके अष्टम भाव पर दृष्टि डालता है, जिससे इसका प्रभाव परिवर्तन और साझा संसाधन तक भी पहुँचता है। अगली बार यह क्षेत्र प्रमुखता से सामने आएगा आपकी चंद्र महादशा में शुक्र की अंतर्दशा में, अगस्त 2031 से अप्रैल 2033 तक; यहाँ की योजना के लिए यह अच्छा समय है।

आपके लिए इसका अर्थ

यह संबंध, आराम और आत्म-सम्मान को ऐसे क्षेत्र के रूप में दिखाता है जो सचेत प्रयास से सुधरता है। यह आम बात है और कोई अशुभ संकेत नहीं; यह बस बताता है कि छोटी आदतें कहाँ सबसे बड़ा अंतर लाती हैं।

आप क्या कर सकते हैं

स्नेह सरल और नियमित तरीक़ों से दिखाएँ, और ख़ुद को भी उतना ही महत्व दें जितना दूसरों को।

## ❖ काम और करियर

आपकी कुंडली में: आपका दशम (करियर) भाव वृषभ राशि का है; इसका स्वामी शुक्र आपके द्वितीय भाव में है।

आपके दशम भाव का स्वामी शुक्र आपके द्वितीय भाव (संचित धन और परिवार) में है, जहाँ यह नीच का है, अपनी सबसे कमज़ोर राशि में, इसलिए यहाँ परिणाम भाग्य से कम और धैर्य व बार-बार के प्रयास से अधिक आते हैं। इस भाव पर किसी ग्रह की दृष्टि नहीं है, इसलिए कहानी का अधिकांश हिस्सा इसका स्वामी ही कहता है। इसका अष्टकवर्ग अंक 35 है (लगभग 28 औसत है), जो औसत से ऊपर है और वास्तविक सहारा देता है। एक ओर अष्टकवर्ग में भाव के अंक अच्छे हैं; दूसरी ओर भाव का स्वामी दबाव में है। इसलिए यहाँ मिली-जुली तस्वीर की अपेक्षा रखें: कुछ बातें आसानी से बनती हैं, कुछ धैर्य और दूसरे प्रयास से।

**आपके लिए इसका अर्थ**

सरल शब्दों में, आपके करियर के विषय कमाई, बचत और परिवार से जुड़े रहते हैं, और यहाँ आपकी वाणी और मूल्य मायने रखते हैं। धन, भोजन, पारिवारिक व्यवसाय, वाणी या मूल्यों से जुड़ा काम आपके अनुकूल है: वित्त, बैंकिंग, लेखा, अध्यापन, खाद्य या पारिवारिक उद्यम। इनसे जुड़े ग्रह, शुक्र, विशेष रूप से इन क्षेत्रों की ओर संकेत करते हैं: कला, डिज़ाइन, फ़ैशन, सौंदर्य, आतिथ्य, मनोरंजन या विलासिता की वस्तुएँ।

**आप क्या कर सकते हैं**

करियर के कदम शुक्र की दशाओं में उठाएँ (समय वाला अध्याय देखें), और ऊपर बताए कौशल लगातार बढ़ाते रहें।

## ❖ संबंध और साझेदारी

आपकी कुंडली में: आपका सप्तम (साझेदारी) भाव कुंभ राशि का है; इसका स्वामी शनि आपके सप्तम भाव में है। प्रेम का नैसर्गिक ग्रह शुक्र कन्या राशि (नीच) में है।

आपके सप्तम भाव का स्वामी शनि उसी भाव में है, इसलिए जीवन का यह क्षेत्र काफ़ी हद तक स्वयं को सँभालता है: इसमें आप जो सीधे लगाते हैं, वही लौटता है। यह वक्री है, जिसे परंपरा दोहराने और सुधारने का संकेत मानती है: यहाँ दूसरा प्रयास अक्सर पहले से बेहतर जाता है। इस भाव पर बुध और गुरु की दृष्टि है, जो सहारा और सुरक्षा देती है, और सूर्य और राहु की भी, जो दबाव के साथ प्रेरणा भी लाती है। इसका अष्टकवर्ग अंक 25 है (लगभग 28 औसत है), जो लगभग औसत है। अगली बार यह क्षेत्र प्रमुखता से सामने आएगा आपकी चंद्र महादशा में शनि की अंतर्दशा में, जनवरी 2028 से अगस्त 2029 तक; यहाँ की योजना के लिए यह अच्छा समय है।

**आपके लिए इसका अर्थ**

आपकी कुंडली में साझेदारी एक प्रबल विषय है, और आप अपने निकट संबंधों में सच्चा प्रयास करते हैं। शुक्र चुनौतीपूर्ण स्थिति में है, जिसका अर्थ बहुत ऊँचे मानक या प्रेम को शब्दों की बजाय कर्म से दिखाने की प्रवृत्ति हो सकता है; धैर्य और सराहना मदद करते हैं।

**आप क्या कर सकते हैं**

अपेक्षाओं पर जल्दी खुलकर बात करें, साथी की छोटी-छोटी बातों में सराहना करें, और बड़े निर्णयों के लिए दूसरों के दबाव की बजाय समय वाले अध्याय का उपयोग करें।

## ❖ धन और बचत

आपकी कुंडली में: आपके द्वितीय (बचत) और एकादश (आय) दोनों भावों का स्वामी बुध है, जो आपके प्रथम भाव में है। एकादश भाव में 36 बल-अंक (बिंदु) हैं और द्वादश (व्यय) भाव में 26।

आपके द्वितीय भाव का स्वामी बुध आपके प्रथम भाव (आप स्वयं) में है, मित्र राशि में, इसलिए नियमित प्रयास से यहाँ काम सहजता से चलते हैं। यह सूर्य के बहुत पास (अस्त) है, इसलिए यहाँ आपके प्रयास पहले अनदेखे रह सकते हैं; जो करें उसका रिकॉर्ड रखें। इस भाव पर मंगल की दृष्टि है, जो माँग करने वाला प्रभाव है: यह क्षेत्र अनुशासन माँगता है और सहनशक्ति बनाता है। इसका अष्टकवर्ग अंक 24 है (लगभग 28 औसत है), इसलिए यहाँ बाहरी सहारा कुछ कम है और नियमित निजी प्रयास अधिक मायने रखता है। एक ओर भाव का स्वामी अच्छी स्थिति में है; दूसरी ओर अष्टकवर्ग अंक कम है। अगली बार यह क्षेत्र प्रमुखता से सामने आएगा आपकी चंद्र महादशा में बुध की अंतर्दशा में, अगस्त 2029 से जनवरी 2031 तक; यहाँ की योजना के लिए यह अच्छा समय है।

**आपके लिए इसका अर्थ**

आपके अपने प्रयास और व्यक्तित्व कमाई का मुख्य स्रोत हैं; अपने कौशल में निवेश लौटकर फल देता है। लाभ भाव को व्यय भाव से अधिक सहारा है, इसलिए एक बार आदत बन जाए तो बचत प्रायः सहज रहती है।

**आप क्या कर सकते हैं**

सरल बजट रखें, हर आय का एक तय हिस्सा ख़र्च से पहले बचाएँ, और निवेश का कोई भी निर्णय कुंडली से नहीं, योग्य सलाहकार से लें।

## ❖ आपके अनुकूल स्वास्थ्य-आदतें

आपकी कुंडली में: आपका लग्न सिंह अग्नि तत्व की राशि है; लग्नेश सूर्य स्वराशि में (बलवान) है, और आपके षष्ठ (दिनचर्या) भाव में 29 बल-अंक हैं।

आपके षष्ठ भाव का स्वामी शनि आपके सप्तम भाव (साझेदार) में है, अपनी ही राशि में, सहज और भरोसेमंद, इसलिए आप सामान्यतः इस क्षेत्र पर भरोसा कर सकते हैं। परंपरा में जीवन-शक्ति से जुड़ा सूर्य आपकी कुंडली में स्वराशि में (बलवान) है, और भावनात्मक स्वास्थ्य व नींद से जुड़ा चंद्र सम राशि में है।

**आपके लिए इसका अर्थ**

अग्नि तत्व की राशियाँ प्रायः ऊँची ऊर्जा पर चलती हैं और थक कर चूर हो सकती हैं। नियमित व्यायाम, पर्याप्त पानी और व्यस्तता में भी भोजन न छोड़ना प्रायः आपके अनुकूल रहता है।

**आप क्या कर सकते हैं**

इसे केवल जीवनशैली का मार्गदर्शन मानें। स्वास्थ्य की किसी भी समस्या के लिए कृपया योग्य डॉक्टर से मिलें।



# अभी आप कहाँ हैं: आपकी वर्तमान दशा

आपका जीवन ग्रहों की अवधियों से गुज़रता है जिन्हें दशा कहते हैं (विंशोत्तरी पद्धति)। मुख्य अवधि (महादशा) कई वर्ष चलती है; उसके भीतर छोटी उप-अवधियाँ (अंतर्दशा) कुछ महीनों से कुछ वर्षों में स्वर बदलती हैं। यहाँ बताया गया है कि अभी क्या चल रहा है और आगे क्या आएगा।

## ❖ मुख्य दशा: चंद्र, 14 अक्टूबर 2023 से 13 अक्टूबर 2033 तक

आप चंद्र की दशा में हैं, जो भावनाओं, घर, माता, जन-व्यवहार और स्थान-परिवर्तन के विषय लाती है। चंद्र आपके पंचम भाव (रचनात्मकता और विद्या) में है और आपके द्वादश भाव (व्यय, विश्राम और दूर देश) का स्वामी है, इसलिए पूरी अवधि में ये क्षेत्र सामने रहते हैं। जीवन के इस चरण में यह ऐसा दिख सकता है: घर और परिवार के निर्णय, जनता से जुड़ा काम, और तनाव के प्रति अधिक संवेदनशीलता।

## ❖ वर्तमान अंतर्दशा: गुरु, 13 सितंबर 2026 से 13 जनवरी 2028 तक

मुख्य दशा के भीतर गुरु की अंतर्दशा विकास, मार्गदर्शन और विद्या की एक परत जोड़ती है। गुरु आपके तृतीय भाव (पराक्रम और साहस) में है, शत्रु राशि में; इसलिए अभी ध्यान इन बातों पर रहता है: पहल, अभ्यास से निखरने वाले कौशल, लेखन और बातचीत, छोटी यात्राएँ और छोटे भाई-बहन।

**आप क्या कर सकते हैं**

आराम की रक्षा करें, घर का माहौल शांत रखें और बड़े निर्णयों से पहले अपने अंतर्मन की सुनें। इस अंतर्दशा में विशेष रूप से: सीखें, सिखाएँ और अच्छी सलाह लें; आशावाद में अधिक वादे या अधिक ख़र्च से बचें।

## ❖ आगे क्या आएगा

शनि की अंतर्दशा, जनवरी 2028 से अगस्त 2029 तक: ध्यान आपके सप्तम भाव (साझेदार) पर जाता है। नियमित मेहनत करें, दायित्व सरल करें और देरी में धैर्य रखें।

बुध की अंतर्दशा, अगस्त 2029 से जनवरी 2031 तक: ध्यान आपके प्रथम भाव (आप स्वयं) पर जाता है। पढ़ें, लिखें और बातचीत से काम निकालें; हस्ताक्षर से पहले हर दस्तावेज़ ध्यान से पढ़ें।

# सरल शब्दों में इस रिपोर्ट का विषय: गुरु का प्रभाव

यह अध्याय इस रिपोर्ट के लिए सबसे महत्वपूर्ण भावों को एक-एक करके सरल शब्दों में पढ़ता है। विस्तृत अंक-तालिका और तालिकाएँ आगे दी गई हैं।

## ❖ आपका नवम भाव: भाग्य, गुरु और आस्था

आपकी कुंडली में: भाव में मेष राशि; स्वामी मंगल आपके एकादश भाव में; यहाँ स्थित ग्रह: केतु।

रोज़मर्रा में यह भाव दिखता है उन गुरुओं और मार्गदर्शकों में जिन पर आप भरोसा करते हैं, लंबी यात्राओं में, आपकी आस्था में, और पिता या पिता-तुल्य व्यक्ति से संबंध में। आपके नवम भाव का स्वामी मंगल आपके एकादश भाव (आय और मित्र) में है, शत्रु राशि में, इसलिए यह क्षेत्र काम करता है, पर कुछ घर्षण के साथ और धैर्य माँगते हुए। इस भाव पर गुरु की दृष्टि है, जो सहारा और सुरक्षा देती है, और शनि और राहु की भी, जो दबाव के साथ प्रेरणा भी लाती है। इसका अष्टकवर्ग अंक 28 है (लगभग 28 औसत है), जो लगभग औसत है। अगली बार यह क्षेत्र प्रमुखता से सामने आएगा आपकी मंगल महादशा में मंगल की अंतर्दशा में, अक्टूबर 2033 से मार्च 2034 तक; यहाँ की योजना के लिए यह अच्छा समय है। परंपरा इस क्षेत्र के नैसर्गिक कारक गुरु को भी देखती है: यह आपके तृतीय भाव (पराक्रम और साहस) में है, शत्रु राशि में, इसलिए यह क्षेत्र काम करता है, पर कुछ घर्षण के साथ और धैर्य माँगते हुए। यह क्षेत्र अभी विशेष रूप से सक्रिय है: गुरु की अंतर्दशा जनवरी 2028 तक चल रही है, इसलिए इस वर्ष यहाँ लिए निर्णयों का वज़न अधिक है।

**आपके लिए इसका अर्थ**

यह भाव इन विषयों का है: पिता और मार्गदर्शक, उच्च शिक्षा, लंबी यात्राएँ, आस्था और सौभाग्य। इसका स्वामी आपके एकादश भाव में है, इसलिए ये विषय आय, मित्रों और संपर्कों से जुड़ते हैं, और प्रायः धीरे-धीरे बढ़ते हैं। यहाँ केतु वैराग्य, अंतर्दृष्टि और अचानक मोड़ लाता है। 28 बल-अंकों (लगभग 28 के औसत) के साथ यहाँ फल संतुलित रहते हैं और प्रयास के अनुसार आते हैं।

**आप क्या कर सकते हैं**

इस क्षेत्र में कदम उठाने का अच्छा समय मंगल की और यहाँ स्थित ग्रहों की दशाएँ हैं; समय वाला अध्याय इन्हें बताता है।

## ❖ आपका पंचम भाव: रचनात्मकता और विद्या

आपकी कुंडली में: भाव में धनु राशि; स्वामी गुरु आपके तृतीय भाव में; यहाँ स्थित ग्रह: चंद्र।

रोज़मर्रा में यह भाव दिखता है आनंद के लिए रचे गए काम में, पढ़ाई के ढंग में, संतान से जुड़ी भावनाओं में, और उन शौक़ों में जिनमें समय का पता नहीं चलता। आपके पंचम भाव का स्वामी गुरु आपके तृतीय भाव (पराक्रम और साहस) में है, शत्रु राशि में, इसलिए यह क्षेत्र काम करता है, पर कुछ घर्षण के साथ और धैर्य माँगते हुए। इस भाव पर मंगल और केतु की दृष्टि है, जो माँग करने वाला प्रभाव है: यह क्षेत्र अनुशासन माँगता है और सहनशक्ति बनाता है। इसका अष्टकवर्ग अंक 26 है (लगभग 28 औसत है), जो लगभग औसत है।

**आपके लिए इसका अर्थ**

यह भाव इन विषयों का है: बुद्धि, पढ़ाई, रचनात्मक काम, प्रेम और संतान। इसका स्वामी आपके तृतीय भाव में है, इसलिए ये विषय आपके अपने प्रयास, कौशल, संवाद और पहल से बढ़ते हैं। यहाँ चंद्र भावना, देखभाल और परिवर्तनशीलता लाता है। 26 बल-अंकों (लगभग 28 के औसत) के साथ यहाँ फल संतुलित रहते हैं और प्रयास के अनुसार आते हैं।

**आप क्या कर सकते हैं**

इस क्षेत्र में कदम उठाने का अच्छा समय गुरु की और यहाँ स्थित ग्रहों की दशाएँ हैं; समय वाला अध्याय इन्हें बताता है।

## ❖ आपका एकादश भाव: आय और मित्र

आपकी कुंडली में: भाव में मिथुन राशि; स्वामी बुध आपके प्रथम भाव में; यहाँ स्थित ग्रह: मंगल।

रोज़मर्रा में यह भाव दिखता है आपकी आय और लाभ में, दरवाज़े खोलने वाले मित्रों और संपर्कों में, और उन दीर्घकालीन इच्छाओं में जिन पर आप बार-बार लौटते हैं। आपके एकादश भाव का स्वामी बुध आपके प्रथम भाव (आप स्वयं) में है, मित्र राशि में, इसलिए नियमित प्रयास से यहाँ काम सहजता से चलते हैं। इस भाव पर चंद्र और गुरु की दृष्टि है, जो सहारा और सुरक्षा देती है, और राहु की भी, जो दबाव के साथ प्रेरणा भी लाती है। इसका अष्टकवर्ग अंक 36 है (लगभग 28 औसत है), जो औसत से ऊपर है और वास्तविक सहारा देता है।

**आपके लिए इसका अर्थ**

यह भाव इन विषयों का है: लाभ, आय में वृद्धि, मित्र, संपर्क, बड़े भाई-बहन और इच्छाओं की पूर्ति। इसका स्वामी आपके प्रथम भाव में है, इसलिए ये विषय आप स्वयं सँभालते हैं, और ये आपकी पहचान तथा लोगों की नज़र में आपकी छवि को आकार देते हैं। यहाँ मंगल ऊर्जा, जोश और कभी-कभी टकराव लाता है। 36 बल-अंकों (28 के औसत से अधिक) के साथ यह क्षेत्र प्रयास का अच्छा उत्तर देता है।

**आप क्या कर सकते हैं**

इस क्षेत्र में कदम उठाने का अच्छा समय बुध की और यहाँ स्थित ग्रहों की दशाएँ हैं; समय वाला अध्याय इन्हें बताता है।

## ❖ आपका द्वितीय भाव: संचित धन और परिवार

आपकी कुंडली में: भाव में कन्या राशि; स्वामी बुध आपके प्रथम भाव में; यहाँ स्थित ग्रह: शुक्र।

रोज़मर्रा में यह भाव दिखता है हर महीने की बचत में, परिवार के साथ बातचीत के ढंग में, और उन खान-पान की आदतों व मूल्यों में जिनके साथ आप बड़े हुए। बुध आपके द्वितीय भाव और एकादश भाव का स्वामी है, इसलिए इसका प्रभाव संचित धन और परिवार तथा आय और मित्र पर भी पड़ता है।

**आपके लिए इसका अर्थ**

यह भाव इन विषयों का है: बचत, परिवार के संबंध, आपकी वाणी और खान-पान की आदतें। यहाँ शुक्र सुख, आकर्षण और सामंजस्य लाता है। 24 बल-अंकों (28 के औसत से कम) के साथ इस क्षेत्र में अधिक धैर्य और योजना चाहिए।

# जन्म विवरण और पंचांग

यह आपके लिए क्यों मायने रखता है: ये तालिकाएँ इस रिपोर्ट के हर कथन का आधार हैं; जब आपके व्यक्तित्व के बारे में कोई बात सच लगे, तो वह यहीं से आती है।

| सूर्योदय | सूर्यास्त |
|---|---|
| 06:00 | 19:01 |

| अयनांश (लाहिरी) | अक्षांश / देशांतर | समय-क्षेत्र |
|---|---|---|
| 23°47′ | 26.912, 75.787 | Asia/Kolkata |

| ऋतु | अयन |
|---|---|
| वर्षा | दक्षिणायन |

## ❖ आपके जन्म-क्षण के पाँच अंग

पंचांग ("पाँच अंग") उस क्षण की गुणवत्ता दर्ज करता है: तिथि (चांद्र दिवस), वार, नक्षत्र (चंद्र का तारा), योग (सूर्य-चंद्र का संयोजन) और करण (आधी तिथि)। पारंपरिक परिवार इन्हें हर जन्म पत्रिका के शीर्ष पर लिखते हैं।

## ❖ तिथि: एकादशी (11)

चंद्र सूर्य से 127.1° आगे था, शुक्ल पक्ष की 30 में से 11वीं तिथि में, और तिथि का लगभग 40% भाग शेष था। परंपरा इस तिथि को इन गुणों से जोड़ती है: भक्ति, उपवास और आध्यात्मिक पुण्य।

## ❖ वार: बुधवार

आपका जन्म बुधवार को हुआ, जिसका स्वामी बुध है। बुधवार का जन्म बुद्धि, विनोद और व्यापारिक कौशल से जोड़ा जाता है।

## ❖ नित्य योग: विष्कुंभ

सूर्य और चंद्र के भोगांशों का योग 27 में से 1वाँ योग देता है, जिसे परंपरा में सहारा और बाधाओं को पार करने की क्षमता से जोड़ा जाता है।

## ❖ करण: विष्टि (भद्रा)

हर तिथि में दो करण होते हैं। आपके करण का पारंपरिक स्वभाव है: तीव्र; परंपरा आरंभ में सावधानी की सलाह देती है।

## ❖ चांद्र मास: श्रावण

अमांत पंचांग के अनुसार आपका जन्म श्रावण मास में, विक्रम संवत 2051 (शक 1916) में, वर्षा ऋतु और दक्षिणायन में हुआ।

## ❖ अवकहड़ा चक्र

ये जन्म-नक्षत्र के पारंपरिक गुण हैं, जिनका उपयोग नामकरण और विवाह-मिलान में होता है।

| विषय | मान |
|---|---|
| लग्न | सिंह |

| विषय | मान |
|---|---|
| वर्ण | क्षत्रिय |
| वश्य | मानव |
| योनि | श्वान |
| गण | राक्षस |
| नाड़ी | आदि |
| नक्षत्र स्वामी | केतु |
| राशि स्वामी | गुरु |
| नामाक्षर | भा |
| पाया | रजत पाया |

जन्म कुंडलियाँ और ग्रह-स्थितियाँ

# जन्म कुंडलियाँ और ग्रह-स्थितियाँ

यह आपके लिए क्यों मायने रखता है: यह पठन के पीछे की गणना है; इसे पढ़ना ज़रूरी नहीं, पर यह दिखाती है कि हर निजी कथन आपकी अपनी कुंडली से आता है।

उत्तरी और दक्षिणी शैली की बड़ी लग्न कुंडलियाँ, और चन्द्र कुंडली, इस रिपोर्ट के आरंभिक पृष्ठों पर हैं। नीचे की तालिका प्रत्येक ग्रह का राशि, अंश, नक्षत्र, पाद, गरिमा और नवमांश देती है, ताकि आप चक्रों से मिला सकें।

ग्रहों के पारंपरिक संक्षिप्त नाम (सू, चं, मं, बु, गु, शु, श, रा, के) के साथ राशि में अंश दिए गए हैं। उत्तर भारतीय कुंडली में संख्याएँ राशियाँ हैं (1 = मेष)।

| ग्रह | राशि | अंश | नक्षत्र / पद | नक्षत्र स्वामी | भाव | बल | अवस्था | नवांश राशि |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| लग्न | सिंह | 21°58′ | पूर्वा फाल्गुनी 3 | शुक्र | 1 | – | – | – |
| सूर्य | सिंह | 0°11′ | मघा 1 | केतु | 1 | स्वराशि | बाल | मेष |
| चंद्र | धनु | 7°19′ | मूल 3 | केतु | 5 | सम राशि | कुमार | मिथुन |
| मंगल | मिथुन | 6°24′ | मृगशिरा 4 | मंगल | 11 | शत्रु राशि | कुमार | वृश्चिक |
| बुध (अ) | सिंह | 4°23′ | मघा 2 | केतु | 1 | मित्र राशि | बाल | वृषभ |
| गुरु | तुला | 13°58′ | स्वाति 3 | राहु | 3 | शत्रु राशि | युवा | कुंभ |
| शुक्र | कन्या | 16°00′ | हस्त 2 | चंद्र | 2 | नीच | युवा | वृषभ |
| शनि (व) | कुंभ | 16°23′ | शतभिषा 3 | राहु | 7 | स्वराशि | युवा | कुंभ |
| राहु | तुला | 25°14′ | विशाखा 2 | गुरु | 3 | छाया ग्रह | – | वृषभ |
| केतु | मेष | 25°14′ | भरणी 4 | शुक्र | 9 | छाया ग्रह | – | वृश्चिक |

(व) वक्री और (अ) अस्त ग्रह को दर्शाता है। अवस्था अंशों के अनुसार ग्रह की आयु-अवस्था है। नवांश स्तंभ में वह D9 राशि है जिसका उपयोग पूरी रिपोर्ट में हुआ है।

नक्षत्र और तारा चक्र

# नक्षत्र और तारा चक्र

> यह आपके लिए क्यों मायने रखता है: चंद्र आपके मूड, नींद और सुरक्षा के एहसास को आकार देता है; आप तनाव में तुरंत कुछ करना चाहते हैं, और यह अध्याय बताता है कि क्यों और क्या मदद करता है।

आपके जन्म-नक्षत्र मूल (पद 3) के देवता निर्ऋति (विलय की देवी) हैं। इसका प्रतीक जड़ों का गुच्छा है। पारंपरिक गुण: जड़ तक पहुँचना, दार्शनिक गहराई, नए सिरे से शुरू करने का साहस और शोध-क्षमता। इससे जुड़े कार्य-क्षेत्र: शोध, जाँच-पड़ताल, चिकित्सा-शोध, दर्शन, वनस्पति-विज्ञान, पुरातत्व और आध्यात्मिक शिक्षण।

तारा चक्र आपके जन्म-नक्षत्र मूल से 27 नक्षत्रों को नौ समूहों (ताराओं) में गिनता है। इसका उपयोग शुभ आरंभ के नक्षत्र चुनने और आपके ग्रहों के नक्षत्रों को पढ़ने में होता है।

| तारा | नक्षत्र | अर्थ | यहाँ आपके ग्रह |
|---|---|---|---|
| जन्म | मूल, अश्विनी, मघा | स्वयं जन्म-नक्षत्र: संवेदनशील, स्वास्थ्य और निर्णयों में सावधानी का समय | सूर्य, चंद्र, बुध |
| संपत् | पूर्वाषाढ़ा, भरणी, पूर्वा फाल्गुनी | धन और लाभ | केतु |
| विपत् | उत्तराषाढ़ा, कृत्तिका, उत्तरा फाल्गुनी | बाधाएँ; सावधानी से आगे बढ़ें | – |
| क्षेम | श्रवण, रोहिणी, हस्त | कुशलता और सुरक्षा | शुक्र |
| प्रत्यरि | धनिष्ठा, मृगशिरा, चित्रा | विरोध; टकराव से बचें | मंगल |
| साधक | शतभिषा, आर्द्रा, स्वाति | सिद्धि; प्रयास सफल होते हैं | गुरु, शनि |
| वध | पूर्वा भाद्रपद, पुनर्वसु, विशाखा | सबसे कठिन तारा; बड़े आरंभ टालें | राहु |
| मित्र | उत्तरा भाद्रपद, पुष्य, अनुराधा | मित्रता और सहायता | – |
| परम मित्र | रेवती, आश्लेषा, ज्येष्ठा | परम मित्र; अत्यंत सहायक | – |

सहायक ताराओं (संपत्, क्षेम, साधक, मित्र, परम मित्र) में ग्रह: गुरु, शुक्र, शनि और केतु; ये आपके लिए प्रायः सहजता से कार्य करते हैं।

कठिन ताराओं (विपत्, प्रत्यरि, वध) में ग्रह: मंगल और राहु; इनकी दशाओं में सावधानी फल देती है।



# गुरु का गोचर: अगले तीन वर्ष

> यह आपके लिए क्यों मायने रखता है: कौन सी अवधि क़दम उठाने की है और कौन सी धैर्य की, यह जानकर योजना बनाना आसान होता है; आप स्पष्ट प्रतिफल वाला स्थिर, सावधान काम पसंद करते हैं, इसलिए बड़े क़दमों का समय इससे तय करें।

पारंपरिक गोचर ग्रहों की स्थिति चंद्र राशि से गिनता है। चंद्र से द्वितीय, पंचम, सप्तम, नवम और एकादश भाव में गुरु शास्त्रीय रूप से सहायक माना जाता है।

| राशि | से | तक | लग्न से | चंद्र से |
|---|---|---|---|---|
| मिथुन | जनवरी 2026 | जून 2026 | एकादश | सप्तम |
| कर्क | जून 2026 | अक्टूबर 2026 | द्वादश | अष्टम |
| सिंह | अक्टूबर 2026 | जनवरी 2027 | प्रथम | नवम |
| कर्क | जनवरी 2027 | जून 2027 | द्वादश | अष्टम |

| राशि | से | तक | लग्न से | चंद्र से |
|---|---|---|---|---|
| सिंह | जून 2027 | नवंबर 2027 | प्रथम | नवम |
| कन्या | नवंबर 2027 | फ़रवरी 2028 | द्वितीय | दशम |
| सिंह | फ़रवरी 2028 | जुलाई 2028 | प्रथम | नवम |
| कन्या | जुलाई 2028 | दिसंबर 2028 | द्वितीय | दशम |
| तुला | दिसंबर 2028 | जनवरी 2029 | तृतीय | एकादश |

### ❖ चंद्र से सप्तम भाव में गुरु (मिथुन, जनवरी 2026 – जून 2026)

विवाह, व्यावसायिक साझेदार, अनुबंध और आमने-सामने के संबंध में विकास और मार्गदर्शन लाता है।

### ❖ चंद्र से अष्टम भाव में गुरु (कर्क, जून 2026 – अक्टूबर 2026)

साझा संसाधन, विरासत, शोध, अचानक परिवर्तन, आयु से जुड़े विषय और गूढ़ बातें में विकास और मार्गदर्शन लाता है।

### ❖ चंद्र से नवम भाव में गुरु (सिंह, अक्टूबर 2026 – जनवरी 2027)

भाग्य, उच्च शिक्षा, गुरु, पिता, लंबी यात्राएँ और आस्था में विकास और मार्गदर्शन लाता है।

### ❖ चंद्र से दशम भाव में गुरु (कन्या, नवंबर 2027 – फ़रवरी 2028)

व्यवसाय, सार्वजनिक प्रतिष्ठा, अधिकार और उपलब्धियाँ में विकास और मार्गदर्शन लाता है।

### ❖ चंद्र से एकादश भाव में गुरु (तुला, दिसंबर 2028 – जनवरी 2029)

आय, मित्र, बड़े भाई-बहन, समुदाय और इच्छाओं की पूर्ति में विकास और मार्गदर्शन लाता है।

आपकी जन्म कुंडली में गुरु

## आपकी जन्म कुंडली में गुरु

> यह आपके लिए क्यों मायने रखता है: यहाँ हर ग्रह आपके व्यक्तित्व का एक पहलू बताता है, सोचने से लेकर प्रेम करने तक; इसे धनु राशि के साहसिक चंद्र वाले उदार-हृदय सिंह लग्न के व्यक्ति के विस्तृत चित्र की तरह पढ़ें।

### ❖ गुरु: तृतीय भाव में · तुला

गुरु ज्ञान, गुरुजन, विकास, नैतिकता, संतान और सौभाग्य का प्रतिनिधित्व करता है। आपकी कुंडली में यह तुला में, तृतीय भाव (पराक्रम और भाई-बहन) में, स्वाति नक्षत्र (स्वामी राहु) में है। प्रयास और संवाद में आशावाद; सहयोगी भाई-बहन और अध्यापन, लेखन या परामर्श में सफलता।

यह शत्रु राशि में है, जिसे परंपरा इसके विषयों की अभिव्यक्ति में कुछ घर्षण के रूप में पढ़ती है। आपके पंचम और अष्टम भाव (रचनात्मकता और संतान, रूपांतरण) का स्वामी होने के कारण यह उन विषयों को तृतीय भाव से जोड़ता है। अपनी पारंपरिक दृष्टि के द्वारा यह आपके सप्तम, नवम और एकादश भाव को भी प्रभावित करता है।

आज सभी ग्रह

# आज सभी ग्रह

यह आपके लिए क्यों मायने रखता है: एक ग्रह आपके व्यक्तित्व का एक धागा है; इसे उस धागे के क़रीबी चित्र की तरह पढ़ें, जो आपकी रोज़ की आदतों और चुनावों में दिखता है।

| ग्रह | 11 अक्टूबर 2026 को आकाश में | लग्न से भाव | चंद्र से भाव |
|---|---|---|---|
| सूर्य | कन्या | द्वितीय | दशम |
| चंद्र | तुला | तृतीय | एकादश |
| मंगल | कर्क | द्वादश | अष्टम |
| बुध | तुला | तृतीय | एकादश |
| गुरु | कर्क | द्वादश | अष्टम |
| शुक्र | तुला | तृतीय | एकादश |
| शनि | मीन | अष्टम | चतुर्थ |
| राहु | कुंभ | सप्तम | तृतीय |
| केतु | सिंह | प्रथम | नवम |

☆ गुरु का आशीर्वाद: मुख्य भाव

# गुरु का आशीर्वाद: मुख्य भाव

यह आपके लिए क्यों मायने रखता है: यह आपकी कुंडली का कैलेंडर है; अगले एक-दो वर्ष की तारीख़ें चिह्नित करें और उनके हिसाब से योजना बनाएँ, जैसे परीक्षा या त्योहार के लिए बनाते हैं।

यह अंक-पत्र गुरु का आशीर्वाद के लिए सबसे महत्वपूर्ण भावों को देखता है। हर भाव को 10 में से अंक मिलते हैं, जिनमें उसके अष्टकवर्ग बिंदु, भावेश का बल और स्थिति, उस पर दृष्टियाँ और D9 में भावेश का बल शामिल है।

| भाव | राशि | स्वामी | स्वामी स्थित | सर्वा. | अंक | श्रेणी |
|---|---|---|---|---|---|---|
| नवम भाव | मेष | मंगल | एकादश | 28 | 4.5 / 10 | मध्यम |
| पंचम भाव | धनु | गुरु | तृतीय | 26 | 4.0 / 10 | तुलनात्मक रूप से निर्बल |
| एकादश भाव | मिथुन | बुध | प्रथम | 36 | 8.0 / 10 | बलवान |
| द्वितीय भाव | कन्या | बुध | प्रथम | 24 | 6.0 / 10 | मध्यम |

7 या अधिक अंक प्रबल, 4.5–7 मध्यम और 4.5 से कम तुलनात्मक रूप से निर्बल हैं। ये आपकी अपनी कुंडली के भावों की तुलना करते हैं, दूसरों से नहीं।

### ❖ नवम भाव (भाग्य और गुरु) · 4.5/10

स्वामी-शृंखला: नवम भाव का स्वामी मंगल आपके एकादश भाव में मिथुन राशि में है; उस राशि का स्वामी बुध आपके प्रथम भाव (मित्र राशि) में है, इसलिए अंततः फल उसी पर निर्भर हैं। भावात् भावम् सिद्धांत से, नवम भाव से उतनी ही दूर का भाव जितना वह लग्न से है,

आपका पंचम भाव (धनु) है, जिसमें चंद्र हैं; यह दिखाता है कि ये विषय कैसे परिपक्व होते हैं। D9 में मंगल द्वितीय भाव में वृश्चिक राशि (स्वराशि) में है। कुल मिलाकर नवम भाव मध्यम है (1 शुभ और 3 अन्य प्रभाव): स्थिर प्रयास से अच्छे फल।

### ❖ पंचम भाव (संतान और बुद्धि) · 4.0/10

स्वामी-शृंखला: पंचम भाव का स्वामी गुरु आपके तृतीय भाव में तुला राशि में है; उस राशि का स्वामी शुक्र आपके द्वितीय भाव (नीच) में है, इसलिए अंततः फल उसी पर निर्भर हैं। भावात् भावम् सिद्धांत से, पंचम भाव से उतनी ही दूर का भाव जितना वह लग्न से है, आपका नवम भाव (मेष) है, जिसमें केतु हैं; यह दिखाता है कि ये विषय कैसे परिपक्व होते हैं। D9 में गुरु पंचम भाव में कुंभ राशि (सम राशि) में है। कुल मिलाकर पंचम भाव तुलनात्मक रूप से निर्बल है (1 शुभ और 2 अन्य प्रभाव), इसलिए इन विषयों की योजना सावधानी से बनाएँ और सहायक अवधियों का उपयोग करें।

### ❖ एकादश भाव (लाभ और नेटवर्क) · 8.0/10

स्वामी-शृंखला: एकादश भाव का स्वामी बुध आपके प्रथम भाव में सिंह राशि में है; उस राशि का स्वामी सूर्य आपके प्रथम भाव (स्वराशि) में है, इसलिए अंततः फल उसी पर निर्भर हैं। भावात् भावम् सिद्धांत से, एकादश भाव से उतनी ही दूर का भाव जितना वह लग्न से है, आपका नवम भाव (मेष) है, जिसमें केतु हैं; यह दिखाता है कि ये विषय कैसे परिपक्व होते हैं। D9 में बुध अष्टम भाव में वृषभ राशि (मित्र राशि) में है। कुल मिलाकर एकादश भाव प्रबल है (2 शुभ और 2 अन्य प्रभाव), इसलिए आप इस पर विश्वास से निर्माण कर सकते हैं।

### ❖ द्वितीय भाव (धन और परिवार) · 6.0/10

स्वामी-शृंखला: द्वितीय भाव का स्वामी बुध आपके प्रथम भाव में सिंह राशि में है; उस राशि का स्वामी सूर्य आपके प्रथम भाव (स्वराशि) में है, इसलिए अंततः फल उसी पर निर्भर हैं। भावात् भावम् सिद्धांत से, द्वितीय भाव से उतनी ही दूर का भाव जितना वह लग्न से है, आपका तृतीय भाव (तुला) है, जिसमें गुरु और राहु हैं; यह दिखाता है कि ये विषय कैसे परिपक्व होते हैं। कुल मिलाकर द्वितीय भाव मध्यम है (1 शुभ और 1 अन्य प्रभाव): स्थिर प्रयास से अच्छे फल।



## गुरु का आशीर्वाद: कारक ग्रह

> यह आपके लिए क्यों मायने रखता है: अवधियाँ घटनाएँ नहीं बनातीं, पर बताती हैं कि कब कौन से विषय अधिक दबाव डालते हैं; आप स्पष्ट प्रतिफल वाला स्थिर, सावधान काम पसंद करते हैं, इसलिए देखें कि कौन सी तारीख़ें प्रयास की हैं और कौन सी तैयारी की।

कारक वे ग्रह हैं जो स्वभावतः गुरु का आशीर्वाद के सूचक हैं। वर्गों में उनकी स्थिति, उनका अष्टकवर्ग और अगले दो वर्षों में उनकी चाल भाव-विश्लेषण में दूसरी परत जोड़ते हैं।

### ❖ गुरु: आपके ज्ञान

वर्गों में गुरु: D1 तुला, D2 सिंह, D3 कुंभ, D4 मकर, D7 मकर, D9 कुंभ, D10 कुंभ, D12 मीन, D24 कर्क, D30 धनु, D60 मकर।

गुरु D12, D24, D30, D45 में उच्च या स्वराशि का है, और D4, D7, D20, D60 में नीच का; इसका विंशोपक अंक 9.9/20 है।

गुरु को मेष (7), मिथुन (7) और मकर (7) में सबसे अधिक सहयोग है, जो आपका नवम भाव, एकादश भाव और षष्ठ भाव है; इन राशियों से इसका गोचर प्रायः इसके सर्वोत्तम फल देता है।

अगले दो वर्षों में इसका गोचर-मार्ग: कर्क (अक्टूबर 2026, द्वादश भाव) → सिंह (अक्टूबर 2026, प्रथम भाव) → कर्क (जनवरी 2027, द्वादश भाव) → सिंह (जून 2027, प्रथम भाव) → कन्या (नवंबर 2027, द्वितीय भाव) → सिंह (फ़रवरी 2028, प्रथम भाव) → कन्या (जुलाई 2028, द्वितीय भाव)।



# गुरु विस्तार से: वर्ग और गोचर

> यह आपके लिए क्यों मायने रखता है: अगर कभी लगा हो कि किसी वर्ष का "एक विषय" था, तो कुंडली का यही हिस्सा उसका वर्णन करता है; पहले वर्तमान और अगली प्रविष्टियाँ पढ़ें।

इस रिपोर्ट में गुरु का आशीर्वाद के प्रमुख कारकों में से एक गुरु है। नीचे इसे सभी सोलह विभाजन कुंडलियों में और फिर अगले दो वर्षों के गोचर-मार्ग पर देखा गया है।

| वर्ग | नाम | राशि | भाव | बल |
|---|---|---|---|---|
| D1 | राशि | तुला | तृतीय | शत्रु राशि |
| D2 | होरा | सिंह | द्वितीय | मित्र राशि |
| D3 | द्रेष्काण | कुंभ | एकादश | सम राशि |
| D4 | चतुर्थांश | मकर | द्वादश | नीच |
| D7 | सप्तांश | मकर | प्रथम | नीच |
| D9 | नवांश | कुंभ | पंचम | सम राशि |
| D10 | दशमांश | कुंभ | द्वादश | सम राशि |
| D12 | द्वादशांश | मीन | द्वादश | स्वराशि |
| D16 | षोडशांश | वृश्चिक | पंचम | मित्र राशि |
| D20 | विंशांश | मकर | द्वादश | नीच |
| D24 | चतुर्विंशांश | कर्क | सप्तम | उच्च |
| D27 | भांश | तुला | द्वादश | शत्रु राशि |
| D30 | त्रिंशांश | धनु | सप्तम | स्वराशि |
| D40 | खवेदांश | तुला | द्वितीय | शत्रु राशि |
| D45 | अक्षवेदांश | धनु | नवम | स्वराशि |
| D60 | षष्ट्यंश | मकर | एकादश | नीच |

D2 (होरा, धन और संसाधन के लिए): गुरु सिंह राशि में, उस कुंडली के द्वितीय भाव (धन और परिवार) में है। मित्र राशि में होने से यह इस क्षेत्र में सहज है।

D3 (द्रेष्काण, भाई-बहन, साहस और पहल के लिए): गुरु कुंभ राशि में, उस कुंडली के एकादश भाव (लाभ और नेटवर्क) में है। सम राशि में होने से फल अन्य कारकों पर निर्भर हैं।

D4 (चतुर्थांश, संपत्ति, घर और अचल संपदा के लिए): गुरु मकर राशि में, उस कुंडली के द्वादश भाव (व्यय और मोक्ष) में है। यहाँ नीच का होने से इन विषयों में धैर्य और प्रयास चाहिए।

D7 (सप्तांश, संतान और सृजन के लिए): गुरु मकर राशि में, उस कुंडली के प्रथम भाव (स्वयं और स्वास्थ्य) में है।

D9 (नवांश, विवाह, धर्म और हर ग्रह का आंतरिक बल के लिए): गुरु कुंभ राशि में, उस कुंडली के पंचम भाव (संतान और बुद्धि) में है।

D10 (दशमांश, करियर और सार्वजनिक उपलब्धि के लिए): गुरु कुंभ राशि में, उस कुंडली के द्वादश भाव (व्यय और मोक्ष) में है।

D12 (द्वादशांश, माता-पिता और वंश के लिए): गुरु मीन राशि में, उस कुंडली के द्वादश भाव (व्यय और मोक्ष) में है। यहाँ स्वराशि में होने से यह इन विषयों को आत्मविश्वास से सँभालता है।

D16 (षोडशांश, वाहन, सुख-सुविधा और प्रसन्नता के लिए): गुरु वृश्चिक राशि में, उस कुंडली के पंचम भाव (संतान और बुद्धि) में है।

D20 (विंशांश, आध्यात्मिक साधना और भक्ति के लिए): गुरु मकर राशि में, उस कुंडली के द्वादश भाव (व्यय और मोक्ष) में है।

D24 (चतुर्विंशांश, शिक्षा और विद्या के लिए): गुरु कर्क राशि में, उस कुंडली के सप्तम भाव (विवाह और साझेदार) में है। यहाँ उच्च का होने से यह इन विषयों को प्रबल सहयोग देता है।

D27 (भांश, शक्तियाँ और दुर्बलताएँ के लिए): गुरु तुला राशि में, उस कुंडली के द्वादश भाव (व्यय और मोक्ष) में है। शत्रु राशि में होने से इस क्षेत्र में इसे कुछ घर्षण मिलता है।

D30 (त्रिंशांश, कठिनाइयाँ और उनका सामना के लिए): गुरु धनु राशि में, उस कुंडली के सप्तम भाव (विवाह और साझेदार) में है।

D40 (खवेदांश, मातृ-पक्ष से शुभ-अशुभ प्रभाव के लिए): गुरु तुला राशि में, उस कुंडली के द्वितीय भाव (धन और परिवार) में है।

D45 (अक्षवेदांश, पितृ-पक्ष से चरित्र और आचरण के लिए): गुरु धनु राशि में, उस कुंडली के नवम भाव (भाग्य और गुरु) में है।

D60 (षष्ट्यंश, पूर्व कर्म; सबसे सूक्ष्म विभाजन, जन्म-समय के प्रति अत्यंत संवेदनशील के लिए): गुरु मकर राशि में, उस कुंडली के एकादश भाव (लाभ और नेटवर्क) में है।

## ❖ 24 महीनों में गुरु का गोचर-मार्ग

| राशि | से | तक | चंद्र से | लग्न से | बिंदु |
|---|---|---|---|---|---|
| कर्क | 11 अक्टूबर 2026 | 31 अक्टूबर 2026 | अष्टम | द्वादश | 4 |
| सिंह | 31 अक्टूबर 2026 | 25 जनवरी 2027 | नवम | प्रथम | 5 |
| कर्क | 25 जनवरी 2027 | 26 जून 2027 | अष्टम | द्वादश | 4 |
| सिंह | 26 जून 2027 | 26 नवंबर 2027 | नवम | प्रथम | 5 |
| कन्या | 26 नवंबर 2027 | 28 फ़रवरी 2028 | दशम | द्वितीय | 4 |
| सिंह | 28 फ़रवरी 2028 | 24 जुलाई 2028 | नवम | प्रथम | 5 |
| कन्या | 24 जुलाई 2028 | 10 अक्टूबर 2028 | दशम | द्वितीय | 4 |

अक्टूबर 2026 से कर्क में: चंद्र से आठवें गुरु: बाधाएँ और धीमी प्रगति; धन और स्वास्थ्य में सावधानी (वहाँ इसके अपने बिंदु: 4)।

अक्टूबर 2026 से सिंह में: चंद्र से नौवें गुरु: भाग्य, आशीर्वाद, तीर्थ और उच्च शिक्षा (वहाँ इसके अपने बिंदु: 5)।

जनवरी 2027 से कर्क में: चंद्र से आठवें गुरु: बाधाएँ और धीमी प्रगति; धन और स्वास्थ्य में सावधानी (वहाँ इसके अपने बिंदु: 4)।

जून 2027 से सिंह में: चंद्र से नौवें गुरु: भाग्य, आशीर्वाद, तीर्थ और उच्च शिक्षा (वहाँ इसके अपने बिंदु: 5)।

नवंबर 2027 से कन्या में: चंद्र से दसवें गुरु: करियर और ज़िम्मेदारियों में बदलाव; प्रतिष्ठा स्वच्छ रखें (वहाँ इसके अपने बिंदु: 4)।

फ़रवरी 2028 से सिंह में: चंद्र से नौवें गुरु: भाग्य, आशीर्वाद, तीर्थ और उच्च शिक्षा (वहाँ इसके अपने बिंदु: 5)।

जुलाई 2028 से कन्या में: चंद्र से दसवें गुरु: करियर और ज़िम्मेदारियों में बदलाव; प्रतिष्ठा स्वच्छ रखें (वहाँ इसके अपने बिंदु: 4)।

# गुरु का आशीर्वाद: समय-खिड़कियाँ

यह आपके लिए क्यों मायने रखता है: आप तनाव में तुरंत कुछ करना चाहते हैं, इसलिए पहले से जानना मदद करता है कि कौन से महीने भारी लग सकते हैं, ताकि आप तब अपने आराम और दिनचर्या की रक्षा कर सकें।

अगले 10 वर्षों में गुरु का आशीर्वाद के लिए समय-खिड़कियाँ, इस आधार पर क्रमबद्ध कि महादशा और अंतर्दशा स्वामी मुख्य भावों और कारकों से कितनी दृढ़ता से जुड़े हैं। अधिक अंक उन अवधियों को दर्शाते हैं जब ये विषय सबसे अधिक गतिशील होने की संभावना रखते हैं।

| अवधि | से | तक | अंक | कारण |
|---|---|---|---|---|
| चंद्र / गुरु | सितंबर 2026 | जनवरी 2028 | 6.0 | पंचम भाव का स्वामी; नैसर्गिक कारक; नवम और एकादश भाव पर दृष्टि |
| चंद्र / बुध | अगस्त 2029 | जनवरी 2031 | 5.5 | द्वितीय और एकादश भाव का स्वामी |
| चंद्र / केतु | जनवरी 2031 | अगस्त 2031 | 4.0 | नवम में स्थित; पंचम भाव पर दृष्टि |
| चंद्र / शुक्र | अगस्त 2031 | अप्रैल 2033 | 3.5 | द्वितीय में स्थित |
| मंगल / मंगल | अक्टूबर 2033 | मार्च 2034 | 8.0 | नवम भाव का स्वामी; एकादश में स्थित; द्वितीय और पंचम भाव पर दृष्टि |
| मंगल / राहु | मार्च 2034 | मार्च 2035 | 4.0 | नवम और एकादश भाव पर दृष्टि |
| मंगल / गुरु | मार्च 2035 | मार्च 2036 | 7.5 | पंचम भाव का स्वामी; नैसर्गिक कारक; नवम और एकादश भाव पर दृष्टि |
| मंगल / शनि | मार्च 2036 | अप्रैल 2037 | 3.5 | नवम भाव पर दृष्टि |

### ❖ गुरु-शनि का दोहरा गोचर

एक शास्त्रीय समय-नियम: किसी भाव के विषय तब साकार होते हैं जब गोचर में गुरु और शनि दोनों एक साथ उस भाव (या उसके स्वामी) पर स्थित हों या दृष्टि डालें। नीचे अगले तीन वर्षों के वे महीने हैं जब दोनों आपके नवम भाव या उसके स्वामी को छूते हैं।

| से | तक | गुरु | शनि |
|---|---|---|---|
| जुलाई 2027 | अक्टूबर 2027 | सिंह | मेष |
| मार्च 2028 | जुलाई 2028 | सिंह | मेष |
| जनवरी 2029 | मार्च 2029 | तुला | मेष |

### ❖ चंद्र / गुरु · सितंबर 2026 – जनवरी 2028

इस खिड़की में चंद्र महादशा के अंतर्गत गुरु की अंतर्दशा (पंचम भाव का स्वामी; नैसर्गिक कारक; नवम और एकादश भाव पर दृष्टि) चलती है। गुरु आपके तृतीय भाव में है, इसलिए गुरु का आशीर्वाद का संबंध पराक्रम और भाई-बहन से जुड़ता है। इस अवधि से गुरु-शनि का दोहरा गोचर मेल खाता है, जिसे परंपरा प्रबल प्रेरक मानती है।

### ❖ चंद्र / बुध · अगस्त 2029 – जनवरी 2031

इस खिड़की में चंद्र महादशा के अंतर्गत बुध की अंतर्दशा (द्वितीय और एकादश भाव का स्वामी) चलती है। बुध आपके प्रथम भाव में है, इसलिए गुरु का आशीर्वाद का संबंध स्वयं और स्वास्थ्य से जुड़ता है। इससे कोई दोहरा गोचर मेल नहीं खाता, इसलिए फल प्रयास और परिस्थिति पर अधिक निर्भर हैं।

### ❖ चंद्र / केतु · जनवरी 2031 – अगस्त 2031

इस खिड़की में चंद्र महादशा के अंतर्गत केतु की अंतर्दशा (नवम में स्थित; पंचम भाव पर दृष्टि) चलती है। केतु आपके नवम भाव में है, इसलिए गुरु का आशीर्वाद का संबंध भाग्य और गुरु से जुड़ता है।

### ❖ चंद्र / शुक्र · अगस्त 2031 – अप्रैल 2033

इस खिड़की में चंद्र महादशा के अंतर्गत शुक्र की अंतर्दशा (द्वितीय में स्थित) चलती है। शुक्र आपके द्वितीय भाव में है, इसलिए गुरु का आशीर्वाद का संबंध धन और परिवार से जुड़ता है।

### ❖ मंगल / मंगल · अक्टूबर 2033 – मार्च 2034

इस खिड़की में मंगल महादशा के अंतर्गत मंगल की अंतर्दशा (नवम भाव का स्वामी; एकादश में स्थित; द्वितीय और पंचम भाव पर दृष्टि) चलती है। मंगल आपके एकादश भाव में है, इसलिए गुरु का आशीर्वाद का संबंध लाभ और नेटवर्क से जुड़ता है।

### ❖ मंगल / राहु · मार्च 2034 – मार्च 2035

इस खिड़की में मंगल महादशा के अंतर्गत राहु की अंतर्दशा (नवम और एकादश भाव पर दृष्टि) चलती है। राहु आपके तृतीय भाव में है, इसलिए गुरु का आशीर्वाद का संबंध पराक्रम और भाई-बहन से जुड़ता है।

> समय-खिड़कियाँ ज़ोर के पारंपरिक संकेत हैं, घटनाओं की भविष्यवाणी नहीं। निर्णय आपकी परिस्थितियों और योग्य सलाह पर आधारित होने चाहिए।



## ग्रह-दर-ग्रह विश्लेषण

> यह आपसे कैसे जुड़ता है: "ग्रह-दर-ग्रह विश्लेषण" धनु राशि के साहसिक चंद्र वाले उदार-हृदय सिंह लग्न के व्यक्ति के एक और पहलू को देखता है; इसे अपने कामकाजी जीवन को ध्यान में रखकर पढ़ें, क्योंकि आप स्पष्ट प्रतिफल वाला स्थिर, सावधान काम पसंद करते हैं।

हर ग्रह को उसकी राशि, नक्षत्र और पद, भाव, स्वामित्व, दृष्टि, युति, गति, अस्तता, अवस्था और बल से पढ़ा गया है। नीचे के अनुच्छेद केवल आपकी कुंडली में उपस्थित कारकों से बने हैं।

### ❖ सूर्य: प्रथम भाव · सिंह

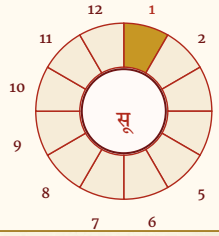


**सूर्य: प्रथम भाव · सिंह**

0°11′ · सिंह

मघा · 1

स्वराशि

**सूर्य: राशि, भाव और नक्षत्र एक दृष्टि में**

सूर्य आपकी मूल पहचान, प्राण-शक्ति, पिता-तुल्य व्यक्तियों और अधिकार से आपके संबंध का कारक है। यह सिंह राशि में 0°11′ पर है; इसकी अभिव्यक्ति सिंह की गरिमा के साथ: स्वाभिमानी, उदार, प्रभावशाली और नेतृत्व को उत्सुक। स्वराशि सिंह में सूर्य गरिमामय और

आत्मविश्वासी है, सार्वजनिकता और ज़िम्मेदारी में सहज। सूर्य स्वयं इस राशि का स्वामी है। यह अपने मूलत्रिकोण क्षेत्र में भी है, जहाँ यह विशेष उद्देश्य से कार्य करता है।

इसका नक्षत्र मघा है, जिसके देवता पितर (पूर्वज) और स्वामी केतु हैं; यहाँ इस नक्षत्र के ये गुण दिखते हैं: विरासत का सम्मान; उदारता। 1वाँ पद मेष नवांश में पड़ता है, जो इसे धर्म (उद्देश्य और सिद्धांत) की ओर उन्मुख करता है।

यह आपके प्रथम भाव में है। प्रथम भाव (लग्न) शरीर, स्वास्थ्य, स्वभाव और जीवन को देखने का ढंग है; यह हर दूसरे भाव को प्रभावित करता है। यह आपके प्रथम भाव (स्वयं और स्वास्थ्य) का स्वामी है और इन विषयों को प्रथम भाव में ले आता है। स्वामित्व के आधार पर सूर्य आपके लग्न के लिए कारक-शुभ (functional benefic) है।

सूर्य की दृष्टि आपके सप्तम भाव पर है, जो वहाँ स्पष्टता, स्वाभिमान और मान्यता की चाह लाती है। इसकी दृष्टि शनि पर पड़ती है। इस पर शनि और केतु की दृष्टि है (शनि: विलंब, गंभीरता और स्थायी ढाँचा; केतु: विरक्ति, अंतर्दृष्टि और अचानक मोड़)।

सूर्य की बुध के साथ युति है (4.2° की दूरी)। सूर्य-बुध युति पहचान और बुद्धि को जोड़ती है; मुखर, प्रशासनिक और स्पष्ट राय रखने वाला स्वभाव।

सूर्य बाल अवस्था में है: इसके फल धीरे-धीरे आते हैं और बाद में परिपक्व होते हैं। बल: षड्बल में 7 में से 1वाँ स्थान (8.05 रूप, सांकेतिक), विंशोपक 19.9/20, और अपनी राशि में 4 अष्टकवर्ग बिंदु।

सूर्य प्रथम भाव (स्वयं और स्वास्थ्य) में एक केन्द्र स्थिति है। सिंह में, चन्द्र के नक्षत्र मघा (पाद 1) के साथ, सामान्य पाठ यह है कि आपकी मूल पहचान एक दिखाई देने वाले रूप में आता है। वास्तविक फल दशा और आपके चुनावों पर निर्भर रहता है।

षड्बल (8.05 रूप) और विंशोपक (19.9) से सूर्य इस कुंडली में बेहतर समर्थित ग्रहों में हैं। सूर्य की दशा को आपकी मूल पहचान पर ध्यान देने का व्यावहारिक समय माना जाता है, फिर भी कोई वादा नहीं।

सूर्य मघा में, प्रथम भाव में, जीवन भर आपकी मूल पहचान को स्वयं और स्वास्थ्य से जोड़ते हैं। बाद की सूर्य दशाएँ उस संबंध को फिर देखने के उपयोगी क्षण हैं, निश्चित फल मानकर नहीं।

## ❖ चंद्र: पंचम भाव · धनु

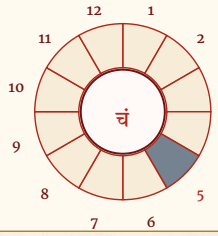


चंद्र: पंचम भाव · धनु

7°19′ · धनु

मूल · 3

सम राशि

चंद्र: राशि, भाव और नक्षत्र एक दृष्टि में

चंद्र आपके मन, भावनाओं, माता, घरेलू जीवन और संतोष की क्षमता का कारक है। यह धनु राशि में 7°19′ पर है; इसकी अभिव्यक्ति धनु के आशावाद के साथ: सिद्धांतवादी, दार्शनिक, खरा और स्वतंत्रता-प्रेमी। राशि-स्वामी गुरु, चंद्र के प्रति सम है, इसलिए फल कुंडली के अन्य कारकों पर निर्भर करते हैं।

इसका नक्षत्र मूल है, जिसके देवता निर्ऋति (विलय की देवी) और स्वामी केतु हैं; यहाँ इस नक्षत्र के ये गुण दिखते हैं: शोध-क्षमता; जड़ तक पहुँचना। 3वाँ पद मिथुन नवांश में पड़ता है, जो इसे काम (इच्छा, संबंध और आनंद) की ओर उन्मुख करता है।

यह आपके पंचम भाव में है। पंचम भाव बुद्धि, सृजन, संतान, प्रेम, मंत्र और पूर्व-पुण्य से जुड़ा है। यह आपके द्वादश भाव (व्यय और मोक्ष) का स्वामी है और इन विषयों को पंचम भाव में ले आता है। स्वामित्व के आधार पर चंद्र आपके लग्न के लिए सम है; इसके फल स्थिति से तय होते हैं।

चंद्र की दृष्टि आपके एकादश भाव पर है, जो वहाँ संवेदनशीलता, देखभाल और परिवर्तनशीलता लाती है। इसकी दृष्टि मंगल पर पड़ती है। इस पर मंगल और केतु की दृष्टि है (मंगल: ऊर्जा, तत्परता और कभी-कभी टकराव; केतु: विरक्ति, अंतर्दृष्टि और अचानक मोड़)।

चंद्र कुमार अवस्था में है: यह आंशिक पर बढ़ते हुए फल देता है। बल: षड्बल में 7 में से 5वाँ स्थान (5.71 रूप, सांकेतिक), विंशोपक 11.0/20, और अपनी राशि में 4 अष्टकवर्ग बिंदु।

चंद्र पंचम भाव (संतान और बुद्धि) में एक त्रिकोण स्थिति है। धनु में, मूल पाद 3 के साथ, परंपरा अक्सर आपके मन को शोरभरी घटना से अधिक शांत सहयोग की तरह पढ़ती है। इसे प्रवृत्ति मानें, वादा नहीं।

षड्बल (5.71 रूप) और विंशोपक (11.0) से चंद्र को इस कुंडली में मिश्रित समर्थन है। चंद्र की दशा में आपके मन के आसपास प्रयास और धैर्य दोनों की आवश्यकता रहती है।

कुंडली चंद्र (आपके मन) को पंचम भाव में रखती है, इसलिए संतान और बुद्धि वह भाव है जिसके माध्यम से इस ग्रह को पढ़ा जाता है। लगभग 2026 की चंद्र दशा जाँच का पारंपरिक समय है, कोई तिथि नहीं जिस पर कुछ घटित होना ही है।

## ❖ मंगल: एकादश भाव · मिथुन

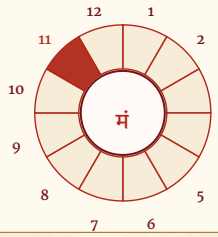


**मंगल: एकादश भाव · मिथुन**

6°24′ · मिथुन

मृगशिरा · 4

शत्रु राशि

**मंगल: राशि, भाव और नक्षत्र एक दृष्टि में**

मंगल आपकी प्रेरणा, साहस, शारीरिक ऊर्जा, भाई-बहनों और प्रतिस्पर्धा की रुचि का कारक है। यह मिथुन राशि में 6°24′ पर है; इसकी अभिव्यक्ति मिथुन की जिज्ञासा के साथ: बातूनी, लचीला, चंचल और बहुमुखी। राशि-स्वामी बुध, मंगल का नैसर्गिक शत्रु है, इसलिए इसे कुछ घर्षण के बीच काम करना पड़ता है।

इसका नक्षत्र मृगशिरा है, जिसके देवता सोम (चंद्रमा का अमृत) और स्वामी मंगल हैं; यहाँ इस नक्षत्र के ये गुण दिखते हैं: जिज्ञासा; कोमलता और संवेदनशीलता। 4वाँ पद वृश्चिक नवांश में पड़ता है, जो इसे मोक्ष (मुक्ति, अंतर्दृष्टि और आंतरिक जीवन) की ओर उन्मुख करता है।

यह आपके एकादश भाव में है। एकादश भाव आय, लाभ, बड़े भाई-बहन, मित्र, नेटवर्क और इच्छा-पूर्ति से जुड़ा है। यह आपके चतुर्थ भाव (घर और माता) और नवम भाव (भाग्य और गुरु) का स्वामी है और इन विषयों को एकादश भाव में ले आता है। केंद्र और त्रिकोण दोनों का स्वामी होने से मंगल आपके लग्न के लिए योगकारक है, कुंडली के सबसे सहायक ग्रहों में से एक।

मंगल की दृष्टि आपके द्वितीय भाव, पंचम भाव और षष्ठ भाव पर है, जो वहाँ ऊर्जा, तत्परता और कभी-कभी टकराव लाती है। इसकी दृष्टि चंद्र और शुक्र पर पड़ती है। इस पर चंद्र, गुरु और राहु की दृष्टि है (चंद्र: संवेदनशीलता, देखभाल और परिवर्तनशीलता; गुरु: संरक्षण, वृद्धि और अच्छा परामर्श; राहु: जुनून, महत्वाकांक्षा और अपरंपरागतता)।

मंगल कुमार अवस्था में है: यह आंशिक पर बढ़ते हुए फल देता है। बल: षड्बल में 7 में से 7वाँ स्थान (4.07 रूप, सांकेतिक), विंशोपक 11.6/20, और अपनी राशि में 4 अष्टकवर्ग बिंदु।

मंगल एकादश भाव (लाभ और नेटवर्क) में उपचय स्थिति है। मिथुन में, मृगशिरा पाद 4 के साथ, शास्त्र अक्सर कहते हैं कि आपकी प्रेरणा समय और स्थिर प्रयास से बढ़ सकता है, विशेषकर बाद की दशाओं में।

षड्बल (4.07 रूप) और विंशोपक (11.6) से मंगल इस कुंडली में हल्के समर्थित हैं। इनकी दशा में आपकी प्रेरणा के बारे में योजनाएँ सरल रखना, और सबल ग्रहों से सहयोग लेना, सामान्य सलाह है; इसे निश्चित झटका न मानें।

मंगल को यहाँ एक कार्य-मानचित्र की तरह पढ़ें: आपकी प्रेरणा का लाभ और नेटवर्क के माध्यम से व्यक्त होना, एकादश भाव में मिथुन से। लगभग 2033 की अवधि को наблюдि और चुनाव के लिए उपयोग करें, भविष्यवाणी के रूप में नहीं।

## ❖ बुध: प्रथम भाव · सिंह

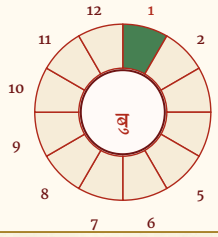


**बुध: प्रथम भाव · सिंह**

4°23′ · सिंह

मघा · 2

मित्र राशि

**बुध: राशि, भाव और नक्षत्र एक दृष्टि में**

बुध आपकी सोच, वाणी, सीखने की शैली, व्यापार और हास्य-बोध का कारक है। यह सिंह राशि में 4°23′ पर है; इसकी अभिव्यक्ति सिंह की गरिमा के साथ: स्वाभिमानी, उदार, प्रभावशाली और नेतृत्व को उत्सुक। राशि-स्वामी सूर्य, बुध का नैसर्गिक मित्र है, इसलिए इसे सहयोग मिलता है।

इसका नक्षत्र मघा है, जिसके देवता पितर (पूर्वज) और स्वामी केतु हैं; यहाँ इस नक्षत्र के ये गुण दिखते हैं: उदारता; महत्वाकांक्षा। 2वाँ पद वृषभ नवांश में पड़ता है, जो इसे अर्थ (संसाधन और उपलब्धि) की ओर उन्मुख करता है।

यह आपके प्रथम भाव में है। यह आपके द्वितीय भाव (धन और परिवार) और एकादश भाव (लाभ और नेटवर्क) का स्वामी है और इन विषयों को प्रथम भाव में ले आता है। स्वामित्व के आधार पर बुध आपके लग्न के लिए कारक-पाप (functional malefic) है, इसलिए इसकी दशाओं में सावधानी उचित है।

बुध की दृष्टि आपके सप्तम भाव पर है, जो वहाँ विचारशीलता, संवाद और विश्लेषण लाती है। इसकी दृष्टि शनि पर पड़ती है।

बुध की सूर्य के साथ युति है (4.2° की दूरी)।

बुध अस्त है, सूर्य से 4.2° पर। अस्त बुध बहुत सामान्य है; बुद्धि अहं की सेवा करती है, और सुनने का अभ्यास चाहिए। बुध बाल अवस्था में है: इसके फल धीरे-धीरे आते हैं और बाद में परिपक्व होते हैं। बल: षड्बल में 7 में से 2वाँ स्थान (6.44 रूप, सांकेतिक), विंशोपक 13.7/20, और अपनी राशि में 4 अष्टकवर्ग बिंदु।

बुध प्रथम भाव (स्वयं और स्वास्थ्य) में एक केन्द्र स्थिति है। सिंह में, चन्द्र के नक्षत्र मघा (पाद 2) के साथ, सामान्य पाठ यह है कि आपकी सोच एक दिखाई देने वाले रूप में आता है।

षड्बल (6.44 रूप) और विंशोपक (13.7) से बुध इस कुंडली में बेहतर समर्थित ग्रहों में हैं। बुध की दशा को आपकी सोच पर ध्यान देने का व्यावहारिक समय माना जाता है, फिर भी कोई वादा नहीं।

कुंडली बुध (आपकी सोच) को प्रथम भाव में रखती है, इसलिए स्वयं और स्वास्थ्य वह भाव है जिसके माध्यम से इस ग्रह को पढ़ा जाता है। लगभग 2093 की बुध दशा जाँच का पारंपरिक समय है, कोई तिथि नहीं जिस पर कुछ घटित होना ही है।

## ❖ गुरु: तृतीय भाव · तुला

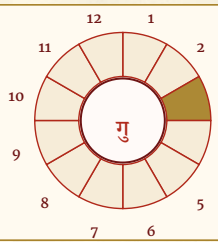


**गुरु: तृतीय भाव · तुला**

13°58′ · तुला

स्वाति · 3

शत्रु राशि

**गुरु: राशि, भाव और नक्षत्र एक दृष्टि में**

गुरु आपके ज्ञान, आस्था, गुरुजनों, संतान, धन और जीवन के अर्थ का कारक है। यह तुला राशि में 13°58′ पर है; इसकी अभिव्यक्ति तुला के संतुलन के साथ: कूटनीतिक, न्यायप्रिय, सौंदर्यबोधी और साझेदारी-प्रधान। राशि-स्वामी शुक्र, गुरु का नैसर्गिक शत्रु है, इसलिए इसे कुछ घर्षण के बीच काम करना पड़ता है।

इसका नक्षत्र स्वाति है, जिसके देवता वायु (पवन) और स्वामी राहु हैं; यहाँ इस नक्षत्र के ये गुण दिखते हैं: लचीलापन; स्वतंत्रता। 3वाँ पद कुंभ नवांश में पड़ता है, जो इसे काम (इच्छा, संबंध और आनंद) की ओर उन्मुख करता है।

यह आपके तृतीय भाव में है। तृतीय भाव साहस, प्रयास, छोटे भाई-बहन, छोटी यात्राएँ, संवाद-कौशल और शौक से जुड़ा है। यह आपके पंचम भाव (संतान और बुद्धि) और अष्टम भाव (रूपांतरण और विरासत) का स्वामी है और इन विषयों को तृतीय भाव में ले आता है। स्वामित्व के आधार पर गुरु आपके लग्न के लिए कारक-शुभ (functional benefic) है।

गुरु की दृष्टि आपके सप्तम भाव, नवम भाव और एकादश भाव पर है, जो वहाँ संरक्षण, वृद्धि और अच्छा परामर्श लाती है। इसकी दृष्टि मंगल, शनि और केतु पर पड़ती है। इस पर केतु की दृष्टि है (केतु: विरक्ति, अंतर्दृष्टि और अचानक मोड़)।

गुरु की राहु के साथ युति है (11.3° की दूरी)। गुरु-राहु युति (गुरु-चांडाल) परंपरा पर प्रश्न करती है; अपरंपरागत विश्वास और गुरु, तथा नैतिक स्पष्टता की आवश्यकता।

गुरु युवा अवस्था में है: यह अपने फल देने की पूर्ण क्षमता में है। बल: षड्बल में 7 में से 6वाँ स्थान (5.03 रूप, सांकेतिक), विंशोपक 9.9/20, और अपनी राशि में 4 अष्टकवर्ग बिंदु।

गुरु तृतीय भाव (पराक्रम और भाई-बहन) में उपचय स्थिति है। तुला में, स्वाति पाद 3 के साथ, शास्त्र अक्सर कहते हैं कि आपके ज्ञान समय और स्थिर प्रयास से बढ़ सकता है, विशेषकर बाद की दशाओं में।

षड्बल (5.03 रूप) और विंशोपक (9.9) से गुरु को इस कुंडली में मिश्रित समर्थन है। गुरु की दशा में आपके ज्ञान के आसपास प्रयास और धैर्य दोनों की आवश्यकता रहती है।

इस कुंडली में गुरु सामान्यतः आपके ज्ञान के कारक हैं, और आपके तृतीय भाव में बैठे हैं, इसलिए यह विषय सबसे स्पष्ट पराक्रम और भाई-बहन के माध्यम से महसूस होता है। यह पारंपरिक पाठ है, वादा नहीं। जब गुरु की दशा चले (अगली बार लगभग 2058), तब इस क्षेत्र को ध्यान से देखना और सहायक आदतें चुनना उपयोगी रहता है।

## ❖ शुक्र: द्वितीय भाव · कन्या

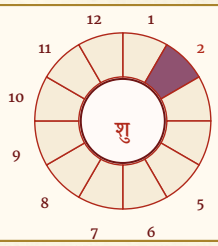


**शुक्र: द्वितीय भाव · कन्या**

16°00′ · कन्या

हस्त · 2

नीच

**शुक्र: राशि, भाव और नक्षत्र एक दृष्टि में**

शुक्र आपके स्नेह, आनंद, कला, सुख-सुविधा, साझेदारी और रुचि का कारक है। यह कन्या राशि में 16°00′ पर है; इसकी अभिव्यक्ति कन्या की सूक्ष्मता के साथ: विश्लेषणात्मक, विनम्र, सहायक और अधूरे कामों का आलोचक। कन्या में नीच का शुक्र प्रेम और सौंदर्य का विश्लेषण करता है; मानदंड ऊँचे होते हैं और स्नेह सेवा के रूप में प्रकट होता है। राशि-स्वामी बुध, शुक्र का नैसर्गिक मित्र है, इसलिए इसे सहयोग मिलता है।

इसका नक्षत्र हस्त है, जिसके देवता सविता (सृजन-शक्ति रूपी सूर्य) और स्वामी चंद्र हैं; यहाँ इस नक्षत्र के ये गुण दिखते हैं: विनोद-प्रियता; साधन-संपन्नता। नक्षत्र स्वामी चंद्र इस ग्रह का नैसर्गिक शत्रु है।

यह आपके द्वितीय भाव में है। द्वितीय भाव संचित धन, परिवार, वाणी, खान-पान और प्रारंभिक शिक्षा से जुड़ा है। यह आपके तृतीय भाव (पराक्रम और भाई-बहन) और दशम भाव (करियर और पद) का स्वामी है और इन विषयों को द्वितीय भाव में ले आता है। स्वामित्व के आधार पर शुक्र आपके लग्न के लिए कारक-पाप (functional malefic) है, इसलिए इसकी दशाओं में सावधानी उचित है।

शुक्र की दृष्टि आपके अष्टम भाव पर है, जो वहाँ शालीनता, आनंद और सामंजस्य लाती है। इस पर मंगल की दृष्टि है (मंगल: ऊर्जा, तत्परता और कभी-कभी टकराव)।

शुक्र युवा अवस्था में है: यह अपने फल देने की पूर्ण क्षमता में है। बल: षड्बल में 7 में से 4वाँ स्थान (5.71 रूप, सांकेतिक), विंशोपक 13.7/20, और अपनी राशि में 3 अष्टकवर्ग बिंदु।

शुक्र द्वितीय भाव (धन और परिवार) में उस भाव में हैं जिसे परंपरा दबाव और मुक्ति से भी जोड़ती है। कन्या में, हस्त पाद 2 के साथ, उपयोगी पाठ यह है कि आपके स्नेह और धन और परिवार को साथ देखें, और दशा तिथियों को समीक्षा का समय मानें, गारंटी नहीं।

षड्बल (5.71 रूप) और विंशोपक (13.7) से शुक्र को इस कुंडली में मिश्रित समर्थन है। शुक्र की दशा में आपके स्नेह के आसपास प्रयास और धैर्य दोनों की आवश्यकता रहती है।

शुक्र हस्त में, द्वितीय भाव में, जीवन भर आपके स्नेह को धन और परिवार से जोड़ते हैं। बाद की शुक्र दशाएँ उस संबंध को फिर देखने के उपयोगी क्षण हैं, निश्चित फल मानकर नहीं।

## ❖ शनि: सप्तम भाव · कुंभ

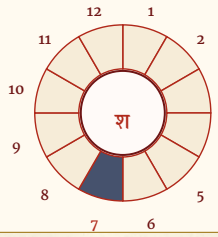


**शनि: सप्तम भाव · कुंभ**

16°23′ · कुंभ

शतभिषा · 3

स्वराशि

**शनि: राशि, भाव और नक्षत्र एक दृष्टि में**

शनि आपके अनुशासन, सहनशक्ति, कर्म-निष्ठा, भय और दीर्घकालिक कर्म का कारक है। यह कुंभ राशि में 16°23′ पर है; इसकी अभिव्यक्ति कुंभ की स्वतंत्रता के साथ: आदर्शवादी, अपरंपरागत, मानवतावादी और तटस्थ। स्वराशि में शनि स्थिर और ज़िम्मेदार है, धैर्यपूर्ण दीर्घकालिक परिश्रम का फल देता है। शनि स्वयं इस राशि का स्वामी है।

इसका नक्षत्र शतभिषा है, जिसके देवता वरुण (ब्रह्मांडीय जल और व्यवस्था के अधिपति) और स्वामी राहु हैं; यहाँ इस नक्षत्र के ये गुण दिखते हैं: दार्शनिक मन; शोध और विश्लेषण।

यह आपके सप्तम भाव में है। सप्तम भाव विवाह, व्यावसायिक साझेदार, अनुबंध, जनता और काम के लिए विदेश-यात्रा से जुड़ा है। यह आपके षष्ठ भाव (सेवा और बाधाएँ) और सप्तम भाव (विवाह और साझेदार) का स्वामी है और इन विषयों को सप्तम भाव में ले आता है। स्वामित्व के आधार पर शनि आपके लग्न के लिए कारक-पाप (functional malefic) है, इसलिए इसकी दशाओं में सावधानी उचित है।

शनि की दृष्टि आपके प्रथम भाव, चतुर्थ भाव और नवम भाव पर है, जो वहाँ विलंब, गंभीरता और स्थायी ढाँचा लाती है। इसकी दृष्टि सूर्य, बुध और केतु पर पड़ती है। इस पर सूर्य, बुध, गुरु और राहु की दृष्टि है (सूर्य: स्पष्टता, स्वाभिमान और मान्यता की चाह; बुध: विचारशीलता, संवाद और विश्लेषण; गुरु: संरक्षण, वृद्धि और अच्छा परामर्श; राहु: जुनून, महत्वाकांक्षा और अपरंपरागतता)।

वक्री शनि कर्तव्य को भीतर ग्रहण करता है; कठोर आंतरिक आलोचक और अतीत की ज़िम्मेदारियाँ। शनि युवा अवस्था में है: यह अपने फल देने की पूर्ण क्षमता में है। बल: षड्बल में 7 में से 3वाँ स्थान (6.26 रूप, सांकेतिक), विंशोपक 15.3/20, और अपनी राशि में 4 अष्टकवर्ग बिंदु। शनि वर्गोत्तम है (D1 और D9 में एक ही राशि), जो इसके फलों को स्थिर करता है।

शनि सप्तम भाव (विवाह और साझेदार) में एक केन्द्र स्थिति है। कुंभ में, चन्द्र के नक्षत्र शतभिषा (पाद 3) के साथ, सामान्य पाठ यह है कि आपके अनुशासन एक दिखाई देने वाले रूप में आता है।

षड्बल (6.26 रूप) और विंशोपक (15.3) से शनि इस कुंडली में बेहतर समर्थित ग्रहों में हैं। शनि की दशा को आपके अनुशासन पर ध्यान देने का व्यावहारिक समय माना जाता है, फिर भी कोई वादा नहीं।

शनि को यहाँ एक कार्य-मानचित्र की तरह पढ़ें: आपके अनुशासन का विवाह और साझेदार के माध्यम से व्यक्त होना, सप्तम भाव में कुंभ से। लगभग 2074 की अवधि को наблюдि और चुनाव के लिए उपयोग करें, भविष्यवाणी के रूप में नहीं।

## ❖ राहु: तृतीय भाव · तुला

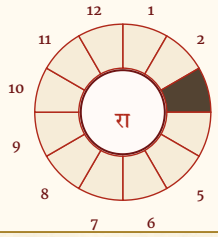


**राहु: तृतीय भाव · तुला**

25°14′ · तुला

विशाखा · 2

छाया ग्रह

**राहु: राशि, भाव और नक्षत्र एक दृष्टि में**

राहु आपकी सांसारिक भूख, महत्वाकांक्षा और नए व विदेशी के प्रति आकर्षण का कारक है। यह तुला राशि में 25°14′ पर है; इसकी अभिव्यक्ति तुला के संतुलन के साथ: कूटनीतिक, न्यायप्रिय, सौंदर्यबोधी और साझेदारी-प्रधान। छाया ग्रह होने से राहु अपने राशि-स्वामी शुक्र के फल देता है, जो आपके द्वितीय भाव (नीच) में है।

इसका नक्षत्र विशाखा है, जिसके देवता इंद्र और अग्नि और स्वामी गुरु हैं; यहाँ इस नक्षत्र के ये गुण दिखते हैं: दृढ़ विश्वास; प्रेरित करने की क्षमता।

यह आपके तृतीय भाव में है।

राहु की दृष्टि आपके सप्तम भाव, नवम भाव और एकादश भाव पर है, जो वहाँ जुनून, महत्वाकांक्षा और अपरंपरागतता लाती है।

राहु की गुरु के साथ युति है (11.3° की दूरी)।

राहु तृतीय भाव (पराक्रम और भाई-बहन) में उपचय स्थिति है। तुला में, विशाखा पाद 2 के साथ, शास्त्र अक्सर कहते हैं कि आपकी सांसारिक भूख समय और स्थिर प्रयास से बढ़ सकता है, विशेषकर बाद की दशाओं में।

क्योंकि राहु तुला में हैं और आपकी सांसारिक भूख के विषय से जुड़े हैं, उनकी अगली दशा (लगभग 2040) पराक्रम और भाई-बहन की समीक्षा का स्वाभाविक समय है। तृतीय भाव वह स्थान है जहाँ यह कुंडली में दिखता है। यहाँ कोई निश्चित फल नहीं है।

## ❖ केतु: नवम भाव · मेष

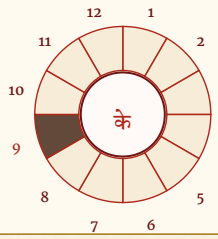


**केतु: नवम भाव · मेष**

25°14′ · मेष

भरणी · 4

छाया ग्रह

**केतु: राशि, भाव और नक्षत्र एक दृष्टि में**

केतु आपकी विरक्ति, पूर्व-कौशल, अंतर्ज्ञान और आध्यात्मिक खोज का कारक है। यह मेष राशि में 25°14′ पर है; इसकी अभिव्यक्ति मेष की सीधी शैली में: शीघ्र आरंभ, प्रतिस्पर्धी और स्पष्टवादिता की हद तक ईमानदार। छाया ग्रह होने से केतु अपने राशि-स्वामी मंगल के फल देता है, जो आपके एकादश भाव (शत्रु राशि) में है।

इसका नक्षत्र भरणी है, जिसके देवता यम (धर्म और मृत्यु के अधिपति) और स्वामी शुक्र हैं; यहाँ इस नक्षत्र के ये गुण दिखते हैं: सहनशक्ति; नैतिक साहस।

यह आपके नवम भाव में है। नवम भाव भाग्य, पिता, गुरुजन, धर्म, उच्च शिक्षा और लंबी यात्राओं से जुड़ा है।

केतु की दृष्टि आपके प्रथम भाव, तृतीय भाव और पंचम भाव पर है, जो वहाँ विरक्ति, अंतर्दृष्टि और अचानक मोड़ लाती है। इसकी दृष्टि सूर्य, चंद्र, बुध, गुरु और राहु पर पड़ती है। इस पर गुरु, शनि और राहु की दृष्टि है (गुरु: संरक्षण, वृद्धि और अच्छा परामर्श; शनि: विलंब, गंभीरता और स्थायी ढाँचा; राहु: जुनून, महत्वाकांक्षा और अपरंपरागतता)।

केतु नवम भाव (भाग्य और गुरु) में एक त्रिकोण स्थिति है। मेष में, भरणी पाद 4 के साथ, परंपरा अक्सर आपकी विरक्ति को शोरभरी घटना से अधिक शांत सहयोग की तरह पढ़ती है। इसे प्रवृत्ति मानें, वादा नहीं।

नवम भाव वह भाव है जिसके माध्यम से इस कुंडली में केतु (आपकी विरक्ति) को पढ़ा जाता है। बाद की केतु दशा भाग्य और गुरु का जायजा लेने का पारंपरिक समय है, परिणाम बाँधने वाली तिथि नहीं।



# भाव-दर-भाव विश्लेषण

यह आपके लिए क्यों मायने रखता है: हर भाव रोज़ के जीवन का एक क्षेत्र है; यह अध्याय दिखाता है कि कौन से क्षेत्र आपके लिए सहज हैं और कौन से प्रयास से निखरते हैं।

हर भाव को उसकी राशि, उसके स्वामी और उसकी स्थिति, भाव में स्थित ग्रहों, उस पर दृष्टियों, उसके नैसर्गिक कारक और उसके अष्टकवर्ग अंक से पढ़ा गया है।

| भाव | क्षेत्र | राशि | स्वामी | स्वामी स्थित | ग्रह | सर्वा. |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | स्वयं और स्वास्थ्य | सिंह | सूर्य | प्रथम | सूर्य, बुध | 29 |
| 2 | धन और परिवार | कन्या | बुध | प्रथम | शुक्र | 24 |
| 3 | पराक्रम और भाई-बहन | तुला | शुक्र | द्वितीय | गुरु, राहु | 32 |
| 4 | घर और माता | वृश्चिक | मंगल | एकादश | - | 22 |
| 5 | संतान और बुद्धि | धनु | गुरु | तृतीय | चंद्र | 26 |
| 6 | सेवा और बाधाएँ | मकर | शनि | सप्तम | - | 29 |
| 7 | विवाह और साझेदार | कुंभ | शनि | सप्तम | शनि | 25 |
| 8 | रूपांतरण और विरासत | मीन | गुरु | तृतीय | - | 25 |
| 9 | भाग्य और गुरु | मेष | मंगल | एकादश | केतु | 28 |
| 10 | करियर और पद | वृषभ | शुक्र | द्वितीय | - | 35 |
| 11 | लाभ और नेटवर्क | मिथुन | बुध | प्रथम | मंगल | 36 |
| 12 | व्यय और मोक्ष | कर्क | चंद्र | पंचम | - | 26 |

## ❖ प्रथम भाव: स्वयं और स्वास्थ्य · सिंह

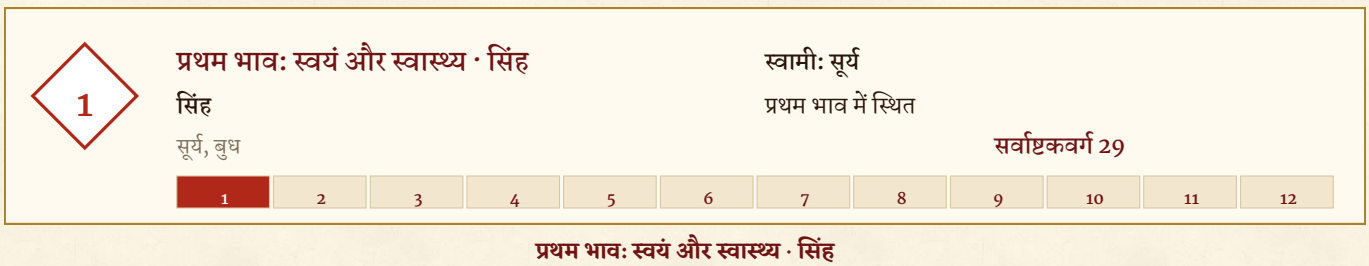


प्रथम भाव: स्वयं और स्वास्थ्य · सिंह

आपका प्रथम भाव सिंह राशि में पड़ता है; इसके विषयों के प्रति दृष्टिकोण, सिंह की गरिमा के साथ: स्वाभिमानी, उदार, प्रभावशाली और नेतृत्व को उत्सुक (मुख्य विषय: नेतृत्व, सृजन, गरिमा)।

इसका स्वामी सूर्य इसी भाव में है, केंद्र, कुंडली का स्तंभ जहाँ ग्रह स्पष्ट रूप से कार्य करते हैं, सिंह राशि (स्वराशि) में। भावेश स्वयं इसी भाव में बैठा है, जो इसके विषयों की रक्षा करता और उन्हें बल देता है।

प्रथम भाव में ग्रह: सूर्य और बुध। सूर्य (स्वराशि) स्वयं और स्वास्थ्य में आपकी मूल पहचान का प्रभाव लाता है। बुध (मित्र राशि) स्वयं और स्वास्थ्य में आपकी सोच का प्रभाव लाता है।

प्रथम भाव पर शनि (सप्तम भाव से) और केतु (नवम भाव से) की दृष्टि है। दबाव या प्रेरणा शनि और केतु से आती है।

इसका नैसर्गिक कारक सूर्य आपके प्रथम भाव (स्वराशि) में है। 29 बिंदुओं के साथ (लगभग औसत 28) यह भाव सामान्य, संतुलित फल देता है। चंद्र से गिनने पर यह राशि आपका नवम भाव है।

प्रथम भाव सिंह में शरीर, स्वभाव और पहले प्रभाव का भाव है। स्वामी सूर्य (स्वराशि) प्रथम भाव में हैं और अष्टकवर्ग 29 है। यह बताता है कि प्राण और आत्म-प्रस्तुति कैसे समर्थित हैं, कोई निश्चित चरित्र नहीं। स्थित ग्रह: सूर्य और बुध।

प्रथम भाव (स्वयं और स्वास्थ्य) का व्यावहारिक पाठ यह है कि जब इसका स्वामी, जो प्रथम भाव में है, दशा चलाए, तब इस भाव को देखें। सिंह पर 29 बिंदु हैं। वे तिथियाँ ध्यान का समय हैं, निर्णय नहीं।

## ❖ द्वितीय भाव: धन और परिवार · कन्या

2

**द्वितीय भाव: धन और परिवार · कन्या**

कन्या

शुक्र

**स्वामी: बुध**

प्रथम भाव में स्थित

सर्वाष्टकवर्ग 24

| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|

**द्वितीय भाव: धन और परिवार · कन्या**

आपका द्वितीय भाव कन्या राशि में पड़ता है; इसके विषयों के प्रति दृष्टिकोण, कन्या की सूक्ष्मता के साथ: विश्लेषणात्मक, विनम्र, सहायक और अधूरे कामों का आलोचक (मुख्य विषय: कौशल, सेवा, स्वास्थ्य)।

इसका स्वामी बुध प्रथम भाव में है, केंद्र, कुंडली का स्तंभ जहाँ ग्रह स्पष्ट रूप से कार्य करते हैं, सिंह राशि (मित्र राशि) में, जो धन और परिवार को स्वयं और स्वास्थ्य से जोड़ता है। केंद्र या त्रिकोण में स्थित भावेश इस भाव के विषयों को मज़बूत, सहयोगी क्षेत्र में ले जाता है। भावेश अपने भाव से बारहवें स्थान पर है, जो इन विषयों पर ऊर्जा या संसाधन खर्च होने का पारंपरिक संकेत है। भावेश अस्त है, इसलिए ये विषय चुपचाप या किसी और की छाया में चलते हैं।

द्वितीय भाव में ग्रह: शुक्र। शुक्र (नीच) धन और परिवार में आपके स्नेह का प्रभाव लाता है।

द्वितीय भाव पर मंगल (एकादश भाव से) की दृष्टि है। दबाव या प्रेरणा मंगल से आती है।

इसका नैसर्गिक कारक गुरु आपके तृतीय भाव (शत्रु राशि) में है। 24 बिंदुओं के साथ (औसत से कम) यह भाव अधिक सचेत प्रयास चाहता है; इससे होकर महत्वपूर्ण गोचरों में धैर्य रखें। चंद्र से गिनने पर यह राशि आपका दशम भाव है।

द्वितीय भाव कन्या में परिवार के संसाधन, वाणी और प्रारंभिक बचत के लिए पढ़ा जाता है। स्वामी बुध (मित्र राशि) प्रथम भाव में हैं, राशि पर 24 बिंदु हैं, स्थित ग्रह शुक्र। इस स्वामी की दशा को धन की आदतों और पारिवारिक बातचीत की समीक्षा का समय मानें, लाभ या हानि का वादा नहीं।

द्वितीय भाव कन्या में, स्वामी बुध प्रथम भाव में, धन और परिवार का कार्य-चित्र हैं। जब उस स्वामी की दशा चले, इस पृष्ठ पर लौटें, और इसे जाँच-सूची की तरह उपयोग करें, भविष्यवाणी की तरह नहीं।

## ❖ तृतीय भाव: पराक्रम और भाई-बहन · तुला

3

**तृतीय भाव: पराक्रम और भाई-बहन · तुला**
तुला
गुरु, राहु

**स्वामी: शुक्र**
द्वितीय भाव में स्थित

सर्वाष्टकवर्ग 32

| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|

**तृतीय भाव: पराक्रम और भाई-बहन · तुला**

आपका तृतीय भाव तुला राशि में पड़ता है; इसके विषयों के प्रति दृष्टिकोण, तुला के संतुलन के साथ: कूटनीतिक, न्यायप्रिय, सौंदर्यबोधी और साझेदारी-प्रधान (मुख्य विषय: संतुलन, साझेदारी, सौंदर्य)।

इसका स्वामी शुक्र द्वितीय भाव में है, द्वितीय भाव, संसाधन और वाणी का भाव, कन्या राशि (नीच) में, जो पराक्रम और भाई-बहन को धन और परिवार से जोड़ता है।

तृतीय भाव में ग्रह: गुरु और राहु। गुरु (शत्रु राशि) पराक्रम और भाई-बहन में आपके ज्ञान का प्रभाव लाता है। राहु (छाया ग्रह) पराक्रम और भाई-बहन में आपकी सांसारिक भूख का प्रभाव लाता है।

तृतीय भाव पर केतु (नवम भाव से) की दृष्टि है। दबाव या प्रेरणा केतु से आती है।

इसका नैसर्गिक कारक मंगल आपके एकादश भाव (शत्रु राशि) में है। 32 बिंदुओं के साथ (औसत 28 से अधिक) यह भाव अच्छी तरह समर्थित है; इससे होकर गोचर प्रायः अच्छे फल देते हैं। चंद्र से गिनने पर यह राशि आपका एकादश भाव है।

तृतीय भाव तुला में प्रयास, भाई-बहन और छोटी यात्रा का भाव है। स्वामी शुक्र (नीच) द्वितीय भाव में, 32 बिंदु, स्थित ग्रह गुरु और राहु। परंपरा यहाँ साहस और दैनिक पहल देखती है। ये गुण अवधि के उपयोग पर निर्भर हैं, किसी गारंटी पर नहीं।

तृतीय भाव (पराक्रम और भाई-बहन) का व्यावहारिक पाठ यह है कि जब इसका स्वामी, जो द्वितीय भाव में है, दशा चलाए, तब इस भाव को देखें। तुला पर 32 बिंदु हैं।

## ❖ चतुर्थ भाव: घर और माता · वृश्चिक

4

**चतुर्थ भाव: घर और माता · वृश्चिक**
वृश्चिक
–

**स्वामी: मंगल**
एकादश भाव में स्थित

सर्वाष्टकवर्ग 22

| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|

**चतुर्थ भाव: घर और माता · वृश्चिक**

आपका चतुर्थ भाव वृश्चिक राशि में पड़ता है; इसके विषयों के प्रति दृष्टिकोण, वृश्चिक की गहराई के साथ: गोपनीय, खोजी, निष्ठावान और देर से क्षमा करने वाला (मुख्य विषय: गहराई, शोध, रूपांतरण)। चतुर्थ भाव माता, घर, वाहन, भूमि, मन की शांति और आधारभूत शिक्षा से जुड़ा है।

इसका स्वामी मंगल एकादश भाव में है, उपचय भाव, जहाँ फल समय के साथ लगातार सुधरते हैं, मिथुन राशि (शत्रु राशि) में, जो घर और माता को लाभ और नेटवर्क से जोड़ता है। भावेश अपने भाव से आठवें स्थान पर है, इसलिए ये विषय उथल-पुथल और नवीनीकरण के दौर से गुज़रते हैं।

चतुर्थ भाव रिक्त है, जो सामान्य बात है; इसके फल मुख्यतः भावेश मंगल से आते हैं।

चतुर्थ भाव पर शनि (सप्तम भाव से) की दृष्टि है। दबाव या प्रेरणा शनि से आती है।

इसका नैसर्गिक कारक चंद्र आपके पंचम भाव (सम राशि) में है। 22 बिंदुओं के साथ (औसत से कम) यह भाव अधिक सचेत प्रयास चाहता है; इससे होकर महत्वपूर्ण गोचरों में धैर्य रखें। चंद्र से गिनने पर यह राशि आपका द्वादश भाव है।

चतुर्थ भाव वृश्चिक में घर, माता और भीतरी सहजता का भाव है। स्वामी मंगल (शत्रु राशि) एकादश भाव में हैं, राशि पर 22 बिंदु हैं, स्थित ग्रह कोई नहीं। इस स्वामी की दशा घर और भावनात्मक नींव पर ध्यान देने का पारंपरिक समय है, वादा नहीं।

क्योंकि चतुर्थ भाव के स्वामी एकादश भाव में हैं, घर और माता समय में उस दूसरे भाव से जुड़ता है। वृश्चिक पर 22 बिंदु सहयोग या प्रयास का संकेत देते हैं। यहाँ कोई वादा नहीं है।

## ❖ पंचम भाव: संतान और बुद्धि · धनु

5

**पंचम भाव: संतान और बुद्धि · धनु**

धनु

चंद्र

**स्वामी: गुरु**

तृतीय भाव में स्थित

सर्वाष्टकवर्ग 26

| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | 5 | | | | | | | |

पंचम भाव: संतान और बुद्धि · धनु

आपका पंचम भाव धनु राशि में पड़ता है; इसके विषयों के प्रति दृष्टिकोण, धनु के आशावाद के साथ: सिद्धांतवादी, दार्शनिक, खरा और स्वतंत्रता-प्रेमी (मुख्य विषय: आस्था, शिक्षा, यात्रा)।

इसका स्वामी गुरु तृतीय भाव में है, उपचय भाव, जहाँ फल समय के साथ लगातार सुधरते हैं, तुला राशि (शत्रु राशि) में, जो संतान और बुद्धि को पराक्रम और भाई-बहन से जोड़ता है। भावेश अपने भाव से ग्यारहवें स्थान पर है, जो परंपरा में इन विषयों में लाभ का सहायक है।

पंचम भाव में ग्रह: चंद्र। चंद्र (सम राशि) संतान और बुद्धि में आपके मन का प्रभाव लाता है।

पंचम भाव पर मंगल (एकादश भाव से) और केतु (नवम भाव से) की दृष्टि है। दबाव या प्रेरणा मंगल और केतु से आती है।

26 बिंदुओं के साथ (लगभग औसत 28) यह भाव सामान्य, संतुलित फल देता है। चंद्र से गिनने पर यह राशि आपका प्रथम भाव है।

पंचम भाव धनु में सृजन, संतान, विद्या और कुंडली की बुद्धि के लिए पढ़ा जाता है। स्वामी गुरु (शत्रु राशि) तृतीय भाव में हैं, 26 बिंदु और स्थित ग्रह चंद्र। संबंधित दशाओं में इस भाव को अध्ययन और अभिव्यक्ति का क्षेत्र मानें, विशिष्ट घटनाओं का पूर्वानुमान नहीं।

पंचम भाव (संतान और बुद्धि) का व्यावहारिक पाठ यह है कि जब इसका स्वामी, जो तृतीय भाव में है, दशा चलाए, तब इस भाव को देखें। धनु पर 26 बिंदु हैं।

## ❖ षष्ठ भाव: सेवा और बाधाएँ · मकर

6

**षष्ठ भाव: सेवा और बाधाएँ · मकर**

मकर

–

**स्वामी: शनि**

सप्तम भाव में स्थित

सर्वाष्टकवर्ग 29

| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | | 6 | | | | | | |

षष्ठ भाव: सेवा और बाधाएँ · मकर

आपका षष्ठ भाव मकर राशि में पड़ता है; इसके विषयों के प्रति दृष्टिकोण, मकर की महत्वाकांक्षा के साथ: अनुशासित, व्यावहारिक, सतर्क और दूरदर्शी (मुख्य विषय: कर्तव्य, ढाँचा, प्रतिष्ठा)। षष्ठ भाव स्वास्थ्य की दिनचर्या, सेवा, प्रतियोगिता, ऋण, विवाद और बाधाओं पर विजय से जुड़ा है।

इसका स्वामी शनि सप्तम भाव में है, केंद्र, कुंडली का स्तंभ जहाँ ग्रह स्पष्ट रूप से कार्य करते हैं, कुंभ राशि (स्वराशि) में, जो सेवा और बाधाएँ को विवाह और साझेदार से जोड़ता है। भावेश अपने भाव से दूसरे स्थान पर है, जो परंपरा में इन विषयों की वृद्धि और पोषण का संकेत है। भावेश वक्री है, इसलिए इन विषयों पर समय-समय पर लौटना और उन्हें नए सिरे से गढ़ना होता है।

षष्ठ भाव रिक्त है, जो सामान्य बात है; इसके फल मुख्यतः भावेश शनि से आते हैं।

षष्ठ भाव पर मंगल (एकादश भाव से) की दृष्टि है। दबाव या प्रेरणा मंगल से आती है।

चंद्र से गिनने पर यह राशि आपका द्वितीय भाव है।

षष्ठ भाव मकर में कार्य, ऋण, स्पर्धा और स्वास्थ्य-दिनचर्या का भाव है। स्वामी शनि (स्वराशि) सप्तम भाव में, 29 बिंदु, स्थित ग्रह कोई नहीं। सामान्य सलाह है कि जब यह भाव सक्रिय हो, आदतें और विवाद संभालें, इसे निश्चित कठिनाई न मानें।

क्योंकि षष्ठ भाव के स्वामी सप्तम भाव में हैं, सेवा और बाधाएँ समय में उस दूसरे भाव से जुड़ता है। मकर पर 29 बिंदु सहयोग या प्रयास का संकेत देते हैं। यहाँ कोई वादा नहीं है।

## ❖ सप्तम भाव: विवाह और साझेदार · कुंभ

7

**सप्तम भाव: विवाह और साझेदार · कुंभ**

कुंभ

शनि

**स्वामी: शनि**

सप्तम भाव में स्थित

सर्वाष्टकवर्ग 25

| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|

**सप्तम भाव: विवाह और साझेदार · कुंभ**

आपका सप्तम भाव कुंभ राशि में पड़ता है; इसके विषयों के प्रति दृष्टिकोण, कुंभ की स्वतंत्रता के साथ: आदर्शवादी, अपरंपरागत, मानवतावादी और तटस्थ (मुख्य विषय: नेटवर्क, आदर्श, नवाचार)।

इसका स्वामी शनि इसी भाव में है, केंद्र, कुंडली का स्तंभ जहाँ ग्रह स्पष्ट रूप से कार्य करते हैं, कुंभ राशि (स्वराशि) में।

सप्तम भाव में ग्रह: शनि। शनि (स्वराशि) विवाह और साझेदार में आपके अनुशासन का प्रभाव लाता है।

सप्तम भाव पर सूर्य (प्रथम भाव से), बुध (प्रथम भाव से), गुरु (तृतीय भाव से) और राहु (तृतीय भाव से) की दृष्टि है। शुभ सहयोग बुध और गुरु से मिलता है। दबाव या प्रेरणा सूर्य और राहु से आती है।

इसका नैसर्गिक कारक शुक्र आपके द्वितीय भाव (नीच) में है। 25 बिंदुओं के साथ (लगभग औसत 28) यह भाव सामान्य, संतुलित फल देता है। चंद्र से गिनने पर यह राशि आपका तृतीय भाव है।

सप्तम भाव कुंभ में साझेदारी, समझौते और सार्वजनिक "अन्य" का भाव है। स्वामी शनि (स्वराशि) सप्तम भाव में हैं, राशि पर 25 बिंदु हैं, स्थित ग्रह शनि। इस स्वामी की दशा समझौतों और निकट संबंधों की समीक्षा का उपयोगी समय है, विवाह या विच्छेद की गारंटी वाली तिथि नहीं।

सप्तम भाव को विवाह और साझेदार के मानचित्र की तरह पढ़ें: राशि कुंभ, स्वामी शनि सप्तम भाव में, 25 बिंदु। यह मानचित्र संबंधित दशाओं में चिंतन के लिए है, परिणाम बाँधने के लिए नहीं।

## ❖ अष्टम भाव: रूपांतरण और विरासत · मीन

8

**अष्टम भाव: रूपांतरण और विरासत · मीन**

मीन

–

**स्वामी: गुरु**

तृतीय भाव में स्थित

सर्वाष्टकवर्ग 25

| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|

**अष्टम भाव: रूपांतरण और विरासत · मीन**

आपका अष्टम भाव मीन राशि में पड़ता है; इसके विषयों के प्रति दृष्टिकोण, मीन की संवेदनशीलता के साथ: कल्पनाशील, करुणामय, आध्यात्मिक और भावों को सहज ग्रहण करने वाला (मुख्य विषय: समर्पण, कल्पना, मुक्ति)। अष्टम भाव आयु, अचानक घटनाओं, विरासत, संयुक्त धन, शोध और गूढ़ विद्या से जुड़ा है।

इसका स्वामी गुरु तृतीय भाव में है, उपचय भाव, जहाँ फल समय के साथ लगातार सुधरते हैं, तुला राशि (शत्रु राशि) में, जो रूपांतरण और विरासत को पराक्रम और भाई-बहन से जोड़ता है।

अष्टम भाव रिक्त है, जो सामान्य बात है; इसके फल मुख्यतः भावेश गुरु से आते हैं।

अष्टम भाव पर शुक्र (द्वितीय भाव से) की दृष्टि है। शुभ सहयोग शुक्र से मिलता है।

इसका नैसर्गिक कारक शनि आपके सप्तम भाव (स्वराशि) में है। चंद्र से गिनने पर यह राशि आपका चतुर्थ भाव है।

अष्टम भाव मीन में साझा संसाधन, शोध और जीवन के गहरे परिवर्तनों के लिए पढ़ा जाता है। स्वामी गुरु (शत्रु राशि) तृतीय भाव में हैं, 25 बिंदु और स्थित ग्रह कोई नहीं। इसकी दशाओं को सावधानीपूर्ण योजना और ईमानदार जायजे का समय मानें, संकट की भविष्यवाणी नहीं।

क्योंकि अष्टम भाव के स्वामी तृतीय भाव में हैं, रूपांतरण और विरासत समय में उस दूसरे भाव से जुड़ता है। मीन पर 25 बिंदु सहयोग या प्रयास का संकेत देते हैं। यहाँ कोई वादा नहीं है।

## ❖ नवम भाव: भाग्य और गुरु · मेष

9

**नवम भाव: भाग्य और गुरु · मेष**

**मेष**

केतु

**स्वामी: मंगल**

एकादश भाव में स्थित

सर्वाष्टकवर्ग 28

| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|

**नवम भाव: भाग्य और गुरु · मेष**

आपका नवम भाव मेष राशि में पड़ता है; इसके विषयों के प्रति दृष्टिकोण, मेष की सीधी शैली में: शीघ्र आरंभ, प्रतिस्पर्धी और स्पष्टवादिता की हद तक ईमानदार (मुख्य विषय: पहल, साहस, गति)।

इसका स्वामी मंगल एकादश भाव में है, उपचय भाव, जहाँ फल समय के साथ लगातार सुधरते हैं, मिथुन राशि (शत्रु राशि) में, जो भाग्य और गुरु को लाभ और नेटवर्क से जोड़ता है।

नवम भाव में ग्रह: केतु। केतु (छाया ग्रह) भाग्य और गुरु में आपकी विरक्ति का प्रभाव लाता है।

नवम भाव पर गुरु (तृतीय भाव से), शनि (सप्तम भाव से) और राहु (तृतीय भाव से) की दृष्टि है। शुभ सहयोग गुरु से मिलता है। दबाव या प्रेरणा शनि और राहु से आती है।

28 बिंदुओं के साथ (लगभग औसत 28) यह भाव सामान्य, संतुलित फल देता है। चंद्र से गिनने पर यह राशि आपका पंचम भाव है।

नवम भाव मेष में धर्म, उच्च अध्ययन, अर्थपूर्ण यात्रा और पिता या मार्गदर्शक का भाव है। स्वामी मंगल (शत्रु राशि) एकादश भाव में, 28 बिंदु, स्थित ग्रह केतु। परंपरा यहाँ दिशा का बोध देखती है। इस स्वामी की दशा उस दिशा को फिर देखने का समय है, वादा किया आशीर्वाद नहीं।

नवम भाव पारंपरिक रूप से भाग्य और गुरु के बारे में है। स्वामी एकादश भाव में हैं और राशि पर अष्टकवर्ग 28 है। कुंडली सहयोग और प्रयास का मिश्रण बताती है, कोई निश्चित फल नहीं। दशा अध्यायों से देखें कि यह भाव कब अधिक सक्रिय है, और उन तिथियों को चिंतन का समय मानें, गारंटी नहीं।

## ❖ दशम भाव: करियर और पद · वृषभ

10

**दशम भाव: करियर और पद · वृषभ**

वृषभ

–

स्वामी: शुक्र

द्वितीय भाव में स्थित

सर्वाष्टकवर्ग 35

| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|

**दशम भाव: करियर और पद · वृषभ**

आपका दशम भाव वृषभ राशि में पड़ता है; इसके विषयों के प्रति दृष्टिकोण, वृषभ की स्थिरता के साथ: धैर्यवान, सौंदर्य-प्रेमी, निष्ठावान और जल्दबाज़ी से दूर (मुख्य विषय: स्थिरता, सुख, मूल्य)। दशम भाव करियर, पद, अधिकार, सार्वजनिक प्रतिष्ठा और संसार में कर्म से जुड़ा है।

इसका स्वामी शुक्र द्वितीय भाव में है, द्वितीय भाव, संसाधन और वाणी का भाव, कन्या राशि (नीच) में, जो करियर और पद को धन और परिवार से जोड़ता है।

दशम भाव रिक्त है, जो सामान्य बात है; इसके फल मुख्यतः भावेश शुक्र से आते हैं।

इसका नैसर्गिक कारक बुध आपके प्रथम भाव (मित्र राशि) में है। 35 बिंदुओं के साथ (औसत 28 से अधिक) यह भाव अच्छी तरह समर्थित है; इससे होकर गोचर प्रायः अच्छे फल देते हैं। चंद्र से गिनने पर यह राशि आपका षष्ठ भाव है।

दशम भाव वृषभ में लोक में कार्य, स्थिति और सार्वजनिक दायित्व का भाव है। स्वामी शुक्र (नीच) द्वितीय भाव में हैं, राशि पर 35 बिंदु हैं, स्थित ग्रह कोई नहीं। इस स्वामी की दशा को करियर दिशा और प्रतिष्ठा की समीक्षा के लिए उपयोग करें, किसी तिथि को पदोन्नति या झटके की गारंटी न मानें।

दशम भाव वृषभ में, स्वामी शुक्र द्वितीय भाव में, करियर और पद का कार्य-चित्र हैं।

## ❖ एकादश भाव: लाभ और नेटवर्क · मिथुन

11

**एकादश भाव: लाभ और नेटवर्क · मिथुन**

मिथुन

मंगल

स्वामी: बुध

प्रथम भाव में स्थित

सर्वाष्टकवर्ग 36

| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|

**एकादश भाव: लाभ और नेटवर्क · मिथुन**

आपका एकादश भाव मिथुन राशि में पड़ता है; इसके विषयों के प्रति दृष्टिकोण, मिथुन की जिज्ञासा के साथ: बातूनी, लचीला, चंचल और बहुमुखी (मुख्य विषय: संवाद, अध्ययन, व्यापार)।

इसका स्वामी बुध प्रथम भाव में है, केंद्र, कुंडली का स्तंभ जहाँ ग्रह स्पष्ट रूप से कार्य करते हैं, सिंह राशि (मित्र राशि) में, जो लाभ और नेटवर्क को स्वयं और स्वास्थ्य से जोड़ता है।

एकादश भाव में ग्रह: मंगल। मंगल (शत्रु राशि) लाभ और नेटवर्क में आपकी प्रेरणा का प्रभाव लाता है।

एकादश भाव पर चंद्र (पंचम भाव से), गुरु (तृतीय भाव से) और राहु (तृतीय भाव से) की दृष्टि है। शुभ सहयोग चंद्र और गुरु से मिलता है। दबाव या प्रेरणा राहु से आती है।

36 बिंदुओं के साथ (औसत 28 से अधिक) यह भाव अच्छी तरह समर्थित है; इससे होकर गोचर प्रायः अच्छे फल देते हैं। चंद्र से गिनने पर यह राशि आपका सप्तम भाव है।

एकादश भाव मिथुन में लाभ, सहयोगी और लंबे लक्ष्यों के लिए पढ़ा जाता है। स्वामी बुध (मित्र राशि) प्रथम भाव में हैं, 36 बिंदु और स्थित ग्रह मंगल। इस स्वामी की दशा मित्रता और लक्ष्यों का जायजा लेने का पारंपरिक समय है, किसी विशेष लाभ का पूर्वानुमान नहीं।

एकादश भाव को लाभ और नेटवर्क के मानचित्र की तरह पढ़ें: राशि मिथुन, स्वामी बुध प्रथम भाव में, 36 बिंदु।

### ❖ द्वादश भाव: व्यय और मोक्ष · कर्क

12

**द्वादश भाव: व्यय और मोक्ष · कर्क**
कर्क
–

**स्वामी: चंद्र**
पंचम भाव में स्थित

सर्वाष्टकवर्ग 26

| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | | | | | | | | ● |

द्वादश भाव: व्यय और मोक्ष · कर्क

आपका द्वादश भाव कर्क राशि में पड़ता है; इसके विषयों के प्रति दृष्टिकोण, कर्क की भावुकता के साथ: रक्षक, अंतर्ज्ञानी, घर और स्मृतियों से जुड़ा (मुख्य विषय: देखभाल, जड़ें, भावना)। द्वादश भाव व्यय, निद्रा, विदेश, एकांत, दान और आध्यात्मिक मोक्ष से जुड़ा है।

इसका स्वामी चंद्र पंचम भाव में है, त्रिकोण, कृपा और पुण्य का भाव, धनु राशि (सम राशि) में, जो व्यय और मोक्ष को संतान और बुद्धि से जोड़ता है। भावेश अपने भाव से छठे स्थान पर है, इसलिए इन विषयों में प्रतियोगिता या समस्या-समाधान जुड़ा रहता है।

द्वादश भाव रिक्त है, जो सामान्य बात है; इसके फल मुख्यतः भावेश चंद्र से आते हैं।

चंद्र से गिनने पर यह राशि आपका अष्टम भाव है।

द्वादश भाव कर्क में एकांत, विदेश, निद्रा और छोड़ने का भाव है। स्वामी चंद्र (सम राशि) पंचम भाव में, 26 बिंदु, स्थित ग्रह कोई नहीं। सामान्य सलाह है कि जब यह भाव सक्रिय हो, विश्राम, व्यय और एकांत पर ध्यान दें, इसे निश्चित हानि न मानें।

द्वादश भाव पारंपरिक रूप से व्यय और मोक्ष के बारे में है। स्वामी पंचम भाव में हैं और राशि पर अष्टकवर्ग 26 है।

## विभाजन कुंडलियाँ (षोडशवर्ग)

# विभाजन कुंडलियाँ (षोडशवर्ग)

> यह आपके लिए क्यों मायने रखता है: यहाँ मापी गई शक्तियाँ और कमज़ोरियाँ बताती हैं कि जीवन के कुछ क्षेत्र सहज और कुछ प्रयास वाले क्यों लगते हैं।

विभाजन कुंडलियाँ (वर्ग) हर राशि को समान भागों में बाँटकर जीवन के किसी एक क्षेत्र को विस्तार से दिखाती हैं। नीचे की सोलह कुंडलियाँ पाराशरी पद्धति पर हैं। D9 और इस रिपोर्ट के विषय की कुंडली का विस्तृत फल दिया गया है; शेष संदर्भ और बल-गणना के लिए हैं।

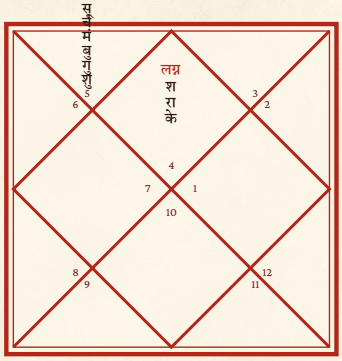


D2 · होरा

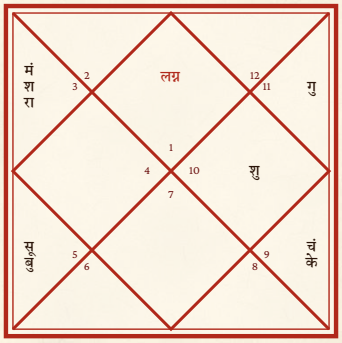


D3 · द्रेष्काण

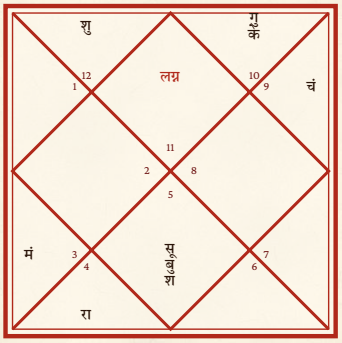


D4 · चतुर्थांश

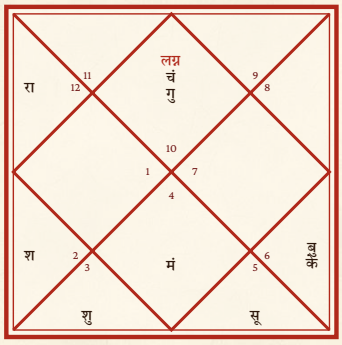


D7 · सप्तांश

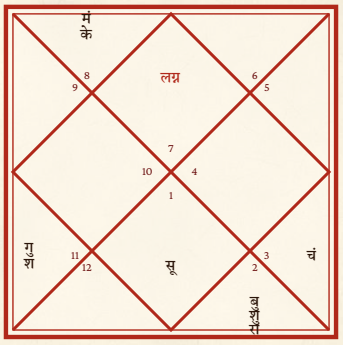


D9 · नवांश

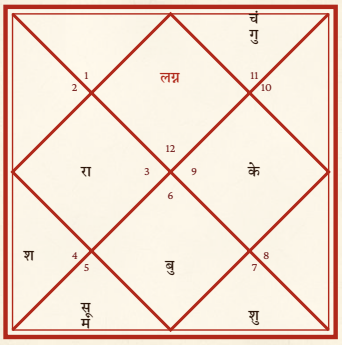


D10 · दशमांश

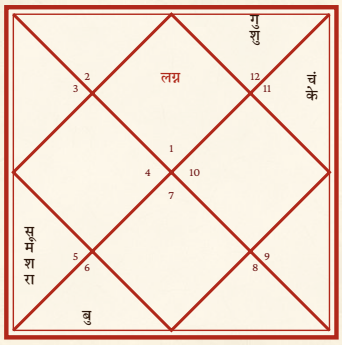


D12 · द्वादशांश

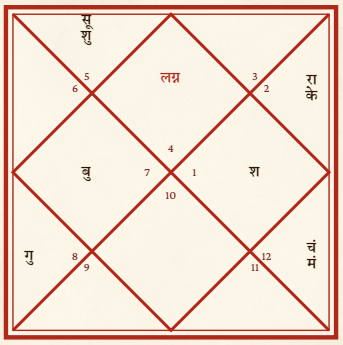


D16 · षोडशांश

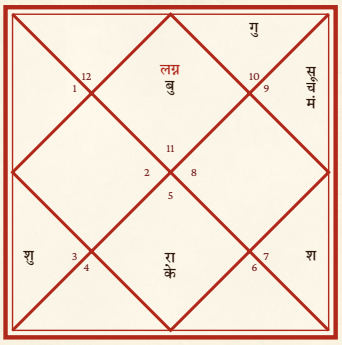


D20 · विंशांश

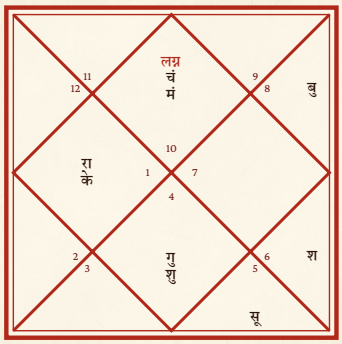


D24 · चतुर्विंशांश

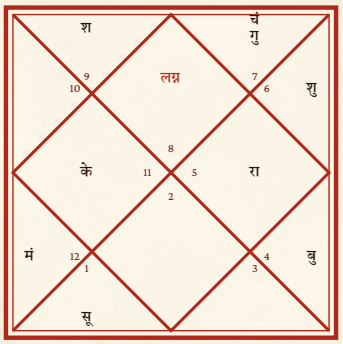


D27 · भांश

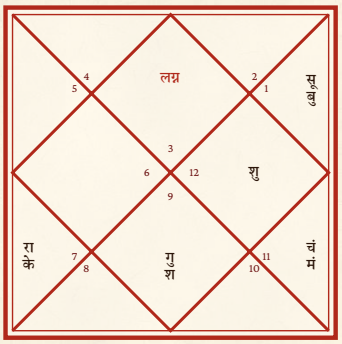


D30 · त्रिंशांश

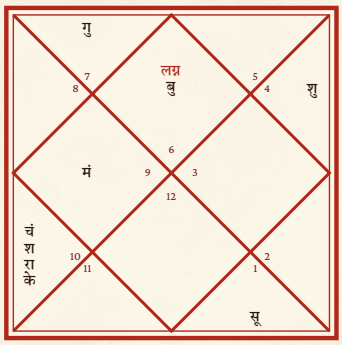


D40 · खवेदांश

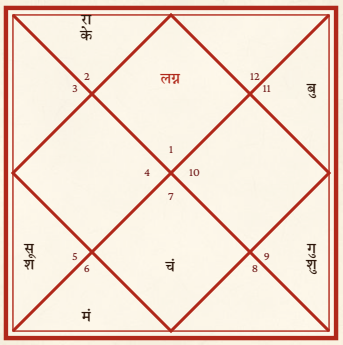


D45 · अक्षवेदांश

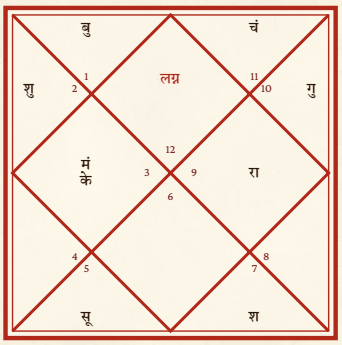


D60 · षष्ट्यंश

## ❖ सोलह वर्गों में ग्रहों की राशियाँ

| ग्रह | D1 | D2 | D3 | D4 | D7 | D9 | D10 | D12 | D16 | D20 | D24 | D27 | D30 | D40 | D45 | D60 |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| लग्न | सिंह | कर्क | मेष | कुंभ | मकर | तुला | मीन | मेष | कर्क | कुंभ | मकर | वृश्चिक | मिथुन | कन्या | मेष | मीन |
| सूर्य | सिंह | सिंह | सिंह | सिंह | सिंह | मेष | सिंह | सिंह | सिंह | धनु | सिंह | मेष | मेष | मेष | सिंह | सिंह |
| चंद्र | धनु | सिंह | धनु | धनु | मकर | मिथुन | कुंभ | कुंभ | मीन | धनु | मकर | तुला | कुंभ | मकर | तुला | कुंभ |

| ग्रह | D1 | D2 | D3 | D4 | D7 | D9 | D10 | D12 | D16 | D20 | D24 | D27 | D30 | D40 | D45 | D60 |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मंगल | मिथुन | सिंह | मिथुन | मिथुन | कर्क | वृश्चिक | सिंह | सिंह | मीन | धनु | मकर | मीन | कुंभ | धनु | कन्या | मिथुन |
| बुध | सिंह | सिंह | सिंह | सिंह | कन्या | वृषभ | कन्या | कन्या | तुला | कुंभ | वृश्चिक | कर्क | मेष | कन्या | कुंभ | मेष |
| गुरु | तुला | सिंह | कुंभ | मकर | मकर | कुंभ | कुंभ | मीन | वृश्चिक | मकर | कर्क | तुला | धनु | तुला | धनु | मकर |
| शुक्र | कन्या | सिंह | मकर | मीन | मिथुन | वृषभ | तुला | मीन | सिंह | मिथुन | कर्क | कन्या | मीन | कर्क | धनु | वृषभ |
| शनि | कुंभ | कर्क | मिथुन | सिंह | वृषभ | कुंभ | कर्क | सिंह | मेष | तुला | कन्या | धनु | धनु | मकर | सिंह | तुला |
| राहु | तुला | कर्क | मिथुन | कर्क | मीन | वृषभ | मिथुन | सिंह | वृषभ | सिंह | मेष | सिंह | तुला | मकर | वृषभ | धनु |
| केतु | मेष | कर्क | धनु | मकर | कन्या | वृश्चिक | धनु | कुंभ | वृषभ | सिंह | मेष | कुंभ | तुला | मकर | वृषभ | मिथुन |

## ❖ विंशोपक बल

विंशोपक सोलह वर्गों में ग्रह की गरिमा को 20-अंकीय पैमाने पर आँकता है, जिसमें D1, D9 और D60 का भार सबसे अधिक है। 15 से ऊपर बलवान; 10 से नीचे प्रयास की आवश्यकता।

| ग्रह | विंशोपक (20 में से) | श्रेणी | वर्गोत्तम |
|---|---|---|---|
| सूर्य | 19.9 | बलवान | नहीं |
| चंद्र | 11.0 | मध्यम | नहीं |
| मंगल | 11.6 | मध्यम | नहीं |
| बुध | 13.7 | मध्यम | नहीं |
| गुरु | 9.9 | तुलनात्मक रूप से निर्बल | नहीं |
| शुक्र | 13.7 | मध्यम | नहीं |
| शनि | 15.3 | बलवान | हाँ |

वर्गोत्तम ग्रह (D1 और D9 में एक ही राशि) अतिरिक्त स्थिरता से कार्य करते हैं: शनि।

## ❖ D1 (राशि) का फल: शरीर और संपूर्ण जीवन

D1 का लग्न सिंह है; इसका स्वामी सूर्य इस कुंडली के प्रथम भाव में सिंह राशि (स्वराशि) में है। D1 में, जिसे परंपरा शरीर और संपूर्ण जीवन के लिए पढ़ती है, दसवीं राशि के स्वामी शुक्र हैं, द्वितीय भाव में कन्या में (नीच)। यह स्थिति इस वर्ग-कुंडली के विषय को सहारा या तनाव कैसे देती है, इसका पहला संकेत मानी जाती है। D1 में बलवान (उच्च या स्वराशि): सूर्य और शनि, जो शरीर और संपूर्ण जीवन में सहायक है। D1 में नीच: शुक्र; यहाँ इन विषयों में धैर्य चाहिए। D1 के केंद्रों में स्थित ग्रह इस क्षेत्र में सबसे प्रत्यक्ष रूप से कार्य करते हैं: सूर्य, बुध और शनि।

| ग्रह | राशि | भाव | बल |
|---|---|---|---|
| सूर्य | सिंह | प्रथम भाव | स्वराशि |
| चंद्र | धनु | पंचम भाव | सम राशि |
| मंगल | मिथुन | एकादश भाव | शत्रु राशि |
| बुध | सिंह | प्रथम भाव | मित्र राशि |
| गुरु | तुला | तृतीय भाव | शत्रु राशि |
| शुक्र | कन्या | द्वितीय भाव | नीच |
| शनि | कुंभ | सप्तम भाव | स्वराशि |
| राहु | तुला | तृतीय भाव | छाया ग्रह |
| केतु | मेष | नवम भाव | छाया ग्रह |

D1 में चंद्र (आपके मन) धनु में पंचम भाव में हैं, जो इस वर्ग का त्रिकोण है, गरिमा सम राशि। त्रिकोणीय स्थिति को अक्सर शरीर और संपूर्ण जीवन के लिए शांत सहयोग की तरह पढ़ा जाता है।

D1 में बुध (आपकी सोच) सिंह में प्रथम भाव में हैं, जो इस वर्ग का केन्द्र है, गरिमा मित्र राशि। यहाँ कोणीय स्थिति अक्सर शरीर और संपूर्ण जीवन के क्षेत्र में स्वयं और स्वास्थ्य को दृश्य बनाती है। यह पारंपरिक पाठ है, वादा नहीं।

D1 में शनि (आपके अनुशासन) कुंभ में सप्तम भाव में हैं, जो इस वर्ग का केन्द्र है, गरिमा स्वराशि। यहाँ कोणीय स्थिति अक्सर शरीर और संपूर्ण जीवन के क्षेत्र में विवाह और साझेदार को दृश्य बनाती है। यह पारंपरिक पाठ है, वादा नहीं।

D1 में केतु (आपकी विरक्ति) मेष में नवम भाव में हैं, जो इस वर्ग का त्रिकोण है, गरिमा छाया ग्रह।

ऊपर का D1 पाठ शरीर और संपूर्ण जीवन का पारंपरिक दृष्टि से वर्णन है। यह जन्म कुंडली का स्थान नहीं लेता, और घटनाओं की गारंटी नहीं देता। इसे दशा और गोचर अध्यायों के साथ पढ़ें।

## ❖ D2 (होरा) का फल: धन और संसाधन

D2 का लग्न कर्क है; इसका स्वामी चंद्र इस कुंडली के द्वितीय भाव में सिंह राशि (मित्र राशि) में है। D2 में, जिसे परंपरा धन और संसाधन के लिए पढ़ती है, दसवीं राशि के स्वामी मंगल हैं, द्वितीय भाव में सिंह में (मित्र राशि)। D2 में बलवान (उच्च या स्वराशि): सूर्य, जो धन और संसाधन में सहायक है। D2 के केंद्रों में स्थित ग्रह इस क्षेत्र में सबसे प्रत्यक्ष रूप से कार्य करते हैं: शनि, राहु और केतु।

| ग्रह | राशि | भाव | बल |
|---|---|---|---|
| सूर्य | सिंह | द्वितीय भाव | स्वराशि |
| चंद्र | सिंह | द्वितीय भाव | मित्र राशि |
| मंगल | सिंह | द्वितीय भाव | मित्र राशि |
| बुध | सिंह | द्वितीय भाव | मित्र राशि |
| गुरु | सिंह | द्वितीय भाव | मित्र राशि |
| शुक्र | सिंह | द्वितीय भाव | शत्रु राशि |
| शनि | कर्क | प्रथम भाव | शत्रु राशि |
| राहु | कर्क | प्रथम भाव | छाया ग्रह |
| केतु | कर्क | प्रथम भाव | छाया ग्रह |

D2 में सूर्य (आपकी मूल पहचान) सिंह में द्वितीय भाव में हैं, गरिमा स्वराशि। इस वर्ग में द्वितीय भाव पारंपरिक रूप से धन और परिवार से जुड़ा है; इसे धन और संसाधन के आसपास दबाव या मुक्ति के बिंदु की तरह पढ़ें, निर्णय की तरह नहीं।

D2 में शनि (आपके अनुशासन) कर्क में प्रथम भाव में हैं, जो इस वर्ग का केन्द्र है, गरिमा शत्रु राशि। यहाँ कोणीय स्थिति अक्सर धन और संसाधन के क्षेत्र में स्वयं और स्वास्थ्य को दृश्य बनाती है। यह पारंपरिक पाठ है, वादा नहीं।

D2 में राहु (आपकी सांसारिक भूख) कर्क में प्रथम भाव में हैं, जो इस वर्ग का केन्द्र है, गरिमा छाया ग्रह। यह पारंपरिक पाठ है, वादा नहीं।

D2 में केतु (आपकी विरक्ति) कर्क में प्रथम भाव में हैं, जो इस वर्ग का केन्द्र है, गरिमा छाया ग्रह। यह पारंपरिक पाठ है, वादा नहीं।

ऊपर का D2 पाठ धन और संसाधन का पारंपरिक दृष्टि से वर्णन है। इसे दशा और गोचर अध्यायों के साथ पढ़ें।

## ❖ D3 (द्रेष्काण) का फल: भाई-बहन, साहस और पहल

D3 का लग्न मेष है; इसका स्वामी मंगल इस कुंडली के तृतीय भाव में मिथुन राशि (शत्रु राशि) में है। D3 में, जिसे परंपरा भाई-बहन, साहस और पहल के लिए पढ़ती है, दसवीं राशि के स्वामी शनि हैं, तृतीय भाव में मिथुन में (मित्र राशि)। D3 में बलवान (उच्च या स्वराशि): सूर्य, जो भाई-बहन, साहस और पहल में सहायक है। D3 के केंद्रों में स्थित ग्रह इस क्षेत्र में सबसे प्रत्यक्ष रूप से कार्य करते हैं: शुक्र।

| ग्रह | राशि | भाव | बल |
|---|---|---|---|
| सूर्य | सिंह | पंचम भाव | स्वराशि |
| चंद्र | धनु | नवम भाव | सम राशि |

| ग्रह | राशि | भाव | बल |
|---|---|---|---|
| मंगल | मिथुन | तृतीय भाव | शत्रु राशि |
| बुध | सिंह | पंचम भाव | मित्र राशि |
| गुरु | कुंभ | एकादश भाव | सम राशि |
| शुक्र | मकर | दशम भाव | मित्र राशि |
| शनि | मिथुन | तृतीय भाव | मित्र राशि |
| राहु | मिथुन | तृतीय भाव | छाया ग्रह |
| केतु | धनु | नवम भाव | छाया ग्रह |

D3 में सूर्य (आपकी मूल पहचान) सिंह में पंचम भाव में हैं, जो इस वर्ग का त्रिकोण है, गरिमा स्वराशि। त्रिकोणीय स्थिति को अक्सर भाई-बहन, साहस और पहल के लिए शांत सहयोग की तरह पढ़ा जाता है।

D3 में चंद्र (आपके मन) धनु में नवम भाव में हैं, जो इस वर्ग का त्रिकोण है, गरिमा सम राशि।

D3 में बुध (आपकी सोच) सिंह में पंचम भाव में हैं, जो इस वर्ग का त्रिकोण है, गरिमा मित्र राशि।

D3 में शुक्र (आपके स्नेह) मकर में दशम भाव में हैं, जो इस वर्ग का केन्द्र है, गरिमा मित्र राशि। यहाँ कोणीय स्थिति अक्सर भाई-बहन, साहस और पहल के क्षेत्र में करियर और पद को दृश्य बनाती है। यह पारंपरिक पाठ है, वादा नहीं।

ऊपर का D3 पाठ भाई-बहन, साहस और पहल का पारंपरिक दृष्टि से वर्णन है। इसे दशा और गोचर अध्यायों के साथ पढ़ें।

## ❖ D4 (चतुर्थांश) का फल: संपत्ति, घर और अचल संपदा

D4 का लग्न कुंभ है; इसका स्वामी शनि इस कुंडली के सप्तम भाव में सिंह राशि (शत्रु राशि) में है। D4 में, जिसे परंपरा संपत्ति, घर और अचल संपदा के लिए पढ़ती है, दसवीं राशि के स्वामी मंगल हैं, पंचम भाव में मिथुन में (शत्रु राशि)। D4 में बलवान (उच्च या स्वराशि): सूर्य और शुक्र, जो संपत्ति, घर और अचल संपदा में सहायक है। D4 में नीच: गुरु; यहाँ इन विषयों में धैर्य चाहिए। D4 के केंद्रों में स्थित ग्रह इस क्षेत्र में सबसे प्रत्यक्ष रूप से कार्य करते हैं: सूर्य, बुध और शनि।

| ग्रह | राशि | भाव | बल |
|---|---|---|---|
| सूर्य | सिंह | सप्तम भाव | स्वराशि |
| चंद्र | धनु | एकादश भाव | सम राशि |
| मंगल | मिथुन | पंचम भाव | शत्रु राशि |
| बुध | सिंह | सप्तम भाव | मित्र राशि |
| गुरु | मकर | द्वादश भाव | नीच |
| शुक्र | मीन | द्वितीय भाव | उच्च |
| शनि | सिंह | सप्तम भाव | शत्रु राशि |
| राहु | कर्क | षष्ठ भाव | छाया ग्रह |
| केतु | मकर | द्वादश भाव | छाया ग्रह |

D4 में सूर्य (आपकी मूल पहचान) सिंह में सप्तम भाव में हैं, जो इस वर्ग का केन्द्र है, गरिमा स्वराशि। यहाँ कोणीय स्थिति अक्सर संपत्ति, घर और अचल संपदा के क्षेत्र में विवाह और साझेदार को दृश्य बनाती है। यह पारंपरिक पाठ है, वादा नहीं।

D4 में बुध (आपकी सोच) सिंह में सप्तम भाव में हैं, जो इस वर्ग का केन्द्र है, गरिमा मित्र राशि। यह पारंपरिक पाठ है, वादा नहीं।

D4 में गुरु (आपके ज्ञान) मकर में द्वादश भाव में हैं, जो इस वर्ग का अधिक माँग वाला भाव है, गरिमा नीच। सामान्य सलाह है कि इस ग्रह की दशा में व्यय और मोक्ष और संपत्ति, घर और अचल संपदा पर अतिरिक्त ध्यान दें, इसे निश्चित कठिनाई न मानें।

D4 में शुक्र (आपके स्नेह) मीन में द्वितीय भाव में हैं, गरिमा उच्च। इस वर्ग में द्वितीय भाव पारंपरिक रूप से धन और परिवार से जुड़ा है; इसे संपत्ति, घर और अचल संपदा के आसपास दबाव या मुक्ति के बिंदु की तरह पढ़ें, निर्णय की तरह नहीं।

ऊपर का D4 पाठ संपत्ति, घर और अचल संपदा का पारंपरिक दृष्टि से वर्णन है। इसे दशा और गोचर अध्यायों के साथ पढ़ें।

### ❖ D7 (सप्तांश) का फल: संतान और सृजन

D7 का लग्न मकर है; इसका स्वामी शनि इस कुंडली के पंचम भाव में वृषभ राशि (मित्र राशि) में है। D7 में, जिसे परंपरा संतान और सृजन के लिए पढ़ती है, दसवीं राशि के स्वामी शुक्र हैं, षष्ठ भाव में मिथुन में (मित्र राशि)। D7 में बलवान (उच्च या स्वराशि): सूर्य और बुध, जो संतान और सृजन में सहायक है। D7 में नीच: मंगल और गुरु; यहाँ इन विषयों में धैर्य चाहिए। D7 के केंद्रों में स्थित ग्रह इस क्षेत्र में सबसे प्रत्यक्ष रूप से कार्य करते हैं: चंद्र, मंगल और गुरु।

| ग्रह | राशि | भाव | बल |
|---|---|---|---|
| सूर्य | सिंह | अष्टम भाव | स्वराशि |
| चंद्र | मकर | प्रथम भाव | सम राशि |
| मंगल | कर्क | सप्तम भाव | नीच |
| बुध | कन्या | नवम भाव | उच्च |
| गुरु | मकर | प्रथम भाव | नीच |
| शुक्र | मिथुन | षष्ठ भाव | मित्र राशि |
| शनि | वृषभ | पंचम भाव | मित्र राशि |
| राहु | मीन | तृतीय भाव | छाया ग्रह |
| केतु | कन्या | नवम भाव | छाया ग्रह |

D7 में सूर्य (आपकी मूल पहचान) सिंह में अष्टम भाव में हैं, जो इस वर्ग का अधिक माँग वाला भाव है, गरिमा स्वराशि। सामान्य सलाह है कि इस ग्रह की दशा में रूपांतरण और विरासत और संतान और सृजन पर अतिरिक्त ध्यान दें, इसे निश्चित कठिनाई न मानें।

D7 में चंद्र (आपके मन) मकर में प्रथम भाव में हैं, जो इस वर्ग का केन्द्र है, गरिमा सम राशि। यहाँ कोणीय स्थिति अक्सर संतान और सृजन के क्षेत्र में स्वयं और स्वास्थ्य को दृश्य बनाती है। यह पारंपरिक पाठ है, वादा नहीं।

D7 में मंगल (आपकी प्रेरणा) कर्क में सप्तम भाव में हैं, जो इस वर्ग का केन्द्र है, गरिमा नीच। यहाँ कोणीय स्थिति अक्सर संतान और सृजन के क्षेत्र में विवाह और साझेदार को दृश्य बनाती है। यह पारंपरिक पाठ है, वादा नहीं।

D7 में बुध (आपकी सोच) कन्या में नवम भाव में हैं, जो इस वर्ग का त्रिकोण है, गरिमा उच्च। त्रिकोणीय स्थिति को अक्सर संतान और सृजन के लिए शांत सहयोग की तरह पढ़ा जाता है।

ऊपर का D7 पाठ संतान और सृजन का पारंपरिक दृष्टि से वर्णन है। इसे दशा और गोचर अध्यायों के साथ पढ़ें।

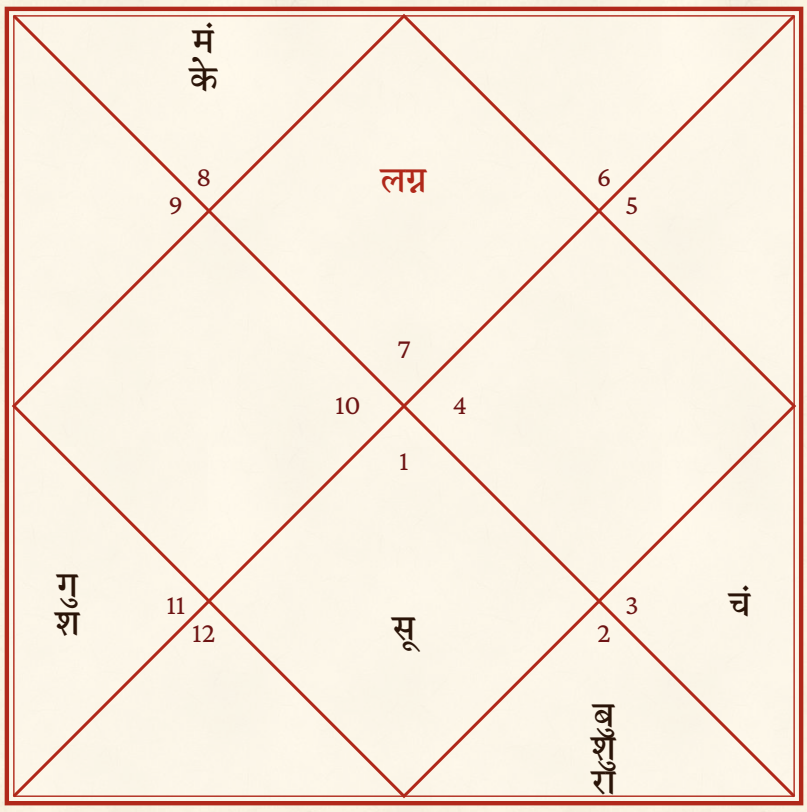


D9 · नवांश: उत्तरी शैली




D9 · नवांश: दक्षिणी शैली

## ❖ D9 (नवांश) का फल: विवाह, धर्म और हर ग्रह का आंतरिक बल

D9 का लग्न तुला है; इसका स्वामी शुक्र इस कुंडली के अष्टम भाव में वृषभ राशि (स्वराशि) में है। D9 में, जिसे परंपरा विवाह, धर्म और हर ग्रह का आंतरिक बल के लिए पढ़ती है, दसवीं राशि के स्वामी चंद्र हैं, नवम भाव में मिथुन में (मित्र राशि)। D9 में बलवान (उच्च या स्वराशि): सूर्य, मंगल, शुक्र और शनि, जो विवाह, धर्म और हर ग्रह का आंतरिक बल में सहायक है। D9 के केंद्रों में स्थित ग्रह इस क्षेत्र में सबसे प्रत्यक्ष रूप से कार्य करते हैं: सूर्य।

| ग्रह | राशि | भाव | बल |
|---|---|---|---|
| सूर्य | मेष | सप्तम भाव | उच्च |

| ग्रह | राशि | भाव | बल |
|---|---|---|---|
| चंद्र | मिथुन | नवम भाव | मित्र राशि |
| मंगल | वृश्चिक | द्वितीय भाव | स्वराशि |
| बुध | वृषभ | अष्टम भाव | मित्र राशि |
| गुरु | कुंभ | पंचम भाव | सम राशि |
| शुक्र | वृषभ | अष्टम भाव | स्वराशि |
| शनि | कुंभ | पंचम भाव | स्वराशि |
| राहु | वृषभ | अष्टम भाव | छाया ग्रह |
| केतु | वृश्चिक | द्वितीय भाव | छाया ग्रह |

D9 में सूर्य (आपकी मूल पहचान) मेष में सप्तम भाव में हैं, जो इस वर्ग का केन्द्र है, गरिमा उच्च। यहाँ कोणीय स्थिति अक्सर विवाह, धर्म और हर ग्रह का आंतरिक बल के क्षेत्र में विवाह और साझेदार को दृश्य बनाती है। यह पारंपरिक पाठ है, वादा नहीं।

D9 में मंगल (आपकी प्रेरणा) वृश्चिक में द्वितीय भाव में हैं, गरिमा स्वराशि। इस वर्ग में द्वितीय भाव पारंपरिक रूप से धन और परिवार से जुड़ा है; इसे विवाह, धर्म और हर ग्रह का आंतरिक बल के आसपास दबाव या मुक्ति के बिंदु की तरह पढ़ें, निर्णय की तरह नहीं।

D9 में गुरु (आपके ज्ञान) कुंभ में पंचम भाव में हैं, जो इस वर्ग का त्रिकोण है, गरिमा सम राशि। त्रिकोणीय स्थिति को अक्सर विवाह, धर्म और हर ग्रह का आंतरिक बल के लिए शांत सहयोग की तरह पढ़ा जाता है।

D9 में शनि (आपके अनुशासन) कुंभ में पंचम भाव में हैं, जो इस वर्ग का त्रिकोण है, गरिमा स्वराशि।

ऊपर का D9 पाठ विवाह, धर्म और हर ग्रह का आंतरिक बल का पारंपरिक दृष्टि से वर्णन है। इसे दशा और गोचर अध्यायों के साथ पढ़ें।

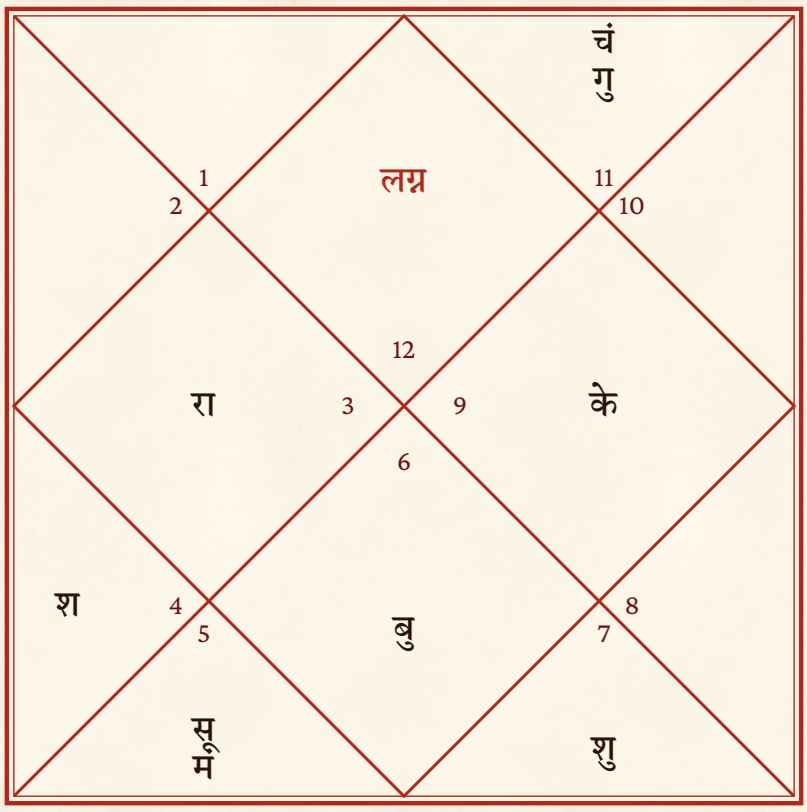


D10 · दशमांश: उत्तरी शैली




D10 · दशमांश: दक्षिणी शैली

## ❖ D10 (दशमांश) का फल: करियर और सार्वजनिक उपलब्धि

D10 का लग्न मीन है; इसका स्वामी गुरु इस कुंडली के द्वादश भाव में कुंभ राशि (सम राशि) में है। D10 में, जिसे परंपरा करियर और सार्वजनिक उपलब्धि के लिए पढ़ती है, दसवीं राशि के स्वामी गुरु हैं, द्वादश भाव में कुंभ में (सम राशि)। D10 में बलवान (उच्च या स्वराशि): सूर्य, बुध और शुक्र, जो करियर और सार्वजनिक उपलब्धि में सहायक है। D10 के केंद्रों में स्थित ग्रह इस क्षेत्र में सबसे प्रत्यक्ष रूप से कार्य करते हैं: बुध, राहु और केतु।

| ग्रह | राशि | भाव | बल |
|---|---|---|---|
| सूर्य | सिंह | षष्ठ भाव | स्वराशि |

| ग्रह | राशि | भाव | बल |
|---|---|---|---|
| चंद्र | कुंभ | द्वादश भाव | सम राशि |
| मंगल | सिंह | षष्ठ भाव | मित्र राशि |
| बुध | कन्या | सप्तम भाव | उच्च |
| गुरु | कुंभ | द्वादश भाव | सम राशि |
| शुक्र | तुला | अष्टम भाव | स्वराशि |
| शनि | कर्क | पंचम भाव | शत्रु राशि |
| राहु | मिथुन | चतुर्थ भाव | छाया ग्रह |
| केतु | धनु | दशम भाव | छाया ग्रह |

D10 में सूर्य (आपकी मूल पहचान) सिंह में षष्ठ भाव में हैं, जो इस वर्ग का अधिक माँग वाला भाव है, गरिमा स्वराशि। सामान्य सलाह है कि इस ग्रह की दशा में सेवा और बाधाएँ और करियर और सार्वजनिक उपलब्धि पर अतिरिक्त ध्यान दें, इसे निश्चित कठिनाई न मानें।

D10 में बुध (आपकी सोच) कन्या में सप्तम भाव में हैं, जो इस वर्ग का केन्द्र है, गरिमा उच्च। यहाँ कोणीय स्थिति अक्सर करियर और सार्वजनिक उपलब्धि के क्षेत्र में विवाह और साझेदार को दृश्य बनाती है। यह पारंपरिक पाठ है, वादा नहीं।

D10 में शुक्र (आपके स्नेह) तुला में अष्टम भाव में हैं, जो इस वर्ग का अधिक माँग वाला भाव है, गरिमा स्वराशि। सामान्य सलाह है कि इस ग्रह की दशा में रूपांतरण और विरासत और करियर और सार्वजनिक उपलब्धि पर अतिरिक्त ध्यान दें, इसे निश्चित कठिनाई न मानें।

D10 में शनि (आपके अनुशासन) कर्क में पंचम भाव में हैं, जो इस वर्ग का त्रिकोण है, गरिमा शत्रु राशि। त्रिकोणीय स्थिति को अक्सर करियर और सार्वजनिक उपलब्धि के लिए शांत सहयोग की तरह पढ़ा जाता है।

ऊपर का D10 पाठ करियर और सार्वजनिक उपलब्धि का पारंपरिक दृष्टि से वर्णन है। इसे दशा और गोचर अध्यायों के साथ पढ़ें।

## ❖ D12 (द्वादशांश) का फल: माता-पिता और वंश

D12 का लग्न मेष है; इसका स्वामी मंगल इस कुंडली के पंचम भाव में सिंह राशि (मित्र राशि) में है। D12 में, जिसे परंपरा माता-पिता और वंश के लिए पढ़ती है, दसवीं राशि के स्वामी शनि हैं, पंचम भाव में सिंह में (शत्रु राशि)। D12 में बलवान (उच्च या स्वराशि): सूर्य, बुध, गुरु और शुक्र, जो माता-पिता और वंश में सहायक है।

| ग्रह | राशि | भाव | बल |
|---|---|---|---|
| सूर्य | सिंह | पंचम भाव | स्वराशि |
| चंद्र | कुंभ | एकादश भाव | सम राशि |
| मंगल | सिंह | पंचम भाव | मित्र राशि |
| बुध | कन्या | षष्ठ भाव | उच्च |
| गुरु | मीन | द्वादश भाव | स्वराशि |
| शुक्र | मीन | द्वादश भाव | उच्च |
| शनि | सिंह | पंचम भाव | शत्रु राशि |
| राहु | सिंह | पंचम भाव | छाया ग्रह |
| केतु | कुंभ | एकादश भाव | छाया ग्रह |

D12 में सूर्य (आपकी मूल पहचान) सिंह में पंचम भाव में हैं, जो इस वर्ग का त्रिकोण है, गरिमा स्वराशि। त्रिकोणीय स्थिति को अक्सर माता-पिता और वंश के लिए शांत सहयोग की तरह पढ़ा जाता है।

D12 में बुध (आपकी सोच) कन्या में षष्ठ भाव में हैं, जो इस वर्ग का अधिक माँग वाला भाव है, गरिमा उच्च। सामान्य सलाह है कि इस ग्रह की दशा में सेवा और बाधाएँ और माता-पिता और वंश पर अतिरिक्त ध्यान दें, इसे निश्चित कठिनाई न मानें।

D12 में गुरु (आपके ज्ञान) मीन में द्वादश भाव में हैं, जो इस वर्ग का अधिक माँग वाला भाव है, गरिमा स्वराशि। सामान्य सलाह है कि इस ग्रह की दशा में व्यय और मोक्ष और माता-पिता और वंश पर अतिरिक्त ध्यान दें, इसे निश्चित कठिनाई न मानें।

D12 में शुक्र (आपके स्नेह) मीन में द्वादश भाव में हैं, जो इस वर्ग का अधिक माँग वाला भाव है, गरिमा उच्च।

ऊपर का D12 पाठ माता-पिता और वंश का पारंपरिक दृष्टि से वर्णन है। इसे दशा और गोचर अध्यायों के साथ पढ़ें।

## ❖ D16 (षोडशांश) का फल: वाहन, सुख-सुविधा और प्रसन्नता

D16 का लग्न कर्क है; इसका स्वामी चंद्र इस कुंडली के नवम भाव में मीन राशि (सम राशि) में है। D16 में, जिसे परंपरा वाहन, सुख-सुविधा और प्रसन्नता के लिए पढ़ती है, दसवीं राशि के स्वामी मंगल हैं, नवम भाव में मीन में (मित्र राशि)। D16 में बलवान (उच्च या स्वराशि): सूर्य, जो वाहन, सुख-सुविधा और प्रसन्नता में सहायक है। D16 में नीच: शनि; यहाँ इन विषयों में धैर्य चाहिए। D16 के केंद्रों में स्थित ग्रह इस क्षेत्र में सबसे प्रत्यक्ष रूप से कार्य करते हैं: बुध और शनि।

| ग्रह | राशि | भाव | बल |
|---|---|---|---|
| सूर्य | सिंह | द्वितीय भाव | स्वराशि |
| चंद्र | मीन | नवम भाव | सम राशि |
| मंगल | मीन | नवम भाव | मित्र राशि |
| बुध | तुला | चतुर्थ भाव | मित्र राशि |
| गुरु | वृश्चिक | पंचम भाव | मित्र राशि |
| शुक्र | सिंह | द्वितीय भाव | शत्रु राशि |
| शनि | मेष | दशम भाव | नीच |
| राहु | वृषभ | एकादश भाव | छाया ग्रह |
| केतु | वृषभ | एकादश भाव | छाया ग्रह |

D16 में सूर्य (आपकी मूल पहचान) सिंह में द्वितीय भाव में हैं, गरिमा स्वराशि। इस वर्ग में द्वितीय भाव पारंपरिक रूप से धन और परिवार से जुड़ा है; इसे वाहन, सुख-सुविधा और प्रसन्नता के आसपास दबाव या मुक्ति के बिंदु की तरह पढ़ें, निर्णय की तरह नहीं।

D16 में गुरु (आपके ज्ञान) वृश्चिक में पंचम भाव में हैं, जो इस वर्ग का त्रिकोण है, गरिमा मित्र राशि। त्रिकोणीय स्थिति को अक्सर वाहन, सुख-सुविधा और प्रसन्नता के लिए शांत सहयोग की तरह पढ़ा जाता है।

D16 में शनि (आपके अनुशासन) मेष में दशम भाव में हैं, जो इस वर्ग का केन्द्र है, गरिमा नीच। यहाँ कोणीय स्थिति अक्सर वाहन, सुख-सुविधा और प्रसन्नता के क्षेत्र में करियर और पद को दृश्य बनाती है। यह पारंपरिक पाठ है, वादा नहीं।

ऊपर का D16 पाठ वाहन, सुख-सुविधा और प्रसन्नता का पारंपरिक दृष्टि से वर्णन है। इसे दशा और गोचर अध्यायों के साथ पढ़ें।

## ❖ D20 (विंशांश) का फल: आध्यात्मिक साधना और भक्ति

D20 का लग्न कुंभ है; इसका स्वामी शनि इस कुंडली के नवम भाव में तुला राशि (उच्च) में है। D20 में, जिसे परंपरा आध्यात्मिक साधना और भक्ति के लिए पढ़ती है, दसवीं राशि के स्वामी मंगल हैं, एकादश भाव में धनु में (मित्र राशि)। D20 में बलवान (उच्च या स्वराशि): शनि, जो आध्यात्मिक साधना और भक्ति में सहायक है। D20 में नीच: गुरु; यहाँ इन विषयों में धैर्य चाहिए। D20 के केंद्रों में स्थित ग्रह इस क्षेत्र में सबसे प्रत्यक्ष रूप से कार्य करते हैं: बुध, राहु और केतु।

| ग्रह | राशि | भाव | बल |
|---|---|---|---|
| सूर्य | धनु | एकादश भाव | मित्र राशि |
| चंद्र | धनु | एकादश भाव | सम राशि |
| मंगल | धनु | एकादश भाव | मित्र राशि |
| बुध | कुंभ | प्रथम भाव | सम राशि |
| गुरु | मकर | द्वादश भाव | नीच |
| शुक्र | मिथुन | पंचम भाव | मित्र राशि |
| शनि | तुला | नवम भाव | उच्च |
| राहु | सिंह | सप्तम भाव | छाया ग्रह |

| ग्रह | राशि | भाव | बल |
|---|---|---|---|
| केतु | सिंह | सप्तम भाव | छाया ग्रह |

D20 में बुध (आपकी सोच) कुंभ में प्रथम भाव में हैं, जो इस वर्ग का केन्द्र है, गरिमा सम राशि। यहाँ कोणीय स्थिति अक्सर आध्यात्मिक साधना और भक्ति के क्षेत्र में स्वयं और स्वास्थ्य को दृश्य बनाती है। यह पारंपरिक पाठ है, वादा नहीं।

D20 में गुरु (आपके ज्ञान) मकर में द्वादश भाव में हैं, जो इस वर्ग का अधिक माँग वाला भाव है, गरिमा नीच। सामान्य सलाह है कि इस ग्रह की दशा में व्यय और मोक्ष और आध्यात्मिक साधना और भक्ति पर अतिरिक्त ध्यान दें, इसे निश्चित कठिनाई न मानें।

D20 में शुक्र (आपके स्नेह) मिथुन में पंचम भाव में हैं, जो इस वर्ग का त्रिकोण है, गरिमा मित्र राशि। त्रिकोणीय स्थिति को अक्सर आध्यात्मिक साधना और भक्ति के लिए शांत सहयोग की तरह पढ़ा जाता है।

D20 में राहु (आपकी सांसारिक भूख) सिंह में सप्तम भाव में हैं, जो इस वर्ग का केन्द्र है, गरिमा छाया ग्रह। यहाँ कोणीय स्थिति अक्सर आध्यात्मिक साधना और भक्ति के क्षेत्र में विवाह और साझेदार को दृश्य बनाती है। यह पारंपरिक पाठ है, वादा नहीं।

ऊपर का D20 पाठ आध्यात्मिक साधना और भक्ति का पारंपरिक दृष्टि से वर्णन है। इसे दशा और गोचर अध्यायों के साथ पढ़ें।

## ❖ D24 (चतुर्विंशांश) का फल: शिक्षा और विद्या

D24 का लग्न मकर है; इसका स्वामी शनि इस कुंडली के नवम भाव में कन्या राशि (मित्र राशि) में है। D24 में, जिसे परंपरा शिक्षा और विद्या के लिए पढ़ती है, दसवीं राशि के स्वामी शुक्र हैं, सप्तम भाव में कर्क में (शत्रु राशि)। D24 में बलवान (उच्च या स्वराशि): सूर्य, मंगल और गुरु, जो शिक्षा और विद्या में सहायक है। D24 के केंद्रों में स्थित ग्रह इस क्षेत्र में सबसे प्रत्यक्ष रूप से कार्य करते हैं: चंद्र, मंगल, गुरु, शुक्र, राहु और केतु।

| ग्रह | राशि | भाव | बल |
|---|---|---|---|
| सूर्य | सिंह | अष्टम भाव | स्वराशि |
| चंद्र | मकर | प्रथम भाव | सम राशि |
| मंगल | मकर | प्रथम भाव | उच्च |
| बुध | वृश्चिक | एकादश भाव | सम राशि |
| गुरु | कर्क | सप्तम भाव | उच्च |
| शुक्र | कर्क | सप्तम भाव | शत्रु राशि |
| शनि | कन्या | नवम भाव | मित्र राशि |
| राहु | मेष | चतुर्थ भाव | छाया ग्रह |
| केतु | मेष | चतुर्थ भाव | छाया ग्रह |

D24 में सूर्य (आपकी मूल पहचान) सिंह में अष्टम भाव में हैं, जो इस वर्ग का अधिक माँग वाला भाव है, गरिमा स्वराशि। सामान्य सलाह है कि इस ग्रह की दशा में रूपांतरण और विरासत और शिक्षा और विद्या पर अतिरिक्त ध्यान दें, इसे निश्चित कठिनाई न मानें।

D24 में चंद्र (आपके मन) मकर में प्रथम भाव में हैं, जो इस वर्ग का केन्द्र है, गरिमा सम राशि। यहाँ कोणीय स्थिति अक्सर शिक्षा और विद्या के क्षेत्र में स्वयं और स्वास्थ्य को दृश्य बनाती है। यह पारंपरिक पाठ है, वादा नहीं।

D24 में मंगल (आपकी प्रेरणा) मकर में प्रथम भाव में हैं, जो इस वर्ग का केन्द्र है, गरिमा उच्च। यह पारंपरिक पाठ है, वादा नहीं।

D24 में गुरु (आपके ज्ञान) कर्क में सप्तम भाव में हैं, जो इस वर्ग का केन्द्र है, गरिमा उच्च। यहाँ कोणीय स्थिति अक्सर शिक्षा और विद्या के क्षेत्र में विवाह और साझेदार को दृश्य बनाती है। यह पारंपरिक पाठ है, वादा नहीं।

ऊपर का D24 पाठ शिक्षा और विद्या का पारंपरिक दृष्टि से वर्णन है। इसे दशा और गोचर अध्यायों के साथ पढ़ें।

## ❖ D27 (भांश) का फल: शक्तियाँ और दुर्बलताएँ

D27 का लग्न वृश्चिक है; इसका स्वामी मंगल इस कुंडली के पंचम भाव में मीन राशि (मित्र राशि) में है। D27 में, जिसे परंपरा शक्तियाँ और दुर्बलताएँ के लिए पढ़ती है, दसवीं राशि के स्वामी सूर्य हैं, षष्ठ भाव में मेष में (उच्च)। D27 में बलवान (उच्च या स्वराशि): सूर्य, जो शक्तियाँ और दुर्बलताएँ में सहायक है। D27 में नीच: शुक्र; यहाँ इन विषयों में धैर्य चाहिए। D27 के केंद्रों में स्थित ग्रह इस क्षेत्र में सबसे प्रत्यक्ष रूप से कार्य करते हैं: राहु और केतु।

| ग्रह | राशि | भाव | बल |
|---|---|---|---|
| सूर्य | मेष | षष्ठ भाव | उच्च |
| चंद्र | तुला | द्वादश भाव | सम राशि |
| मंगल | मीन | पंचम भाव | मित्र राशि |
| बुध | कर्क | नवम भाव | शत्रु राशि |
| गुरु | तुला | द्वादश भाव | शत्रु राशि |
| शुक्र | कन्या | एकादश भाव | नीच |
| शनि | धनु | द्वितीय भाव | सम राशि |
| राहु | सिंह | दशम भाव | छाया ग्रह |
| केतु | कुंभ | चतुर्थ भाव | छाया ग्रह |

D27 में बुध (आपकी सोच) कर्क में नवम भाव में हैं, जो इस वर्ग का त्रिकोण है, गरिमा शत्रु राशि। त्रिकोणीय स्थिति को अक्सर शक्तियाँ और दुर्बलताएँ के लिए शांत सहयोग की तरह पढ़ा जाता है।

D27 में शुक्र (आपके स्नेह) कन्या में एकादश भाव में हैं, जो इस वर्ग का उपचय है, गरिमा नीच। ऐसी स्थितियों के बारे में अक्सर कहा जाता है कि शक्तियाँ और दुर्बलताएँ के क्षेत्र में प्रयास से ये बढ़ती हैं।

D27 में राहु (आपकी सांसारिक भूख) सिंह में दशम भाव में हैं, जो इस वर्ग का केन्द्र है, गरिमा छाया ग्रह। यहाँ कोणीय स्थिति अक्सर शक्तियाँ और दुर्बलताएँ के क्षेत्र में करियर और पद को दृश्य बनाती है। यह पारंपरिक पाठ है, वादा नहीं।

ऊपर का D27 पाठ शक्तियाँ और दुर्बलताएँ का पारंपरिक दृष्टि से वर्णन है। इसे दशा और गोचर अध्यायों के साथ पढ़ें।

## ❖ D30 (त्रिंशांश) का फल: कठिनाइयाँ और उनका सामना

D30 का लग्न मिथुन है; इसका स्वामी बुध इस कुंडली के एकादश भाव में मेष राशि (सम राशि) में है। D30 में, जिसे परंपरा कठिनाइयाँ और उनका सामना के लिए पढ़ती है, दसवीं राशि के स्वामी गुरु हैं, सप्तम भाव में धनु में (स्वराशि)। D30 में बलवान (उच्च या स्वराशि): सूर्य, गुरु और शुक्र, जो कठिनाइयाँ और उनका सामना में सहायक है। D30 के केंद्रों में स्थित ग्रह इस क्षेत्र में सबसे प्रत्यक्ष रूप से कार्य करते हैं: गुरु, शुक्र और शनि।

| ग्रह | राशि | भाव | बल |
|---|---|---|---|
| सूर्य | मेष | एकादश भाव | उच्च |
| चंद्र | कुंभ | नवम भाव | सम राशि |
| मंगल | कुंभ | नवम भाव | सम राशि |
| बुध | मेष | एकादश भाव | सम राशि |
| गुरु | धनु | सप्तम भाव | स्वराशि |
| शुक्र | मीन | दशम भाव | उच्च |
| शनि | धनु | सप्तम भाव | सम राशि |
| राहु | तुला | पंचम भाव | छाया ग्रह |
| केतु | तुला | पंचम भाव | छाया ग्रह |

D30 में सूर्य (आपकी मूल पहचान) मेष में एकादश भाव में हैं, जो इस वर्ग का उपचय है, गरिमा उच्च। ऐसी स्थितियों के बारे में अक्सर कहा जाता है कि कठिनाइयाँ और उनका सामना के क्षेत्र में प्रयास से ये बढ़ती हैं।

D30 में चंद्र (आपके मन) कुंभ में नवम भाव में हैं, जो इस वर्ग का त्रिकोण है, गरिमा सम राशि। त्रिकोणीय स्थिति को अक्सर कठिनाइयाँ और उनका सामना के लिए शांत सहयोग की तरह पढ़ा जाता है।

D30 में मंगल (आपकी प्रेरणा) कुंभ में नवम भाव में हैं, जो इस वर्ग का त्रिकोण है, गरिमा सम राशि।

D30 में शुक्र (आपके स्नेह) मीन में दशम भाव में हैं, जो इस वर्ग का केन्द्र है, गरिमा उच्च। यहाँ कोणीय स्थिति अक्सर कठिनाइयाँ और उनका सामना के क्षेत्र में करियर और पद को दृश्य बनाती है। यह पारंपरिक पाठ है, वादा नहीं।

ऊपर का D30 पाठ कठिनाइयाँ और उनका सामना का पारंपरिक दृष्टि से वर्णन है। इसे दशा और गोचर अध्यायों के साथ पढ़ें।

## ❖ D40 (खवेदांश) का फल: मातृ-पक्ष से शुभ-अशुभ प्रभाव

D40 का लग्न कन्या है; इसका स्वामी बुध इस कुंडली के प्रथम भाव में कन्या राशि (उच्च) में है। D40 में, जिसे परंपरा मातृ-पक्ष से शुभ-अशुभ प्रभाव के लिए पढ़ती है, दसवीं राशि के स्वामी बुध हैं, प्रथम भाव में कन्या में (उच्च)। D40 में बलवान (उच्च या स्वराशि): सूर्य, बुध और शनि, जो मातृ-पक्ष से शुभ-अशुभ प्रभाव में सहायक है। D40 के केंद्रों में स्थित ग्रह इस क्षेत्र में सबसे प्रत्यक्ष रूप से कार्य करते हैं: मंगल और बुध।

| ग्रह | राशि | भाव | बल |
|---|---|---|---|
| सूर्य | मेष | अष्टम भाव | उच्च |
| चंद्र | मकर | पंचम भाव | सम राशि |
| मंगल | धनु | चतुर्थ भाव | मित्र राशि |
| बुध | कन्या | प्रथम भाव | उच्च |
| गुरु | तुला | द्वितीय भाव | शत्रु राशि |
| शुक्र | कर्क | एकादश भाव | शत्रु राशि |
| शनि | मकर | पंचम भाव | स्वराशि |
| राहु | मकर | पंचम भाव | छाया ग्रह |
| केतु | मकर | पंचम भाव | छाया ग्रह |

D40 में सूर्य (आपकी मूल पहचान) मेष में अष्टम भाव में हैं, जो इस वर्ग का अधिक माँग वाला भाव है, गरिमा उच्च। सामान्य सलाह है कि इस ग्रह की दशा में रूपांतरण और विरासत और मातृ-पक्ष से शुभ-अशुभ प्रभाव पर अतिरिक्त ध्यान दें, इसे निश्चित कठिनाई न मानें।

D40 में चंद्र (आपके मन) मकर में पंचम भाव में हैं, जो इस वर्ग का त्रिकोण है, गरिमा सम राशि। त्रिकोणीय स्थिति को अक्सर मातृ-पक्ष से शुभ-अशुभ प्रभाव के लिए शांत सहयोग की तरह पढ़ा जाता है।

D40 में शनि (आपके अनुशासन) मकर में पंचम भाव में हैं, जो इस वर्ग का त्रिकोण है, गरिमा स्वराशि।

D40 में राहु (आपकी सांसारिक भूख) मकर में पंचम भाव में हैं, जो इस वर्ग का त्रिकोण है, गरिमा छाया ग्रह।

ऊपर का D40 पाठ मातृ-पक्ष से शुभ-अशुभ प्रभाव का पारंपरिक दृष्टि से वर्णन है। इसे दशा और गोचर अध्यायों के साथ पढ़ें।

## ❖ D45 (अक्षवेदांश) का फल: पितृ-पक्ष से चरित्र और आचरण

D45 का लग्न मेष है; इसका स्वामी मंगल इस कुंडली के षष्ठ भाव में कन्या राशि (शत्रु राशि) में है। D45 में, जिसे परंपरा पितृ-पक्ष से चरित्र और आचरण के लिए पढ़ती है, दसवीं राशि के स्वामी शनि हैं, पंचम भाव में सिंह में (शत्रु राशि)। D45 में बलवान (उच्च या स्वराशि): सूर्य और गुरु, जो पितृ-पक्ष से चरित्र और आचरण में सहायक है। D45 के केंद्रों में स्थित ग्रह इस क्षेत्र में सबसे प्रत्यक्ष रूप से कार्य करते हैं: चंद्र।

| ग्रह | राशि | भाव | बल |
|---|---|---|---|
| सूर्य | सिंह | पंचम भाव | स्वराशि |

| ग्रह | राशि | भाव | बल |
|---|---|---|---|
| चंद्र | तुला | सप्तम भाव | सम राशि |
| मंगल | कन्या | षष्ठ भाव | शत्रु राशि |
| बुध | कुंभ | एकादश भाव | सम राशि |
| गुरु | धनु | नवम भाव | स्वराशि |
| शुक्र | धनु | नवम भाव | सम राशि |
| शनि | सिंह | पंचम भाव | शत्रु राशि |
| राहु | वृषभ | द्वितीय भाव | छाया ग्रह |
| केतु | वृषभ | द्वितीय भाव | छाया ग्रह |

D45 में सूर्य (आपकी मूल पहचान) सिंह में पंचम भाव में हैं, जो इस वर्ग का त्रिकोण है, गरिमा स्वराशि। त्रिकोणीय स्थिति को अक्सर पितृ-पक्ष से चरित्र और आचरण के लिए शांत सहयोग की तरह पढ़ा जाता है।

D45 में चंद्र (आपके मन) तुला में सप्तम भाव में हैं, जो इस वर्ग का केन्द्र है, गरिमा सम राशि। यहाँ कोणीय स्थिति अक्सर पितृ-पक्ष से चरित्र और आचरण के क्षेत्र में विवाह और साझेदार को दृश्य बनाती है। यह पारंपरिक पाठ है, वादा नहीं।

D45 में गुरु (आपके ज्ञान) धनु में नवम भाव में हैं, जो इस वर्ग का त्रिकोण है, गरिमा स्वराशि।

D45 में शुक्र (आपके स्नेह) धनु में नवम भाव में हैं, जो इस वर्ग का त्रिकोण है, गरिमा सम राशि।

ऊपर का D45 पाठ पितृ-पक्ष से चरित्र और आचरण का पारंपरिक दृष्टि से वर्णन है। इसे दशा और गोचर अध्यायों के साथ पढ़ें।

## ❖ D60 (षष्ट्यंश) का फल: पूर्व कर्म; सबसे सूक्ष्म विभाजन, जन्म-समय के प्रति अत्यंत संवेदनशील

D60 का लग्न मीन है; इसका स्वामी गुरु इस कुंडली के एकादश भाव में मकर राशि (नीच) में है। D60 में, जिसे परंपरा पूर्व कर्म; सबसे सूक्ष्म विभाजन, जन्म-समय के प्रति अत्यंत संवेदनशील के लिए पढ़ती है, दसवीं राशि के स्वामी गुरु हैं, एकादश भाव में मकर में (नीच)। D60 में बलवान (उच्च या स्वराशि): सूर्य, शुक्र और शनि, जो पूर्व कर्म; सबसे सूक्ष्म विभाजन, जन्म-समय के प्रति अत्यंत संवेदनशील में सहायक है। D60 में नीच: गुरु; यहाँ इन विषयों में धैर्य चाहिए। D60 के केंद्रों में स्थित ग्रह इस क्षेत्र में सबसे प्रत्यक्ष रूप से कार्य करते हैं: मंगल, राहु और केतु।

| ग्रह | राशि | भाव | बल |
|---|---|---|---|
| सूर्य | सिंह | षष्ठ भाव | स्वराशि |
| चंद्र | कुंभ | द्वादश भाव | सम राशि |
| मंगल | मिथुन | चतुर्थ भाव | शत्रु राशि |
| बुध | मेष | द्वितीय भाव | सम राशि |
| गुरु | मकर | एकादश भाव | नीच |
| शुक्र | वृषभ | तृतीय भाव | स्वराशि |
| शनि | तुला | अष्टम भाव | उच्च |
| राहु | धनु | दशम भाव | छाया ग्रह |
| केतु | मिथुन | चतुर्थ भाव | छाया ग्रह |

D60 में सूर्य (आपकी मूल पहचान) सिंह में षष्ठ भाव में हैं, जो इस वर्ग का अधिक माँग वाला भाव है, गरिमा स्वराशि। सामान्य सलाह है कि इस ग्रह की दशा में सेवा और बाधाएँ और पूर्व कर्म; सबसे सूक्ष्म विभाजन, जन्म-समय के प्रति अत्यंत संवेदनशील पर अतिरिक्त ध्यान दें, इसे निश्चित कठिनाई न मानें।

D60 में शुक्र (आपके स्नेह) वृषभ में तृतीय भाव में हैं, जो इस वर्ग का उपचय है, गरिमा स्वराशि। ऐसी स्थितियों के बारे में अक्सर कहा जाता है कि पूर्व कर्म; सबसे सूक्ष्म विभाजन, जन्म-समय के प्रति अत्यंत संवेदनशील के क्षेत्र में प्रयास से ये बढ़ती हैं।

D60 में शनि (आपके अनुशासन) तुला में अष्टम भाव में हैं, जो इस वर्ग का अधिक माँग वाला भाव है, गरिमा उच्च। सामान्य सलाह है कि इस ग्रह की दशा में रूपांतरण और विरासत और पूर्व कर्म; सबसे सूक्ष्म विभाजन, जन्म-समय के प्रति अत्यंत संवेदनशील पर अतिरिक्त ध्यान दें, इसे निश्चित कठिनाई न मानें।

D60 में राहु (आपकी सांसारिक भूख) धनु में दशम भाव में हैं, जो इस वर्ग का केन्द्र है, गरिमा छाया ग्रह। यहाँ कोणीय स्थिति अक्सर पूर्व कर्म; सबसे सूक्ष्म विभाजन, जन्म-समय के प्रति अत्यंत संवेदनशील के क्षेत्र में करियर और पद को दृश्य बनाती है। यह पारंपरिक पाठ है, वादा नहीं।

ऊपर का D60 पाठ पूर्व कर्म; सबसे सूक्ष्म विभाजन, जन्म-समय के प्रति अत्यंत संवेदनशील का पारंपरिक दृष्टि से वर्णन है। इसे दशा और गोचर अध्यायों के साथ पढ़ें।



# ग्रह-बल: षड्बल और अष्टकवर्ग

> यह आपके लिए क्यों मायने रखता है: बाद में आप जिस भी ज्योतिषी से मिलें, वे ठीक यही आँकड़े माँगेंगे; यह पृष्ठ सँभालकर रखें।

षड्बल ग्रहों के बल को छह प्रकार से मापता है। यह रिपोर्ट उच्च बल, सप्तवर्गज बल (सात वर्गों में गरिमा), ओज-युग्म बल, केंद्रादि बल, दिग्बल, पक्ष बल, अनुमानित चेष्टा बल और नैसर्गिक बल की गणना विरूपों में करती है (60 विरूप = 1 रूप)। कुछ काल-आधारित घटक और दृग्बल छोड़े गए हैं, इसलिए योग को शास्त्रीय न्यूनतम से नहीं, अपने ग्रहों की आपसी तुलना के रूप में पढ़ें।

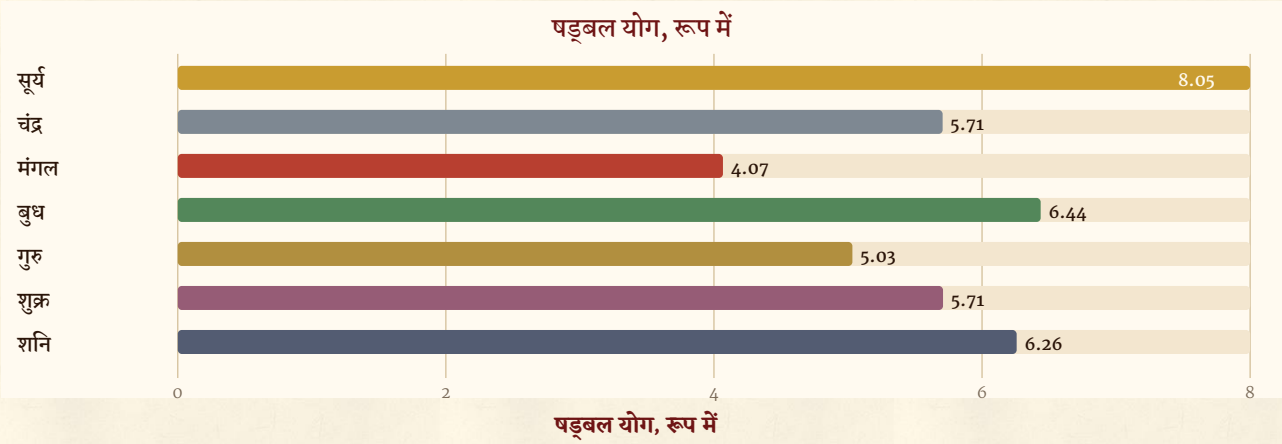


षड्बल योग रूप में दिखाए गए हैं। ऊँचा स्तंभ इस कुंडली में उस ग्रह को शास्त्रीय दृष्टि से अधिक समर्थित बताता है।

| ग्रह | उच्च | सप्तवर्गज | ओज | केंद्र | दिक् | पक्ष | चेष्टा | नैसर्गिक | योग | रूप |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सूर्य | 23 | 225 | 30 | 60 | 37 | 18 | 30 | 60 | 483 | 8.05 |
| चंद्र | 11 | 68 | 0 | 30 | 55 | 85 | 42 | 51 | 342 | 5.71 |
| मंगल | 17 | 77 | 15 | 30 | 55 | 18 | 15 | 17 | 244 | 4.07 |
| बुध | 46 | 128 | 15 | 60 | 54 | 42 | 15 | 26 | 386 | 6.44 |
| गुरु | 27 | 96 | 30 | 15 | 43 | 42 | 15 | 34 | 302 | 5.03 |
| शुक्र | 4 | 126 | 30 | 30 | 38 | 42 | 30 | 43 | 342 | 5.71 |
| शनि | 21 | 120 | 30 | 60 | 58 | 18 | 60 | 9 | 376 | 6.26 |

इन मापों से आपके सबसे बलवान ग्रह सूर्य और बुध हैं, इसलिए आपकी मूल पहचान एक भरोसेमंद संसाधन है। सबसे कम सहयोग गुरु और मंगल को है, इसलिए आपकी प्रेरणा से जुड़े विषयों में अतिरिक्त ध्यान और धैर्य फल देता है।

दिग्बल शनि का सबसे अधिक और सूर्य का सबसे कम है। दिग्बल बताता है कि क्षितिज और मध्याह्न-रेखा के सापेक्ष ग्रह कितनी अच्छी स्थिति में है।

## ❖ अष्टकवर्ग

अष्टकवर्ग हर ग्रह को हर राशि में अधिकतम 8 शुभ बिंदु देता है, जो सात ग्रहों और लग्न से आते हैं। अंतिम पंक्ति (सर्वाष्टकवर्ग) इनका योग है: औसत लगभग 28 प्रति राशि, कुल सदा 337।

| ग्रह | मेष | वृषभ | मिथुन | कर्क | सिंह | कन्या | तुला | वृश्चिक | धनु | मकर | कुंभ | मीन | योग |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सूर्य | 3 | 5 | 5 | 3 | 4 | 4 | 4 | 3 | 3 | 3 | 6 | 5 | 48 |
| चंद्र | 3 | 6 | 6 | 4 | 3 | 2 | 6 | 3 | 4 | 4 | 4 | 4 | 49 |
| मंगल | 2 | 4 | 4 | 3 | 4 | 3 | 5 | 1 | 4 | 4 | 3 | 2 | 39 |
| बुध | 4 | 6 | 4 | 5 | 4 | 6 | 4 | 3 | 5 | 6 | 2 | 5 | 54 |
| गुरु | 7 | 5 | 7 | 4 | 5 | 4 | 4 | 4 | 4 | 7 | 3 | 2 | 56 |
| शुक्र | 6 | 4 | 6 | 4 | 4 | 3 | 6 | 5 | 5 | 3 | 3 | 3 | 52 |
| शनि | 3 | 5 | 4 | 3 | 5 | 2 | 3 | 3 | 1 | 2 | 4 | 4 | 39 |
| सर्वाष्टकवर्ग | 28 | 35 | 36 | 26 | 29 | 24 | 32 | 22 | 26 | 29 | 25 | 25 | 337 |

### अष्टकवर्ग बिंदु मानचित्र

| | मेष | वृषभ | मिथुन | कर्क | सिंह | कन्या | तुला | वृश्चिक | धनु | मकर | कुंभ | मीन | tot |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सूर्य | 3 | 5 | 5 | 3 | 4 | 4 | 4 | 3 | 3 | 3 | 6 | 5 | 48 |
| चंद्र | 3 | 6 | 6 | 4 | 3 | 2 | 6 | 3 | 4 | 4 | 4 | 4 | 49 |
| मंगल | 2 | 4 | 4 | 3 | 4 | 3 | 5 | 1 | 4 | 4 | 3 | 2 | 39 |
| बुध | 4 | 6 | 4 | 5 | 4 | 6 | 4 | 3 | 5 | 6 | 2 | 5 | 54 |
| गुरु | 7 | 5 | 7 | 4 | 5 | 4 | 4 | 4 | 4 | 7 | 3 | 2 | 56 |
| शुक्र | 6 | 4 | 6 | 4 | 4 | 3 | 6 | 5 | 5 | 3 | 3 | 3 | 52 |
| शनि | 3 | 5 | 4 | 3 | 5 | 2 | 3 | 3 | 1 | 2 | 4 | 4 | 39 |
| सर्वाष्टकवर्ग | 28 | 35 | 36 | 26 | 29 | 24 | 32 | 22 | 26 | 29 | 25 | 25 | 337 |

अष्टकवर्ग बिंदु मानचित्र

गहरे कोष्ठकों में अधिक अष्टकवर्ग बिंदु हैं (0 से 8)। अंतिम स्तंभ पंक्ति का योग है। यह समर्थन का मानचित्र है, पूर्वानुमान नहीं।

आपकी सबसे समर्थित राशियाँ मिथुन (एकादश भाव, 36 बिंदु) और वृषभ (दशम भाव, 35) हैं, इसलिए लाभ और नेटवर्क को स्थिर सहयोग मिलता है। वृश्चिक (चतुर्थ भाव, 22) सबसे कम समर्थित है, इसलिए घर और माता में धैर्य चाहिए, विशेषकर जब धीमे ग्रह वहाँ से गोचर करें।

पुरुषार्थ के अनुसार: धर्म भाव (1, 5, 9) का योग 83, अर्थ भाव (2, 6, 10) 88, काम भाव (3, 7, 11) 93 और मोक्ष भाव (4, 8, 12) 73। ज़ोर काम: संबंध, इच्छा और उद्यम पर है।

आपके लाभ भाव (एकादश) में 36 बिंदु और व्यय भाव (द्वादश) में 26 बिंदु हैं। परंपरा में द्वादश से अधिक बिंदु एकादश में होना बचत के अनुकूल माना जाता है।

सूर्य: अपनी जन्म-राशि सिंह में 4 बिंदु (औसत); कुल 48, सबसे अच्छी राशि कुंभ।

चंद्र: अपनी जन्म-राशि धनु में 4 बिंदु (औसत); कुल 49, सबसे अच्छी राशि वृषभ।

मंगल: अपनी जन्म-राशि मिथुन में 4 बिंदु (औसत); कुल 39, सबसे अच्छी राशि तुला।

बुध: अपनी जन्म-राशि सिंह में 4 बिंदु (औसत); कुल 54, सबसे अच्छी राशि वृषभ।

गुरु: अपनी जन्म-राशि तुला में 4 बिंदु (औसत); कुल 56, सबसे अच्छी राशि मेष।

शुक्र: अपनी जन्म-राशि कन्या में 3 बिंदु (औसत से कम); कुल 52, सबसे अच्छी राशि मेष।

शनि: अपनी जन्म-राशि कुंभ में 4 बिंदु (औसत); कुल 39, सबसे अच्छी राशि वृषभ।

## ग्रह मैत्री (पंचधा मैत्री)

# ग्रह मैत्री (पंचधा मैत्री)

> यह आपके लिए क्यों मायने रखता है: जब रिपोर्ट की कोई बात बहुत सच या बहुत ग़लत लगे, तो यहीं देख सकते हैं कि वह किस कारक से आई।

शास्त्रीय ज्योतिष ग्रहों की नैसर्गिक मैत्री को आपकी कुंडली की तात्कालिक मैत्री से जोड़ता है (एक-दूसरे से 2, 3, 4, 10, 11 या 12वें ग्रह तात्कालिक मित्र होते हैं)। परिणाम के पाँच स्तर हैं, अधिमित्र से अधिशत्रु तक।

| | सूर्य | चंद्र | मंगल | बुध | गुरु | शुक्र | शनि |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सूर्य | - | स | अमि | श | अमि | स | अश |
| चंद्र | स | - | श | स | मि | मि | मि |
| मंगल | अमि | स | - | स | स | मि | श |
| बुध | स | अश | मि | - | मि | अमि | श |
| गुरु | अमि | अमि | स | स | - | स | श |
| शुक्र | स | स | मि | अमि | मि | - | स |
| शनि | अश | स | अश | स | श | स | - |

संकेत: अमि अधिमित्र, मि मित्र, स सम, श शत्रु, अश अधिशत्रु। पंक्ति में पढ़ें: पंक्ति का ग्रह स्तंभ के ग्रह को कैसे देखता है।

आपकी कुंडली में सूर्य मंगल और गुरु को अधिमित्र और शनि को अधिशत्रु मानता है, इसलिए मंगल और गुरु के साथ जुड़ी दशाओं और योगों में यह सबसे सहज रहता है।

आपकी कुंडली में मंगल सूर्य को अधिमित्र मानता है, इसलिए दोनों से जुड़ी दशाएँ प्रायः सहज चलती हैं।

आपकी कुंडली में बुध शुक्र को अधिमित्र और चंद्र को अधिशत्रु मानता है, इसलिए शुक्र के साथ जुड़ी दशाओं और योगों में यह सबसे सहज रहता है।

आपकी कुंडली में गुरु सूर्य और चंद्र को अधिमित्र मानता है, इसलिए इनके साथ जुड़ी दशाएँ प्रायः सहज चलती हैं।

आपकी कुंडली में शुक्र बुध को अधिमित्र मानता है, इसलिए दोनों से जुड़ी दशाएँ प्रायः सहज चलती हैं।

आपकी कुंडली में शनि सूर्य और मंगल को अधिशत्रु मानता है, इसलिए इनके साथ जुड़ी दशाओं में अधिक धैर्य चाहिए।

## ग्रह अवस्थाएँ (जाग्रदादि और दीप्तादि)

# ग्रह अवस्थाएँ (जाग्रदादि और दीप्तादि)

यह आपसे कैसे जुड़ता है: "ग्रह अवस्थाएँ (जाग्रदादि और दीप्तादि)" धनु राशि के साहसिक चंद्र वाले उदार-हृदय सिंह लग्न के व्यक्ति के एक और पहलू को देखता है; देखें कि यह आपके क़रीबी लोगों के बारे में क्या कहता है, क्योंकि आप वफ़ादारी और व्यावहारिक देखभाल से प्रेम करते हैं।

दो शास्त्रीय पद्धतियाँ हर ग्रह की मनःस्थिति बताती हैं। जाग्रदादि (जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति) बताती है कि वह कितनी तत्परता से फल देता है; दीप्तादि (एक प्रचलित पद्धति में नौ अवस्थाएँ) उन फलों की गुणवत्ता बताती है।

| ग्रह | राशि | बल | जाग्रदादि | दीप्तादि |
|---|---|---|---|---|
| सूर्य | सिंह | स्वराशि | जाग्रत | स्वस्थ |
| चंद्र | धनु | सम राशि | स्वप्न | शांत |
| मंगल | मिथुन | शत्रु राशि | सुषुप्ति | दीन |
| बुध | सिंह | मित्र राशि | स्वप्न | विकल |
| गुरु | तुला | शत्रु राशि | सुषुप्ति | दीन |
| शुक्र | कन्या | नीच | सुषुप्ति | कोप |
| शनि | कुंभ | स्वराशि | जाग्रत | स्वस्थ |

सूर्य जाग्रत अवस्था में है: यह अपने फल पूर्ण रूप से और शीघ्र देता है। दीप्तादि पद्धति में यह स्वस्थ है, स्वराशि: स्वास्थ्य, सुख और स्थिर सफलता।

चंद्र स्वप्न अवस्था में है: यह मध्यम फल देता है जिन्हें पाने के लिए प्रयास चाहिए। दीप्तादि पद्धति में यह शांत है, आपकी कुंडली में राशि-स्वामी मित्र: शांति और कोमल प्रगति।

मंगल सुषुप्ति अवस्था में है: यह दशा या गोचर से सक्रिय हुए बिना कम फल देता है। दीप्तादि पद्धति में यह दीन है, आपकी कुंडली में राशि-स्वामी सम: साधारण फल।

बुध स्वप्न अवस्था में है: यह मध्यम फल देता है जिन्हें पाने के लिए प्रयास चाहिए। दीप्तादि पद्धति में यह विकल है, अस्त: इसके विषय सूर्य की छाया में रहते हैं।

गुरु सुषुप्ति अवस्था में है: यह दशा या गोचर से सक्रिय हुए बिना कम फल देता है।

शुक्र सुषुप्ति अवस्था में है: यह दशा या गोचर से सक्रिय हुए बिना कम फल देता है। दीप्तादि पद्धति में यह कोप है, नीच: इसके विषयों पर सचेत कार्य आवश्यक।

शनि जाग्रत अवस्था में है: यह अपने फल पूर्ण रूप से और शीघ्र देता है।

आपकी कुंडली के योग और दोष

# आपकी कुंडली के योग और दोष

यह आपके लिए क्यों मायने रखता है: योग आपकी कुंडली में बनी प्रतिभाओं का वर्णन करते हैं; धनु राशि के साहसिक चंद्र वाले उदार-हृदय सिंह लग्न के व्यक्ति होने के नाते आप इनमें से कुछ अपने जीवन में पहले ही देख सकते हैं।

योग ग्रहों के परिभाषित संयोजन हैं; दोष पारंपरिक पीड़ा-संयोजन हैं। हर एक के साथ आपकी कुंडली में मिली सटीक स्थिति दी गई है। योग वह संभावना दिखाता है जो मुख्यतः उसे बनाने वाले ग्रहों की दशाओं में फलती है।

| संयोजन | प्रकार |
|---|---|
| बुधादित्य योग | योग |
| शश योग (पंच महापुरुष) | योग |
| केमद्रुम (पारंपरिक टिप्पणी) | दोष / टिप्पणी |
| वेशि योग | योग |
| अमला योग | योग |
| राजयोग | योग |
| योगकारक | योग |
| धन योग | योग |
| धन योग | योग |
| नीचभंग जाँच | योग |
| गुरु-चांडाल योग (पारंपरिक) | दोष / टिप्पणी |
| मांगलिक (कुज) स्थिति | दोष / टिप्पणी |

### इस कुंडली में पाए गए योग और दोष

- बुधादित्य योग — योग
- शश योग (पंच महापुरुष) — योग
- केमद्रुम (पारंपरिक टिप्पणी) — दोष / टिप्पणी
- वेशि योग — योग
- अमला योग — योग
- राजयोग — योग
- योगकारक — योग
- धन योग — योग
- धन योग — योग
- नीचभंग जाँच — योग
- गुरु-चांडाल योग (पारंपरिक) — दोष / टिप्पणी
- मांगलिक (कुज) स्थिति — दोष / टिप्पणी

इस कुंडली में पाए गए योग और दोष

प्रत्येक कार्ड एक नामित योग है जो वास्तव में इस जन्म कुंडली में है। सोने की किनारी वाले कार्ड सहायक योग हैं; लाल किनारी वाले दोष हैं जो सावधानी माँगते हैं। नामित योग एक पारंपरिक पैटर्न है, फल की गारंटी नहीं। नीचे के नोट प्रत्येक को इस कुंडली के संदर्भ में समझाते हैं।

### ❖ उपस्थित योग

### ❖ बुधादित्य योग

सूर्य और बुध एक ही राशि में हैं।

बुद्धि, स्पष्ट वाणी और प्रशासनिक क्षमता। यह बहुत सामान्य है; बुध के अस्त न होने पर अधिक प्रबल।

यहाँ बुध अस्त है, इसलिए यह योग शांत, आंतरिक रूप में कार्य करता है।

### ❖ शश योग (पंच महापुरुष)

शनि सप्तम भाव में स्वराशि है, जो एक केंद्र है।

अनुशासन, संगठन और सहनशक्ति से बना अधिकार; समूहों का नेतृत्व।

### ❖ वेशि योग

सूर्य से दूसरे भाव में शुक्र।

संतुलित दृष्टिकोण, सत्यनिष्ठा और स्थिर प्रयास।

### ❖ अमला योग

लग्न या चंद्र से दशम भाव में शुक्र।

स्वच्छ प्रतिष्ठा और व्यावसायिक जीवन में नैतिक आचरण।

### ❖ राजयोग

शनि (सप्तम भाव का स्वामी) और सूर्य (प्रथम भाव का स्वामी) परस्पर दृष्टि से जुड़े हैं।

पद, मान्यता और नेतृत्व की क्षमता, विशेषकर इन ग्रहों की दशाओं में।

इन ग्रहों की दशाएँ जीवन में बहुत बाद में आती हैं, इसलिए इस योग को किसी घटना की बजाय धीरे-धीरे परिपक्व होने वाले गुण के रूप में पढ़ें।

### ❖ योगकारक

मंगल केंद्र और त्रिकोण दोनों का स्वामी है (चतुर्थ और नवम)।

ऐसा एकल ग्रह जो स्वयं राजयोग की क्षमता रखता है; इसकी दशाएँ परंपरा में महत्वपूर्ण मानी जाती हैं।

इसकी महादशा एक मुख्य अवधि है: मंगल (2033–2040)।

### ❖ धन योग

बुध (द्वितीय भाव का स्वामी) और सूर्य (प्रथम भाव का स्वामी) एक साथ हैं।

इन भावों के विषयों से धन-संचय की क्षमता।

### ❖ धन योग

बुध (एकादश भाव का स्वामी) और सूर्य (प्रथम भाव का स्वामी) एक साथ हैं।

इन भावों के विषयों से धन-संचय की क्षमता।

### ❖ नीचभंग जाँच

शुक्र नीच का है।

नीचता भंग करने वाले कारक: बुध (राशि-स्वामी) लग्न से केंद्र में है।

### ❖ दोष और पारंपरिक टिप्पणियाँ

### ❖ केमद्रुम (पारंपरिक टिप्पणी)

चंद्र से दूसरे, बारहवें या साथ में सूर्य और राहु-केतु के अतिरिक्त कोई ग्रह नहीं है।

शास्त्रों में इसे असहाय महसूस करने के दौर से जोड़ा गया है। यह सामान्य है और प्रायः भंग होता है; भरोसेमंद सहयोग-संबंध बनाएँ।

परिहार: चंद्र से केंद्र में मंगल और शुक्र इसे नरम करता है।

### ❖ गुरु-चांडाल योग (पारंपरिक)

गुरु राहु के साथ एक ही राशि में है।

अपरंपरागत विश्वास या गुरु; नैतिकता और अच्छा परामर्श पास रखें।

### ❖ मांगलिक (कुज) स्थिति

मंगल चंद्र से मांगलिक भाव में है।

यह केवल पारंपरिक विवाह-मिलान का कारक है; लगभग आधी कुंडलियाँ किसी न किसी नियम से इसमें आती हैं। परिहार: 1 पारंपरिक परिहार उपस्थित, मांगलिक खंड में सूचीबद्ध।

> योग और दोष पारंपरिक संभावनाओं और प्रवृत्तियों का वर्णन करते हैं। इनमें से कोई भी गारंटी या दंड नहीं है, और किसी को "ठीक" करने के लिए कोई अनुष्ठान या ख़रीद आवश्यक नहीं।



# जैमिनी चर कारक

> यह आपके लिए क्यों मायने रखता है: रोज़ के जीवन से आगे, यह अध्याय उस बारे में है जो आपको अर्थ देता है; धनु राशि के साहसिक चंद्र वाले उदार-हृदय सिंह लग्न के व्यक्ति होने के नाते देखें कि कौन सी बातें सच लगती हैं।

जैमिनी पद्धति में सात ग्रहों को राशि के भीतर उनके अंशों के क्रम में रखा जाता है। हर भूमिका जीवन के एक भाग का वर्णन करती है।

| कारक | ग्रह | अंश | वर्णन |
|---|---|---|---|
| आत्मकारक | शनि | 16°23′ | आत्मा का मुख्य पाठ |
| अमात्यकारक | शुक्र | 16°00′ | करियर और परामर्श |
| भ्रातृकारक | गुरु | 13°58′ | भाई-बहन और साहस |
| मातृकारक | चंद्र | 7°19′ | माता और भावनात्मक सुरक्षा |
| पुत्रकारक | मंगल | 6°24′ | संतान और सृजन |
| ज्ञातिकारक | बुध | 4°23′ | बाधाएँ, प्रतिद्वंद्वी और उपचार |
| दारकारक | सूर्य | 0°11′ | जीवनसाथी और साझेदारी |

आपका आत्मकारक शनि है, जो आपके अनुशासन, सहनशक्ति, कर्म-निष्ठा, भय और दीर्घकालिक कर्म का कारक है। इसकी नवांश राशि (कारकांश) कुंभ है, इसलिए आत्मा का मार्ग, कुंभ की स्वतंत्रता के साथ: आदर्शवादी, अपरंपरागत, मानवतावादी और तटस्थ।



# विंशोत्तरी दशा: अवधियाँ और फल

> यह आपके लिए क्यों मायने रखता है: इसे तय घटनाओं की भविष्यवाणी नहीं, योजना का सहारा मानें; सबसे उपयोगी प्रविष्टियाँ वे हैं जो अभी और अगले कुछ वर्षों में चल रही हैं।

आपका विंशोत्तरी क्रम केतु से आरंभ होता है, जो आपके जन्म-नक्षत्र मूल का स्वामी है; जन्म के समय उस दशा के 3.2 वर्ष शेष थे। वर्तमान अवधि को रेखांकित किया गया है।

विंशोत्तरी महादशा समय-रेखा

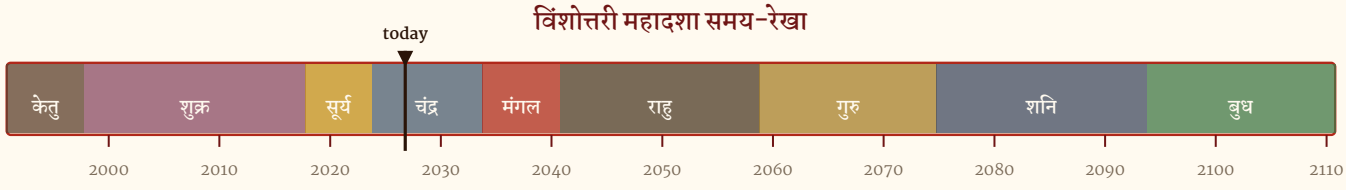


विंशोत्तरी महादशा समय-रेखा

प्रत्येक खंड जन्म से एक महादशा है। चिह्न आज की तिथि है। इसे पारंपरिक समय का मानचित्र मानें, घटनाओं की गारंटी नहीं।

| महादशा | से | तक | वर्ष | स्वामी स्थित |
|---|---|---|---|---|
| केतु | 14 अक्टूबर 1990 | 13 अक्टूबर 1997 | 7.0 | नवम भाव |
| शुक्र | 13 अक्टूबर 1997 | 13 अक्टूबर 2017 | 20.0 | द्वितीय भाव |
| सूर्य | 13 अक्टूबर 2017 | 14 अक्टूबर 2023 | 6.0 | प्रथम भाव |
| **चंद्र** | **14 अक्टूबर 2023** | **13 अक्टूबर 2033** | **10.0** | **पंचम भाव** |
| मंगल | 13 अक्टूबर 2033 | 13 अक्टूबर 2040 | 7.0 | एकादश भाव |
| राहु | 13 अक्टूबर 2040 | 13 अक्टूबर 2058 | 18.0 | तृतीय भाव |
| गुरु | 13 अक्टूबर 2058 | 13 अक्टूबर 2074 | 16.0 | तृतीय भाव |
| शनि | 13 अक्टूबर 2074 | 13 अक्टूबर 2093 | 19.0 | सप्तम भाव |

वर्तमान महादशा: अंतर्दशा समय-रेखा

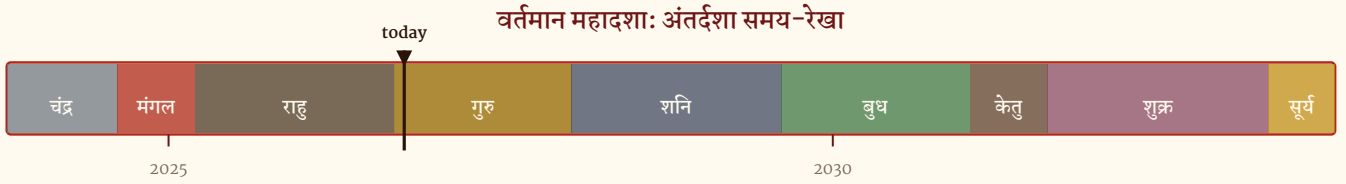


वर्तमान महादशा: अंतर्दशा समय-रेखा

यही महादशा अपनी अंतर्दशाओं में बँटी है। चिह्नित भाग अभी चल रही अंतर्दशा है।

### ❖ चंद्र महादशा · 2023–2033

2023 से 2033 तक चंद्र महादशा आपके मन, भावनाओं, माता, घरेलू जीवन और संतोष की क्षमता को अग्रभूमि में लाती है।

चंद्र आपके पंचम भाव में धनु राशि में है और सम राशि में है, इसलिए संतान और बुद्धि पर ज़ोर रहता है।

द्वादश भाव का स्वामी होने से यह व्यय और मोक्ष को भी सक्रिय करता है।

षड्बल में चंद्र का 7 में से 5वाँ स्थान है और इसकी राशि में 4 बिंदु हैं।

### ❖ मंगल महादशा · 2033–2040

2033 से 2040 तक मंगल महादशा आपकी प्रेरणा, साहस, शारीरिक ऊर्जा, भाई-बहनों और प्रतिस्पर्धा की रुचि को अग्रभूमि में लाती है।

मंगल आपके एकादश भाव में मिथुन राशि में है और शत्रु राशि में है, इसलिए इसके फलों के लिए अधिक प्रयास चाहिए, इसलिए लाभ और नेटवर्क पर ज़ोर रहता है।

चतुर्थ भाव और नवम भाव का स्वामी होने से यह घर और माता; भाग्य और गुरु को भी सक्रिय करता है।

षड्बल में मंगल का 7 में से 7वाँ स्थान है और इसकी राशि में 4 बिंदु हैं।

मंगल से जुड़े योग: योगकारक; परंपरा के अनुसार ये इसी अवधि में फलते हैं।

### ❖ राहु महादशा · 2040–2058

2040 से 2058 तक राहु महादशा आपकी सांसारिक भूख, महत्वाकांक्षा और नए व विदेशी के प्रति आकर्षण को अग्रभूमि में लाती है।

राहु आपके तृतीय भाव में तुला राशि में है और छाया ग्रह है जो अपने राशि-स्वामी शुक्र के माध्यम से कार्य करता है, इसलिए पराक्रम और भाई-बहन पर ज़ोर रहता है।

### ❖ गुरु महादशा · 2058–2074

2058 से 2074 तक गुरु महादशा आपके ज्ञान, आस्था, गुरुजनों, संतान, धन और जीवन के अर्थ को अग्रभूमि में लाती है।

गुरु आपके तृतीय भाव में तुला राशि में है और शत्रु राशि में है, इसलिए इसके फलों के लिए अधिक प्रयास चाहिए, इसलिए पराक्रम और भाई-बहन पर ज़ोर रहता है।

पंचम भाव और अष्टम भाव का स्वामी होने से यह संतान और बुद्धि; रूपांतरण और विरासत को भी सक्रिय करता है।

षड्बल में गुरु का 7 में से 6वाँ स्थान है और इसकी राशि में 4 बिंदु हैं।

### ❖ अगले 20 वर्षों की अंतर्दशाएँ, एक-एक कर

हर अंतर्दशा महादशा-स्वामी और अंतर्दशा-स्वामी को जोड़ती है। फल में उनकी मित्रता, आपसी दूरी, अंतर्दशा-स्वामी का भाव और बल, उसके स्वामित्व वाले भाव, और अवधि के मध्य में गुरु व शनि का गोचर देखा गया है।

| अवधि | से | तक |
|---|---|---|
| **चंद्र / गुरु** | **13 सितंबर 2026** | **13 जनवरी 2028** |
| चंद्र / शनि | 13 जनवरी 2028 | 13 अगस्त 2029 |
| चंद्र / बुध | 13 अगस्त 2029 | 13 जनवरी 2031 |
| चंद्र / केतु | 13 जनवरी 2031 | 14 अगस्त 2031 |
| चंद्र / शुक्र | 14 अगस्त 2031 | 14 अप्रैल 2033 |
| चंद्र / सूर्य | 14 अप्रैल 2033 | 13 अक्टूबर 2033 |

| अवधि | से | तक |
|---|---|---|
| मंगल / मंगल | 13 अक्टूबर 2033 | 11 मार्च 2034 |
| मंगल / राहु | 11 मार्च 2034 | 30 मार्च 2035 |
| मंगल / गुरु | 30 मार्च 2035 | 5 मार्च 2036 |
| मंगल / शनि | 5 मार्च 2036 | 14 अप्रैल 2037 |
| मंगल / बुध | 14 अप्रैल 2037 | 11 अप्रैल 2038 |
| मंगल / केतु | 11 अप्रैल 2038 | 7 सितंबर 2038 |
| मंगल / शुक्र | 7 सितंबर 2038 | 7 नवंबर 2039 |
| मंगल / सूर्य | 7 नवंबर 2039 | 14 मार्च 2040 |
| मंगल / चंद्र | 14 मार्च 2040 | 13 अक्टूबर 2040 |
| राहु / राहु | 13 अक्टूबर 2040 | 26 जून 2043 |
| राहु / गुरु | 26 जून 2043 | 19 नवंबर 2045 |
| राहु / शनि | 19 नवंबर 2045 | 25 सितंबर 2048 |

### ❖ चंद्र / गुरु · सितंबर 2026 – जनवरी 2028

चंद्र और गुरु एक-दूसरे के प्रति सम हैं, इसलिए अंतर्दशा का स्वर गुरु की स्थिति से तय होता है। गुरु, चंद्र से 11 राशि दूर है। गुरु आपके तृतीय भाव में है, इसलिए पराक्रम और भाई-बहन आगे आते हैं; यह शत्रु राशि में है, इसलिए इसके फलों के लिए अधिक प्रयास चाहिए। गुरु संतान और बुद्धि; रूपांतरण और विरासत का भी स्वामी है। अवधि के मध्य में गुरु चंद्र से आपके अष्टम भाव में (मिश्रित) और शनि चतुर्थ भाव में (परिश्रम-साध्य) गोचर करता है। गुरु स्वाति में, पाद 3, तृतीय भाव में हैं, इसलिए इस अंतर्दशा को सामान्यतः पराक्रम और भाई-बहन के माध्यम से पढ़ा जाता है। यह स्थिति-पाठ है, उप-अवधि में किसी विशेष घटना का पूर्वानुमान नहीं। अवधि का सर्वोत्तम उपयोग: सीखें, सिखाएँ, मार्गदर्शक खोजें और दीर्घकालिक वृद्धि में निवेश करें।

### ❖ चंद्र / शनि · जनवरी 2028 – अगस्त 2029

चंद्र और शनि एक-दूसरे के प्रति सम हैं, इसलिए अंतर्दशा का स्वर शनि की स्थिति से तय होता है। शनि, चंद्र से 3 राशि दूर है। शनि आपके सप्तम भाव में है, इसलिए विवाह और साझेदार आगे आते हैं; यह स्वराशि में है, इसलिए यह आत्मविश्वास से फल देता है। शनि सेवा और बाधाएँ; विवाह और साझेदार का भी स्वामी है। अवधि के मध्य में गुरु चंद्र से आपके दशम भाव में (मिश्रित) और शनि पंचम भाव में (परिश्रम-साध्य) गोचर करता है। शनि शतभिषा में, पाद 3, सप्तम भाव में हैं, इसलिए इस अंतर्दशा को सामान्यतः विवाह और साझेदार के माध्यम से पढ़ा जाता है। अवधि का सर्वोत्तम उपयोग: स्थिर कार्य के प्रति प्रतिबद्ध रहें और दायित्वों को सरल करें।

### ❖ चंद्र / बुध · अगस्त 2029 – जनवरी 2031

चंद्र और बुध नैसर्गिक मित्र हैं, इसलिए यह अंतर्दशा प्रायः सहज चलती है। बुध, चंद्र से त्रिकोण में है, एक सौहार्दपूर्ण संबंध। बुध आपके प्रथम भाव में है, इसलिए स्वयं और स्वास्थ्य आगे आते हैं; यह मित्र राशि में है। बुध धन और परिवार; लाभ और नेटवर्क का भी स्वामी है। अवधि के मध्य में गुरु चंद्र से आपके द्वादश भाव में (मिश्रित) और शनि षष्ठ भाव में (सहायक) गोचर करता है। बुध मघा में, पाद 2, प्रथम भाव में हैं, इसलिए इस अंतर्दशा को सामान्यतः स्वयं और स्वास्थ्य के माध्यम से पढ़ा जाता है। अवधि का सर्वोत्तम उपयोग: अध्ययन, लेखन, वार्ता और व्यवस्था करें।

### ❖ चंद्र / केतु · जनवरी 2031 – अगस्त 2031

चंद्र और केतु एक-दूसरे के प्रति सम हैं, इसलिए अंतर्दशा का स्वर केतु की स्थिति से तय होता है। केतु, चंद्र से त्रिकोण में है, एक सौहार्दपूर्ण संबंध। केतु आपके नवम भाव में है, इसलिए भाग्य और गुरु आगे आते हैं; यह छाया ग्रह है जो अपने राशि-स्वामी मंगल के माध्यम से कार्य करता है। अवधि के मध्य में गुरु चंद्र से आपके प्रथम भाव में (मिश्रित) और शनि षष्ठ भाव में (सहायक) गोचर करता है। केतु भरणी में, पाद 4, नवम भाव में हैं, इसलिए इस अंतर्दशा को सामान्यतः भाग्य और गुरु के माध्यम से पढ़ा जाता है। अवधि का सर्वोत्तम उपयोग: पुराने काम पूरे करें, शोध करें और भीतर की ओर मुड़ें।

### ❖ चंद्र / शुक्र · अगस्त 2031 – अप्रैल 2033

चंद्र और शुक्र एक-दूसरे के प्रति सम हैं, इसलिए अंतर्दशा का स्वर शुक्र की स्थिति से तय होता है। शुक्र, चंद्र से केंद्र में है, जो ठोस कार्य में सहायक है। शुक्र आपके द्वितीय भाव में है, इसलिए धन और परिवार आगे आते हैं; यह नीच का है, इसलिए इसके फल प्रयास के बाद आते हैं। शुक्र पराक्रम और भाई-बहन; करियर और पद का भी स्वामी है। अवधि के मध्य में गुरु चंद्र से आपके द्वितीय भाव में (सहायक) और शनि सप्तम भाव में (परिश्रम-साध्य) गोचर करता है। शुक्र हस्त में, पाद 2, द्वितीय भाव में हैं, इसलिए इस अंतर्दशा को सामान्यतः धन और परिवार के माध्यम से पढ़ा जाता है। अवधि का सर्वोत्तम उपयोग: संबंधों, सुख-सुविधा और रचनात्मक कार्य को पोषित करें।

### ❖ चंद्र / सूर्य · अप्रैल 2033 – अक्टूबर 2033

चंद्र और सूर्य नैसर्गिक मित्र हैं, इसलिए यह अंतर्दशा प्रायः सहज चलती है। सूर्य, चंद्र से त्रिकोण में है, एक सौहार्दपूर्ण संबंध। सूर्य आपके प्रथम भाव में है, इसलिए स्वयं और स्वास्थ्य आगे आते हैं; यह स्वराशि में है, इसलिए यह आत्मविश्वास से फल देता है। सूर्य स्वयं और स्वास्थ्य का भी स्वामी है। अवधि के मध्य में गुरु चंद्र से आपके तृतीय भाव में (मिश्रित) और शनि सप्तम भाव में (परिश्रम-साध्य) गोचर करता है। सूर्य मघा में, पाद 1, प्रथम भाव में हैं, इसलिए इस अंतर्दशा को सामान्यतः स्वयं और स्वास्थ्य के माध्यम से पढ़ा जाता है। अवधि का सर्वोत्तम उपयोग: ज़िम्मेदारी लें और दिखने वाली भूमिकाओं में आगे आएँ।

### ❖ मंगल / मंगल · अक्टूबर 2033 – मार्च 2034

यह महादशा की पहली अंतर्दशा है, जब मंगल के विषय अपने शुद्धतम रूप में आते हैं। मंगल आपके एकादश भाव में है, इसलिए लाभ और नेटवर्क आगे आते हैं; यह शत्रु राशि में है, इसलिए इसके फलों के लिए अधिक प्रयास चाहिए। मंगल घर और माता; भाग्य और गुरु का भी स्वामी है। मंगल मृगशिरा में, पाद 4, एकादश भाव में हैं, इसलिए इस अंतर्दशा को सामान्यतः लाभ और नेटवर्क के माध्यम से पढ़ा जाता है। अवधि का सर्वोत्तम उपयोग: ऊर्जा को निर्णायक, शारीरिक या तकनीकी कार्य में लगाएँ।

### ❖ मंगल / राहु · मार्च 2034 – मार्च 2035

मंगल और राहु एक-दूसरे के प्रति सम हैं, इसलिए अंतर्दशा का स्वर राहु की स्थिति से तय होता है। राहु, मंगल से त्रिकोण में है, एक सौहार्दपूर्ण संबंध। राहु आपके तृतीय भाव में है, इसलिए पराक्रम और भाई-बहन आगे आते हैं; यह छाया ग्रह है जो अपने राशि-स्वामी शुक्र के माध्यम से कार्य करता है। अवधि के मध्य में गुरु चंद्र से आपके चतुर्थ भाव में (मिश्रित) और शनि अष्टम भाव में (परिश्रम-साध्य) गोचर करता है। राहु विशाखा में, पाद 2, तृतीय भाव में हैं, इसलिए इस अंतर्दशा को सामान्यतः पराक्रम और भाई-बहन के माध्यम से पढ़ा जाता है। अवधि का सर्वोत्तम उपयोग: तथ्यों की सावधानी से जाँच करते हुए नए क्षेत्र खोजें।

### ❖ मंगल / गुरु · मार्च 2035 – मार्च 2036

मंगल और गुरु नैसर्गिक मित्र हैं, इसलिए यह अंतर्दशा प्रायः सहज चलती है। गुरु, मंगल से त्रिकोण में है, एक सौहार्दपूर्ण संबंध। अवधि के मध्य में गुरु चंद्र से आपके पंचम भाव में (सहायक) और शनि अष्टम भाव में (परिश्रम-साध्य) गोचर करता है।

### ❖ मंगल / शनि · मार्च 2036 – अप्रैल 2037

मंगल और शनि एक-दूसरे के प्रति सम हैं, इसलिए अंतर्दशा का स्वर शनि की स्थिति से तय होता है। शनि, मंगल से त्रिकोण में है, एक सौहार्दपूर्ण संबंध। अवधि के मध्य में गुरु चंद्र से आपके सप्तम भाव में (सहायक) और शनि नवम भाव में (परिश्रम-साध्य) गोचर करता है।

### ❖ मंगल / बुध · अप्रैल 2037 – अप्रैल 2038

मंगल और बुध नैसर्गिक शत्रु हैं, इसलिए दोनों ग्रहों के विषयों में कुछ खिंचाव की अपेक्षा रखें। बुध, मंगल से 3 राशि दूर है। अवधि के मध्य में गुरु चंद्र से आपके अष्टम भाव में (मिश्रित) और शनि नवम भाव में (परिश्रम-साध्य) गोचर करता है।

### ❖ मंगल / केतु · अप्रैल 2038 – सितंबर 2038

मंगल और केतु एक-दूसरे के प्रति सम हैं, इसलिए अंतर्दशा का स्वर केतु की स्थिति से तय होता है। केतु, मंगल से 11 राशि दूर है।

### ❖ मंगल / शुक्र · सितंबर 2038 – नवंबर 2039

मंगल और शुक्र एक-दूसरे के प्रति सम हैं, इसलिए अंतर्दशा का स्वर शुक्र की स्थिति से तय होता है। शुक्र, मंगल से केंद्र में है, जो ठोस कार्य में सहायक है।

### ❖ मंगल / सूर्य · नवंबर 2039 – मार्च 2040

मंगल और सूर्य नैसर्गिक मित्र हैं, इसलिए यह अंतर्दशा प्रायः सहज चलती है। सूर्य, मंगल से 3 राशि दूर है। अवधि के मध्य में गुरु चंद्र से आपके दशम भाव में (मिश्रित) और शनि दशम भाव में (परिश्रम-साध्य) गोचर करता है।

### ❖ मंगल / चंद्र · मार्च 2040 – अक्टूबर 2040

मंगल और चंद्र नैसर्गिक मित्र हैं, इसलिए यह अंतर्दशा प्रायः सहज चलती है। चंद्र, मंगल से केंद्र में है, जो ठोस कार्य में सहायक है। चंद्र आपके पंचम भाव में है, इसलिए संतान और बुद्धि आगे आते हैं; यह सम राशि में है। चंद्र व्यय और मोक्ष का भी स्वामी है। अवधि के मध्य में गुरु चंद्र से आपके नवम भाव में (सहायक) और शनि दशम भाव में (परिश्रम-साध्य) गोचर करता है। चंद्र मूल में, पाद 3, पंचम भाव में हैं, इसलिए इस अंतर्दशा को सामान्यतः संतान और बुद्धि के माध्यम से पढ़ा जाता है। अवधि का सर्वोत्तम उपयोग: विश्राम और परिवार के समय की रक्षा करें और अंतर्ज्ञान पर चलें।

### ❖ राहु / राहु · अक्टूबर 2040 – जून 2043

यह महादशा की पहली अंतर्दशा है, जब राहु के विषय अपने शुद्धतम रूप में आते हैं। अवधि के मध्य में गुरु चंद्र से आपके द्वादश भाव में (मिश्रित) और शनि एकादश भाव में (सहायक) गोचर करता है।

### ❖ राहु / गुरु · जून 2043 – नवंबर 2045

राहु और गुरु एक-दूसरे के प्रति सम हैं, इसलिए अंतर्दशा का स्वर गुरु की स्थिति से तय होता है। गुरु और राहु एक ही राशि में हैं। अवधि के मध्य में गुरु चंद्र से आपके द्वितीय भाव में (सहायक) और शनि द्वादश भाव में (परिश्रम-साध्य) गोचर करता है।

### ❖ राहु / शनि · नवंबर 2045 – सितंबर 2048

राहु और शनि एक-दूसरे के प्रति सम हैं, इसलिए अंतर्दशा का स्वर शनि की स्थिति से तय होता है। शनि, राहु से त्रिकोण में है, एक सौहार्दपूर्ण संबंध। अवधि के मध्य में गुरु चंद्र से आपके पंचम भाव में (सहायक) और शनि प्रथम भाव में (परिश्रम-साध्य) गोचर करता है।

### ❖ चंद्र / गुरु के भीतर प्रत्यंतर दशाएँ

| प्रत्यंतर | से | तक | केंद्र-विषय |
|---|---|---|---|
| गुरु | 13 सितंबर 2026 | 17 नवंबर 2026 | तृतीय भाव: पराक्रम और भाई-बहन |
| शनि | 17 नवंबर 2026 | 2 फ़रवरी 2027 | सप्तम भाव: विवाह और साझेदार |
| बुध | 2 फ़रवरी 2027 | 12 अप्रैल 2027 | प्रथम भाव: स्वयं और स्वास्थ्य |
| केतु | 12 अप्रैल 2027 | 11 मई 2027 | नवम भाव: भाग्य और गुरु |
| शुक्र | 11 मई 2027 | 31 जुलाई 2027 | द्वितीय भाव: धन और परिवार |
| सूर्य | 31 जुलाई 2027 | 24 अगस्त 2027 | प्रथम भाव: स्वयं और स्वास्थ्य |
| चंद्र | 24 अगस्त 2027 | 4 अक्टूबर 2027 | पंचम भाव: संतान और बुद्धि |
| मंगल | 4 अक्टूबर 2027 | 1 नवंबर 2027 | एकादश भाव: लाभ और नेटवर्क |
| राहु | 1 नवंबर 2027 | 13 जनवरी 2028 | तृतीय भाव: पराक्रम और भाई-बहन |

### ❖ चंद्र / शनि के भीतर प्रत्यंतर दशाएँ

| प्रत्यंतर | से | तक | केंद्र-विषय |
|---|---|---|---|
| शनि | 13 जनवरी 2028 | 14 अप्रैल 2028 | सप्तम भाव: विवाह और साझेदार |
| बुध | 14 अप्रैल 2028 | 5 जुलाई 2028 | प्रथम भाव: स्वयं और स्वास्थ्य |
| केतु | 5 जुलाई 2028 | 7 अगस्त 2028 | नवम भाव: भाग्य और गुरु |
| शुक्र | 7 अगस्त 2028 | 12 नवंबर 2028 | द्वितीय भाव: धन और परिवार |
| सूर्य | 12 नवंबर 2028 | 11 दिसंबर 2028 | प्रथम भाव: स्वयं और स्वास्थ्य |
| चंद्र | 11 दिसंबर 2028 | 28 जनवरी 2029 | पंचम भाव: संतान और बुद्धि |
| मंगल | 28 जनवरी 2029 | 3 मार्च 2029 | एकादश भाव: लाभ और नेटवर्क |
| राहु | 3 मार्च 2029 | 28 मई 2029 | तृतीय भाव: पराक्रम और भाई-बहन |
| गुरु | 28 मई 2029 | 13 अगस्त 2029 | तृतीय भाव: पराक्रम और भाई-बहन |

जीवन भर की विंशोत्तरी दशा: सभी महादशाएँ और अंतर्दशाएँ

# जीवन भर की विंशोत्तरी दशा: सभी महादशाएँ और अंतर्दशाएँ

यह आपसे कैसे जुड़ता है: “जीवन भर की विंशोत्तरी दशा: सभी महादशाएँ और अंतर्दशाएँ” धनु राशि के साहसिक चंद्र वाले उदार-हृदय सिंह लग्न के व्यक्ति के एक और पहलू को देखता है; इसकी व्यावहारिक बातें खोजें, क्योंकि आप सावधानी से बचाते और गुणवत्ता को महत्व देते हैं।

पारंपरिक जन्म पत्रिका में जीवन की हर महादशा उसकी नौ अंतर्दशाओं सहित लिखी जाती है। नीचे हर अंतर्दशा का आकलन आपकी अपनी कुंडली से किया गया है: उसका स्वामी महादशा-स्वामी का नैसर्गिक मित्र है या शत्रु, दोनों एक-दूसरे से कितनी दूरी पर हैं (केंद्र और त्रिकोण की दूरी सहायक, छठी, आठवीं और बारहवीं दूरी कठिन), और अंतर्दशा-स्वामी की अपनी गरिमा। सहायक अवधियाँ नए काम शुरू करने के लिए अच्छी हैं; परिश्रम-साध्य अवधियों में धैर्य, तैयारी और नियमितता फल देती है। चालू अंतर्दशा रेखांकित है।

### ❖ केतु महादशा · 17 अगस्त 1994 – 13 अक्टूबर 1997 (आयु 0–3)

केतु आपके नवम भाव में मेष राशि में (छाया ग्रह) है। यहाँ कोई अंतर्दशा स्पष्ट रूप से सहायक नहीं आती, इसलिए समय से अधिक निरंतर प्रयास का महत्व है। यहाँ कोई अंतर्दशा स्पष्ट रूप से कठिन नहीं है।

| अंतर्दशा | से | तक | स्थिति | महादशा-स्वामी से | संबंध | स्वर |
|---|---|---|---|---|---|---|
| राहु | 17 अगस्त 1994 | 2 अक्टूबर 1994 | तृतीय भाव | सप्तम | सम | मिश्रित |
| गुरु | 2 अक्टूबर 1994 | 7 सितंबर 1995 | तृतीय भाव | सप्तम | सम | मिश्रित |
| शनि | 7 सितंबर 1995 | 16 अक्टूबर 1996 | सप्तम भाव | एकादश | सम | मिश्रित |
| बुध | 16 अक्टूबर 1996 | 13 अक्टूबर 1997 | प्रथम भाव | पंचम | सम | मिश्रित |

### ❖ शुक्र महादशा · 13 अक्टूबर 1997 – 13 अक्टूबर 2017 (आयु 3–23)

शुक्र आपके द्वितीय भाव में कन्या राशि में (नीच) है। यह तृतीय और दशम भावों का स्वामी है, इसलिए पूरी अवधि की पृष्ठभूमि यही विषय बनाते हैं। सावधानी माँगने वाली अंतर्दशाएँ: सूर्य और केतु।

| अंतर्दशा | से | तक | स्थिति | महादशा-स्वामी से | संबंध | स्वर |
|---|---|---|---|---|---|---|
| शुक्र | 13 अक्टूबर 1997 | 12 फ़रवरी 2001 | द्वितीय भाव | प्रथम | स्वयं की | मिश्रित |

| अंतर्दशा | से | तक | स्थिति | महादशा-स्वामी से | संबंध | स्वर |
|---|---|---|---|---|---|---|
| सूर्य | 12 फ़रवरी 2001 | 12 फ़रवरी 2002 | प्रथम भाव | द्वादश | शत्रु | परिश्रम-साध्य |
| चंद्र | 12 फ़रवरी 2002 | 14 अक्टूबर 2003 | पंचम भाव | चतुर्थ | शत्रु | मिश्रित |
| मंगल | 14 अक्टूबर 2003 | 13 दिसंबर 2004 | एकादश भाव | दशम | सम | मिश्रित |
| राहु | 13 दिसंबर 2004 | 14 दिसंबर 2007 | तृतीय भाव | द्वितीय | सम | मिश्रित |
| गुरु | 14 दिसंबर 2007 | 14 अगस्त 2010 | तृतीय भाव | द्वितीय | सम | मिश्रित |
| शनि | 14 अगस्त 2010 | 13 अक्टूबर 2013 | सप्तम भाव | षष्ठ | मित्र | मिश्रित |
| बुध | 13 अक्टूबर 2013 | 13 अगस्त 2016 | प्रथम भाव | द्वादश | मित्र | मिश्रित |
| केतु | 13 अगस्त 2016 | 13 अक्टूबर 2017 | नवम भाव | अष्टम | सम | परिश्रम-साध्य |

## ❖ सूर्य महादशा · 13 अक्टूबर 2017 – 14 अक्टूबर 2023 (आयु 23–29)

सूर्य आपके प्रथम भाव में सिंह राशि में (स्वराशि) है। यह प्रथम भाव का स्वामी है, इसलिए पूरी अवधि की पृष्ठभूमि यही विषय बनाते हैं। सबसे सहायक अंतर्दशाएँ: चंद्र। सावधानी माँगने वाली अंतर्दशाएँ: शुक्र।

| अंतर्दशा | से | तक | स्थिति | महादशा-स्वामी से | संबंध | स्वर |
|---|---|---|---|---|---|---|
| सूर्य | 13 अक्टूबर 2017 | 31 जनवरी 2018 | प्रथम भाव | प्रथम | स्वयं की | सहायक |
| चंद्र | 31 जनवरी 2018 | 2 अगस्त 2018 | पंचम भाव | पंचम | मित्र | सहायक |
| मंगल | 2 अगस्त 2018 | 7 दिसंबर 2018 | एकादश भाव | एकादश | मित्र | मिश्रित |
| राहु | 7 दिसंबर 2018 | 1 नवंबर 2019 | तृतीय भाव | तृतीय | सम | मिश्रित |
| गुरु | 1 नवंबर 2019 | 19 अगस्त 2020 | तृतीय भाव | तृतीय | मित्र | मिश्रित |
| शनि | 19 अगस्त 2020 | 1 अगस्त 2021 | सप्तम भाव | सप्तम | शत्रु | मिश्रित |
| बुध | 1 अगस्त 2021 | 8 जून 2022 | प्रथम भाव | प्रथम | सम | मिश्रित |
| केतु | 8 जून 2022 | 14 अक्टूबर 2022 | नवम भाव | नवम | सम | मिश्रित |
| शुक्र | 14 अक्टूबर 2022 | 14 अक्टूबर 2023 | द्वितीय भाव | द्वितीय | शत्रु | परिश्रम-साध्य |

## ❖ चंद्र महादशा · 14 अक्टूबर 2023 – 13 अक्टूबर 2033 (आयु 29–39)

चंद्र आपके पंचम भाव में धनु राशि में (सम राशि) है। यह द्वादश भाव का स्वामी है, इसलिए पूरी अवधि की पृष्ठभूमि यही विषय बनाते हैं। सबसे सहायक अंतर्दशाएँ: बुध और सूर्य।

| अंतर्दशा | से | तक | स्थिति | महादशा-स्वामी से | संबंध | स्वर |
|---|---|---|---|---|---|---|
| चंद्र | 14 अक्टूबर 2023 | 13 अगस्त 2024 | पंचम भाव | प्रथम | स्वयं की | मिश्रित |
| मंगल | 13 अगस्त 2024 | 14 मार्च 2025 | एकादश भाव | सप्तम | सम | मिश्रित |
| राहु | 14 मार्च 2025 | 13 सितंबर 2026 | तृतीय भाव | एकादश | सम | मिश्रित |
| **गुरु** | **13 सितंबर 2026** | **13 जनवरी 2028** | **तृतीय भाव** | **एकादश** | **सम** | **मिश्रित** |
| शनि | 13 जनवरी 2028 | 13 अगस्त 2029 | सप्तम भाव | तृतीय | सम | मिश्रित |
| बुध | 13 अगस्त 2029 | 13 जनवरी 2031 | प्रथम भाव | नवम | मित्र | सहायक |
| केतु | 13 जनवरी 2031 | 14 अगस्त 2031 | नवम भाव | पंचम | सम | मिश्रित |
| शुक्र | 14 अगस्त 2031 | 14 अप्रैल 2033 | द्वितीय भाव | दशम | सम | मिश्रित |
| सूर्य | 14 अप्रैल 2033 | 13 अक्टूबर 2033 | प्रथम भाव | नवम | मित्र | सहायक |

## ❖ मंगल महादशा · 13 अक्टूबर 2033 – 13 अक्टूबर 2040 (आयु 39–46)

मंगल आपके एकादश भाव में मिथुन राशि में (शत्रु राशि) है। यह चतुर्थ और नवम भावों का स्वामी है, इसलिए पूरी अवधि की पृष्ठभूमि यही विषय बनाते हैं। सबसे सहायक अंतर्दशाएँ: गुरु, शनि, सूर्य और चंद्र। सावधानी माँगने वाली अंतर्दशाएँ: बुध।

| अंतर्दशा | से | तक | स्थिति | महादशा-स्वामी से | संबंध | स्वर |
|---|---|---|---|---|---|---|
| मंगल | 13 अक्टूबर 2033 | 11 मार्च 2034 | एकादश भाव | प्रथम | स्वयं की | मिश्रित |
| राहु | 11 मार्च 2034 | 30 मार्च 2035 | तृतीय भाव | पंचम | सम | मिश्रित |
| गुरु | 30 मार्च 2035 | 5 मार्च 2036 | तृतीय भाव | पंचम | मित्र | सहायक |
| शनि | 5 मार्च 2036 | 14 अप्रैल 2037 | सप्तम भाव | नवम | सम | सहायक |
| बुध | 14 अप्रैल 2037 | 11 अप्रैल 2038 | प्रथम भाव | तृतीय | शत्रु | परिश्रम-साध्य |
| केतु | 11 अप्रैल 2038 | 7 सितंबर 2038 | नवम भाव | एकादश | सम | मिश्रित |
| शुक्र | 7 सितंबर 2038 | 7 नवंबर 2039 | द्वितीय भाव | चतुर्थ | सम | मिश्रित |
| सूर्य | 7 नवंबर 2039 | 14 मार्च 2040 | प्रथम भाव | तृतीय | मित्र | सहायक |
| चंद्र | 14 मार्च 2040 | 13 अक्टूबर 2040 | पंचम भाव | सप्तम | मित्र | सहायक |

## ❖ राहु महादशा · 13 अक्टूबर 2040 – 13 अक्टूबर 2058 (आयु 46–64)

राहु आपके तृतीय भाव में तुला राशि में (छाया ग्रह) है। सबसे सहायक अंतर्दशाएँ: शनि। सावधानी माँगने वाली अंतर्दशाएँ: शुक्र।

| अंतर्दशा | से | तक | स्थिति | महादशा-स्वामी से | संबंध | स्वर |
|---|---|---|---|---|---|---|
| राहु | 13 अक्टूबर 2040 | 26 जून 2043 | तृतीय भाव | प्रथम | स्वयं की | मिश्रित |
| गुरु | 26 जून 2043 | 19 नवंबर 2045 | तृतीय भाव | प्रथम | सम | मिश्रित |
| शनि | 19 नवंबर 2045 | 25 सितंबर 2048 | सप्तम भाव | पंचम | सम | सहायक |
| बुध | 25 सितंबर 2048 | 14 अप्रैल 2051 | प्रथम भाव | एकादश | सम | मिश्रित |
| केतु | 14 अप्रैल 2051 | 1 मई 2052 | नवम भाव | सप्तम | सम | मिश्रित |
| शुक्र | 1 मई 2052 | 2 मई 2055 | द्वितीय भाव | द्वादश | सम | परिश्रम-साध्य |
| सूर्य | 2 मई 2055 | 26 मार्च 2056 | प्रथम भाव | एकादश | सम | मिश्रित |
| चंद्र | 26 मार्च 2056 | 25 सितंबर 2057 | पंचम भाव | तृतीय | सम | मिश्रित |
| मंगल | 25 सितंबर 2057 | 13 अक्टूबर 2058 | एकादश भाव | नवम | सम | मिश्रित |

## ❖ गुरु महादशा · 13 अक्टूबर 2058 – 13 अक्टूबर 2074 (आयु 64–80)

गुरु आपके तृतीय भाव में तुला राशि में (शत्रु राशि) है। यह पंचम और अष्टम भावों का स्वामी है, इसलिए पूरी अवधि की पृष्ठभूमि यही विषय बनाते हैं। सबसे सहायक अंतर्दशाएँ: शनि, सूर्य और मंगल। सावधानी माँगने वाली अंतर्दशाएँ: बुध और शुक्र।

| अंतर्दशा | से | तक | स्थिति | महादशा-स्वामी से | संबंध | स्वर |
|---|---|---|---|---|---|---|
| गुरु | 13 अक्टूबर 2058 | 30 नवंबर 2060 | तृतीय भाव | प्रथम | स्वयं की | मिश्रित |
| शनि | 30 नवंबर 2060 | 14 जून 2063 | सप्तम भाव | पंचम | सम | सहायक |
| बुध | 14 जून 2063 | 19 सितंबर 2065 | प्रथम भाव | एकादश | शत्रु | परिश्रम-साध्य |
| केतु | 19 सितंबर 2065 | 26 अगस्त 2066 | नवम भाव | सप्तम | सम | मिश्रित |
| शुक्र | 26 अगस्त 2066 | 25 अप्रैल 2069 | द्वितीय भाव | द्वादश | शत्रु | परिश्रम-साध्य |
| सूर्य | 25 अप्रैल 2069 | 12 फ़रवरी 2070 | प्रथम भाव | एकादश | मित्र | सहायक |
| चंद्र | 12 फ़रवरी 2070 | 14 जून 2071 | पंचम भाव | तृतीय | मित्र | मिश्रित |
| मंगल | 14 जून 2071 | 20 मई 2072 | एकादश भाव | नवम | मित्र | सहायक |
| राहु | 20 मई 2072 | 13 अक्टूबर 2074 | तृतीय भाव | प्रथम | सम | मिश्रित |

## ❖ शनि महादशा · 13 अक्टूबर 2074 – 3 अक्टूबर 2084 (आयु 80–90)

शनि आपके सप्तम भाव में कुंभ राशि में (स्वराशि) है। यह षष्ठ और सप्तम भावों का स्वामी है, इसलिए पूरी अवधि की पृष्ठभूमि यही विषय बनाते हैं। सबसे सहायक अंतर्दशाएँ: बुध। सावधानी माँगने वाली अंतर्दशाएँ: शुक्र।

| अंतर्दशा | से | तक | स्थिति | महादशा-स्वामी से | संबंध | स्वर |
|---|---|---|---|---|---|---|
| शनि | 13 अक्टूबर 2074 | 16 अक्टूबर 2077 | सप्तम भाव | प्रथम | स्वयं की | सहायक |
| बुध | 16 अक्टूबर 2077 | 25 जून 2080 | प्रथम भाव | सप्तम | मित्र | सहायक |
| केतु | 25 जून 2080 | 4 अगस्त 2081 | नवम भाव | तृतीय | सम | मिश्रित |
| शुक्र | 4 अगस्त 2081 | 3 अक्टूबर 2084 | द्वितीय भाव | अष्टम | मित्र | परिश्रम-साध्य |



# प्रत्यंतर दशा सारणी: अगले 3 वर्ष

यह आपसे कैसे जुड़ता है: "प्रत्यंतर दशा सारणी: अगले 3 वर्ष" धनु राशि के साहसिक चंद्र वाले उदार-हृदय सिंह लग्न के व्यक्ति के एक और पहलू को देखता है; इससे शांत सप्ताहों की योजना बनाएँ, क्योंकि आप तनाव में तुरंत कुछ करना चाहते हैं।

प्रत्यंतर दशा विंशोत्तरी समय का तीसरा स्तर है, जो कुछ दिनों से कुछ महीनों तक चलती है। नीचे की सारणियाँ अगले 3 वर्षों में चलने वाली हर उस अंतर्दशा को दिखाती हैं जो दशा अध्याय में दी गई दो सारणियों के बाद आती है। हर प्रत्यंतर का आकलन ऊपर की तरह उसके अंतर्दशा-स्वामी के सापेक्ष किया गया है, और केंद्र-विषय वह भाव है जिसमें प्रत्यंतर-स्वामी आपकी कुंडली में बैठा है।

### ❖ चंद्र / बुध के भीतर प्रत्यंतर दशाएँ · अगस्त 2029 – जनवरी 2031

श्रेष्ठ समय: सूर्य (फ़रवरी 2030) और शनि (अक्टूबर 2030)। यहाँ कोई प्रत्यंतर स्पष्ट रूप से कठिन नहीं है।

| प्रत्यंतर | से | तक | केंद्र-विषय | स्वर |
|---|---|---|---|---|
| बुध | 13 अगस्त 2029 | 26 अक्टूबर 2029 | प्रथम भाव: स्वयं और स्वास्थ्य | मिश्रित |
| केतु | 26 अक्टूबर 2029 | 25 नवंबर 2029 | नवम भाव: भाग्य और गुरु | मिश्रित |
| शुक्र | 25 नवंबर 2029 | 19 फ़रवरी 2030 | द्वितीय भाव: धन और परिवार | मिश्रित |
| सूर्य | 19 फ़रवरी 2030 | 17 मार्च 2030 | प्रथम भाव: स्वयं और स्वास्थ्य | सहायक |
| चंद्र | 17 मार्च 2030 | 29 अप्रैल 2030 | पंचम भाव: संतान और बुद्धि | मिश्रित |
| मंगल | 29 अप्रैल 2030 | 29 मई 2030 | एकादश भाव: लाभ और नेटवर्क | मिश्रित |
| राहु | 29 मई 2030 | 15 अगस्त 2030 | तृतीय भाव: पराक्रम और भाई-बहन | मिश्रित |
| गुरु | 15 अगस्त 2030 | 23 अक्टूबर 2030 | तृतीय भाव: पराक्रम और भाई-बहन | मिश्रित |
| शनि | 23 अक्टूबर 2030 | 13 जनवरी 2031 | सप्तम भाव: विवाह और साझेदार | सहायक |

# योगिनी दशा

यह आपसे कैसे जुड़ता है: "योगिनी दशा" धनु राशि के साहसिक चंद्र वाले उदार-हृदय सिंह लग्न के व्यक्ति के एक और पहलू को देखता है; इसे किसी वर्तमान निर्णय को ध्यान में रखकर पढ़ें।

योगिनी दशा दूसरी पारंपरिक समय-पद्धति है, जिसे प्रायः विंशोत्तरी के साथ देखा जाता है। इसकी आठ योगिनियाँ, प्रत्येक एक ग्रह से जुड़ी, 36 वर्ष के चक्र में 1 से 8 वर्ष तक चलती हैं, जो जन्म-नक्षत्र से आरंभ होता है। आपका क्रम उल्का (शनि) से आरंभ हुआ, और जन्म के समय इसके 2.7 वर्ष शेष थे।

| योगिनी | ग्रह | से | तक | वर्ष |
|---|---|---|---|---|
| उल्का | शनि | 17 अगस्त 1994 | 2 मई 1997 | 2.7 |
| सिद्धा | शुक्र | 2 मई 1997 | 1 मई 2004 | 7.0 |
| संकटा | राहु | 1 मई 2004 | 1 मई 2012 | 8.0 |
| मंगला | चंद्र | 1 मई 2012 | 2 मई 2013 | 1.0 |
| पिंगला | सूर्य | 2 मई 2013 | 2 मई 2015 | 2.0 |
| धान्या | गुरु | 2 मई 2015 | 2 मई 2018 | 3.0 |
| भ्रामरी | मंगल | 2 मई 2018 | 2 मई 2022 | 4.0 |
| **भद्रिका** | **बुध** | **2 मई 2022** | **2 मई 2027** | **5.0** |
| उल्का | शनि | 2 मई 2027 | 1 मई 2033 | 6.0 |
| सिद्धा | शुक्र | 1 मई 2033 | 1 मई 2040 | 7.0 |
| संकटा | राहु | 1 मई 2040 | 1 मई 2048 | 8.0 |
| मंगला | चंद्र | 1 मई 2048 | 1 मई 2049 | 1.0 |
| पिंगला | सूर्य | 1 मई 2049 | 2 मई 2051 | 2.0 |
| धान्या | गुरु | 2 मई 2051 | 1 मई 2054 | 3.0 |
| भ्रामरी | मंगल | 1 मई 2054 | 1 मई 2058 | 4.0 |
| भद्रिका | बुध | 1 मई 2058 | 2 मई 2063 | 5.0 |
| उल्का | शनि | 2 मई 2063 | 1 मई 2069 | 6.0 |
| सिद्धा | शुक्र | 1 मई 2069 | 1 मई 2076 | 7.0 |
| संकटा | राहु | 1 मई 2076 | 1 मई 2084 | 8.0 |
| मंगला | चंद्र | 1 मई 2084 | 1 मई 2085 | 1.0 |

### ❖ भद्रिका (बुध) · मई 2022 – मई 2027

परंपरा में यह अवधि इन बातों से जुड़ी है: मित्रता, व्यापार, अध्ययन और सुखद प्रगति। इसका ग्रह बुध आपके प्रथम भाव में है (मित्र राशि), इसलिए ये विषय स्वयं और स्वास्थ्य के माध्यम से प्रकट होते हैं।

इसी समय विंशोत्तरी में चंद्र/मंगल चल रही है; दोनों को साथ पढ़ें: विंशोत्तरी मुख्य कथा दिखाती है, योगिनी उसकी पृष्ठभूमि का स्वर।

### ❖ उल्का (शनि) · मई 2027 – मई 2033

परंपरा में यह अवधि इन बातों से जुड़ी है: कठिन परिश्रम, ज़िम्मेदारी और ऐसा दबाव जो सहनशक्ति बढ़ाता है। इसका ग्रह शनि आपके सप्तम भाव में है (स्वराशि), इसलिए ये विषय विवाह और साझेदार के माध्यम से प्रकट होते हैं।

इसी समय विंशोत्तरी में चंद्र/बुध चल रही है; दोनों को साथ पढ़ें: विंशोत्तरी मुख्य कथा दिखाती है, योगिनी उसकी पृष्ठभूमि का स्वर।

### ❖ सिद्धा (शुक्र) · मई 2033 – मई 2040

परंपरा में यह अवधि इन बातों से जुड़ी है: सफलता, सुख-सुविधा, साझेदारी और कलात्मक संतोष। इसका ग्रह शुक्र आपके द्वितीय भाव में है (नीच), इसलिए ये विषय धन और परिवार के माध्यम से प्रकट होते हैं।

इसी समय विंशोत्तरी में मंगल/शनि चल रही है; दोनों को साथ पढ़ें: विंशोत्तरी मुख्य कथा दिखाती है, योगिनी उसकी पृष्ठभूमि का स्वर।

### ❖ संकटा (राहु) · मई 2040 – मई 2048

परंपरा में यह अवधि इन बातों से जुड़ी है: परीक्षा भरी परिस्थितियाँ और अचानक बदलाव; धैर्य और विवेक रक्षा करते हैं। इसका ग्रह राहु आपके तृतीय भाव में है (छाया ग्रह), इसलिए ये विषय पराक्रम और भाई-बहन के माध्यम से प्रकट होते हैं।

इसी समय विंशोत्तरी में राहु/गुरु चल रही है; दोनों पद्धतियाँ एक ही ग्रह की ओर संकेत करती हैं, जिससे ज़ोर बढ़ता है।



## गोचर समय-रेखा: अगले 24 महीने

यह आपसे कैसे जुड़ता है: "गोचर समय-रेखा: अगले 24 महीने" धनु राशि के साहसिक चंद्र वाले उदार-हृदय सिंह लग्न के व्यक्ति के एक और पहलू को देखता है; वे हिस्से रखें जो आपके अपने बारे में पहले से जाने हुए से मेल खाते हैं।

यह समय-रेखा अक्टूबर 2026 से अक्टूबर 2028 तक आपकी राशियों में शनि, गुरु, राहु और केतु की चाल दिखाती है। भाव चंद्र से (पारंपरिक गोचर पद्धति) और लग्न से गिने गए हैं; अष्टकवर्ग बिंदु बताते हैं कि हर राशि आपके लिए कितनी सहायक है।

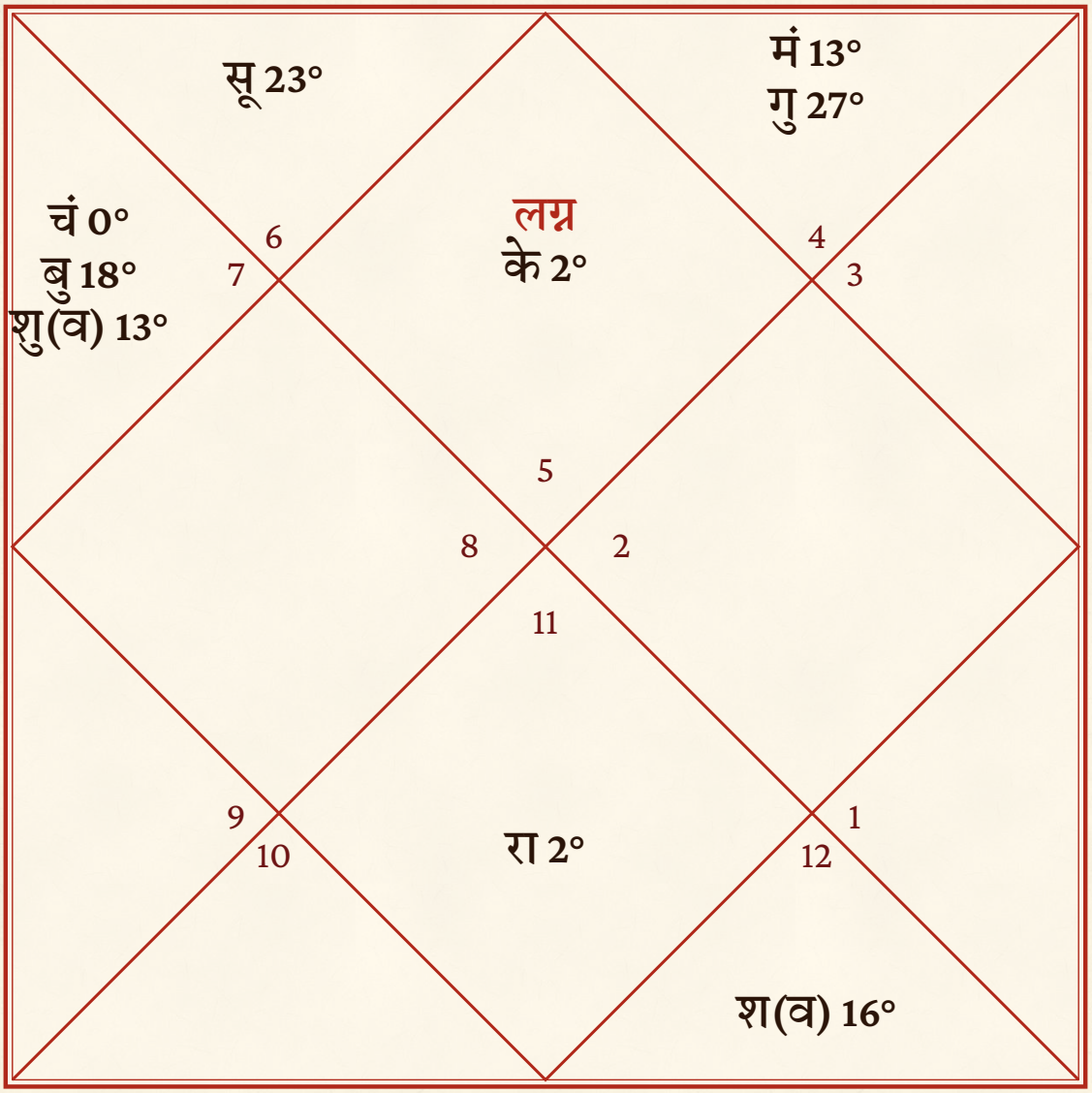


**वर्तमान गोचर, उत्तरी शैली (भाव जन्म-लग्न से)**

| | | | |
|---|---|---|---|
| मीन<br>श(व) 16° | मेष | वृषभ | मिथुन |
| कुंभ<br>रा 2°<br>मकर | वर्तमान गोचर, दक्षिणी शैली | | कर्क<br>मं 13°<br>गु 27°<br>सिंह<br>लग्न<br>के 2° |
| धनु | वृश्चिक | तुला<br>चं 0°<br>बु 18°<br>शु(व) 13° | कन्या<br>सू 23° |

**वर्तमान गोचर, दक्षिणी शैली**

यह चक्र दिखाता है कि रिपोर्ट की तिथि पर ग्रह कहाँ हैं, आपके जन्म-लग्न से गिने हुए। यह आकाश का एक चित्र है, भविष्यवाणी नहीं। इसे रिपोर्ट के आरंभ की जन्म कुंडली से मिलाएँ।

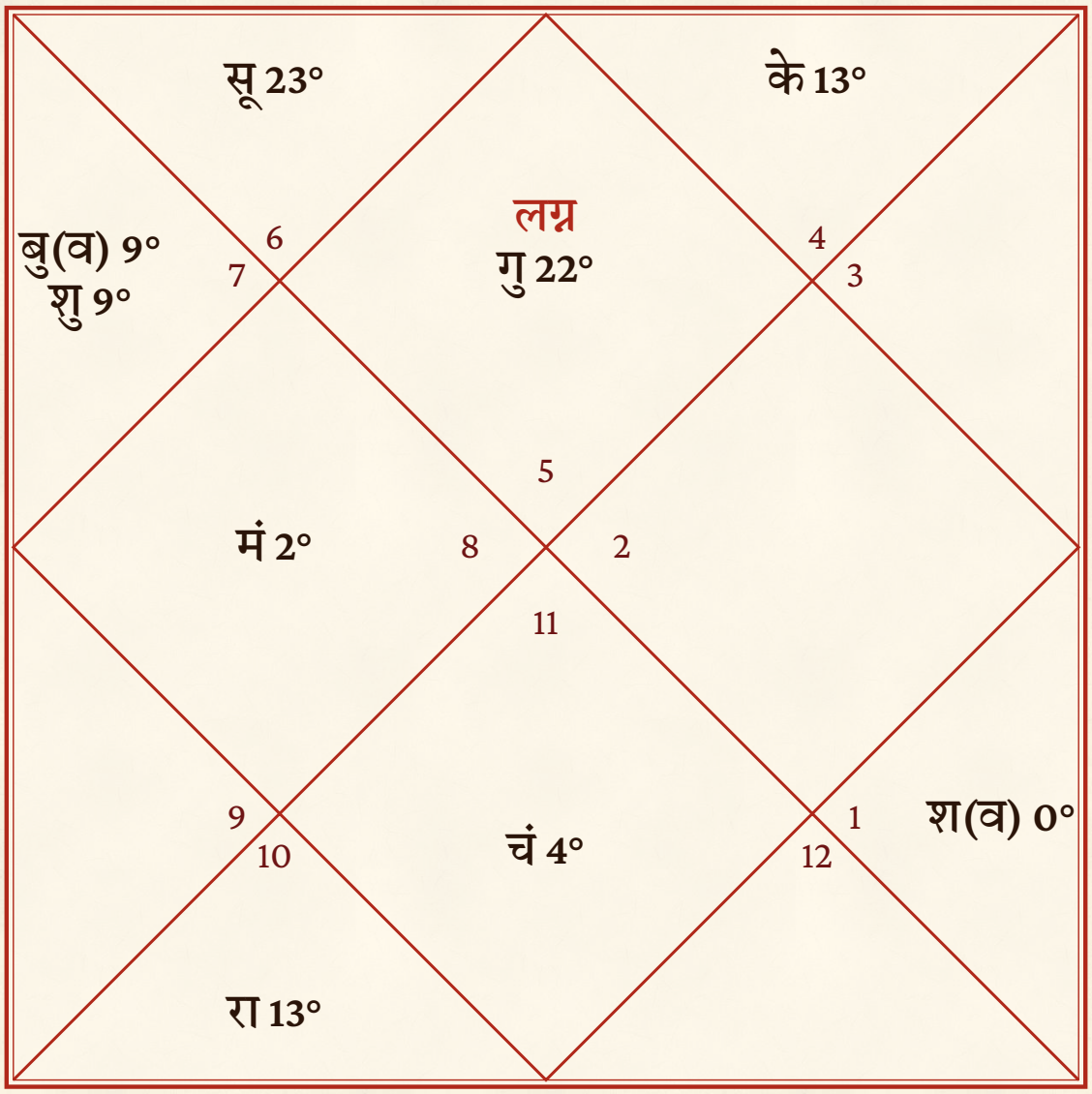


**रिपोर्ट तिथि से लगभग बारह महीने बाद का गोचर, उत्तरी शैली**

यही गोचर चक्र, रिपोर्ट तिथि के लगभग एक वर्ष बाद के लिए, ताकि आप देख सकें कि धीमे ग्रह कितने खिसक चुके होंगे। इसे बदलते पृष्ठभूमि के मानचित्र की तरह उपयोग करें, घटनाओं के पंचांग की तरह नहीं।

| ग्रह | राशि | से | तक | चंद्र से | लग्न से | सर्वा. | स्वर |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| शनि | मीन | 11 अक्टूबर 2026 | 3 जून 2027 | चतुर्थ | अष्टम | 25 | मिश्रित |
| शनि | मेष | 3 जून 2027 | 20 अक्टूबर 2027 | पंचम | नवम | 28 | मिश्रित |
| शनि | मीन | 20 अक्टूबर 2027 | 23 फ़रवरी 2028 | चतुर्थ | अष्टम | 25 | मिश्रित |
| शनि | मेष | 23 फ़रवरी 2028 | 11 अक्टूबर 2028 | पंचम | नवम | 28 | मिश्रित |
| गुरु | कर्क | 11 अक्टूबर 2026 | 31 अक्टूबर 2026 | अष्टम | द्वादश | 26 | मिश्रित |
| गुरु | सिंह | 31 अक्टूबर 2026 | 25 जनवरी 2027 | नवम | प्रथम | 29 | सहायक |
| गुरु | कर्क | 25 जनवरी 2027 | 26 जून 2027 | अष्टम | द्वादश | 26 | मिश्रित |
| गुरु | सिंह | 26 जून 2027 | 26 नवंबर 2027 | नवम | प्रथम | 29 | सहायक |
| गुरु | कन्या | 26 नवंबर 2027 | 28 फ़रवरी 2028 | दशम | द्वितीय | 24 | मिश्रित |
| गुरु | सिंह | 28 फ़रवरी 2028 | 24 जुलाई 2028 | नवम | प्रथम | 29 | सहायक |
| गुरु | कन्या | 24 जुलाई 2028 | 11 अक्टूबर 2028 | दशम | द्वितीय | 24 | मिश्रित |

| ग्रह | राशि | से | तक | चंद्र से | लग्न से | सर्वा. | स्वर |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| राहु | कुंभ | 11 अक्टूबर 2026 | 5 दिसंबर 2026 | तृतीय | सप्तम | 25 | सहायक |
| राहु | मकर | 5 दिसंबर 2026 | 24 जून 2028 | द्वितीय | षष्ठ | 29 | मिश्रित |
| राहु | धनु | 24 जून 2028 | 11 अक्टूबर 2028 | प्रथम | पंचम | 26 | मिश्रित |
| केतु | सिंह | 11 अक्टूबर 2026 | 5 दिसंबर 2026 | नवम | प्रथम | 29 | मिश्रित |
| केतु | कर्क | 5 दिसंबर 2026 | 24 जून 2028 | अष्टम | द्वादश | 26 | मिश्रित |
| केतु | मिथुन | 24 जून 2028 | 11 अक्टूबर 2028 | सप्तम | एकादश | 36 | मिश्रित |

### ❖ शनि मीन में · अक्टूबर 2026 – जून 2027

चंद्र से चौथे शनि (कंटक): घर और संपत्ति के मामलों में धैर्य; माता और मन की शांति का ध्यान रखें। लग्न से यह आपके अष्टम भाव (रूपांतरण और विरासत) से गुज़रता है। आपकी कुंडली में मीन राशि में 25 सर्वाष्टकवर्ग बिंदु हैं (औसत)। शनि के अपने अष्टकवर्ग में वहाँ 8 में से 4 बिंदु हैं। वहाँ से शनि की दृष्टि आपके द्वितीय भाव, पंचम भाव और दशम भाव पर है।

### ❖ शनि मेष में · जून 2027 – अक्टूबर 2027

चंद्र से पाँचवें शनि: संतान या पढ़ाई की चिंता और गंभीर चिंतन; सट्टे से बचें। लग्न से यह आपके नवम भाव (भाग्य और गुरु) से गुज़रता है। आपकी कुंडली में मेष राशि में 28 सर्वाष्टकवर्ग बिंदु हैं (औसत)। शनि के अपने अष्टकवर्ग में वहाँ 8 में से 3 बिंदु हैं। वहाँ से शनि की दृष्टि आपके तृतीय भाव, षष्ठ भाव और एकादश भाव पर है।

### ❖ गुरु कर्क में · अक्टूबर 2026

चंद्र से आठवें गुरु: बाधाएँ और धीमी प्रगति; धन और स्वास्थ्य में सावधानी। लग्न से यह आपके द्वादश भाव (व्यय और मोक्ष) से गुज़रता है। आपकी कुंडली में कर्क राशि में 26 सर्वाष्टकवर्ग बिंदु हैं (औसत)। गुरु के अपने अष्टकवर्ग में वहाँ 8 में से 4 बिंदु हैं। वहाँ से गुरु की दृष्टि आपके चतुर्थ भाव, षष्ठ भाव और अष्टम भाव पर है।

### ❖ गुरु सिंह में · अक्टूबर 2026 – जनवरी 2027

चंद्र से नौवें गुरु: भाग्य, आशीर्वाद, तीर्थ और उच्च शिक्षा। लग्न से यह आपके प्रथम भाव (स्वयं और स्वास्थ्य) से गुज़रता है। आपकी कुंडली में सिंह राशि में 29 सर्वाष्टकवर्ग बिंदु हैं (औसत)। गुरु के अपने अष्टकवर्ग में वहाँ 8 में से 5 बिंदु हैं। वहाँ से गुरु की दृष्टि आपके पंचम भाव, सप्तम भाव और नवम भाव पर है।

### ❖ गुरु कन्या में · नवंबर 2027 – फ़रवरी 2028

चंद्र से दसवें गुरु: करियर और ज़िम्मेदारियों में बदलाव; प्रतिष्ठा स्वच्छ रखें। लग्न से यह आपके द्वितीय भाव (धन और परिवार) से गुज़रता है। आपकी कुंडली में कन्या राशि में 24 सर्वाष्टकवर्ग बिंदु हैं (औसत से कम)। वहाँ से गुरु की दृष्टि आपके षष्ठ भाव, अष्टम भाव और दशम भाव पर है।

### ❖ राहु कुंभ में · अक्टूबर 2026 – दिसंबर 2026

चंद्र से तीसरे राहु: सहायक गोचर; साहसी कदम, मीडिया और तकनीक सफल। लग्न से यह आपके सप्तम भाव (विवाह और साझेदार) से गुज़रता है। आपकी कुंडली में कुंभ राशि में 25 सर्वाष्टकवर्ग बिंदु हैं (औसत)। वहाँ से राहु की दृष्टि आपके प्रथम भाव, तृतीय भाव और एकादश भाव पर है।

### ❖ राहु मकर में · दिसंबर 2026 – जून 2028

चंद्र से दूसरे राहु: अनियमित धन और मुखर वाणी; पारिवारिक सौहार्द की रक्षा करें। लग्न से यह आपके षष्ठ भाव (सेवा और बाधाएँ) से गुज़रता है। आपकी कुंडली में मकर राशि में 29 सर्वाष्टकवर्ग बिंदु हैं (औसत)। वहाँ से राहु की दृष्टि आपके द्वितीय भाव, दशम भाव और द्वादश भाव पर है।

### ❖ राहु धनु में · जून 2028 – अक्टूबर 2028

चंद्र पर राहु: बेचैन मन, महत्वाकांक्षा और असामान्य अवसर; स्वयं को स्थिर रखें। लग्न से यह आपके पंचम भाव (संतान और बुद्धि) से गुज़रता है। आपकी कुंडली में धनु राशि में 26 सर्वाष्टकवर्ग बिंदु हैं (औसत)। वहाँ से राहु की दृष्टि आपके प्रथम भाव, नवम भाव और एकादश भाव पर है।

### ❖ केतु सिंह में · अक्टूबर 2026 – दिसंबर 2026

चंद्र से नौवें केतु: गुरुओं पर प्रश्न और आंतरिक तीर्थ। वहाँ से केतु की दृष्टि आपके पंचम भाव, सप्तम भाव और नवम भाव पर है।

### ❖ केतु कर्क में · दिसंबर 2026 – जून 2028

चंद्र से आठवें केतु: शोध, गूढ़ रुचियाँ और अप्रत्याशित परिवर्तन। वहाँ से केतु की दृष्टि आपके चतुर्थ भाव, षष्ठ भाव और अष्टम भाव पर है।

### ❖ केतु मिथुन में · जून 2028 – अक्टूबर 2028

चंद्र से सातवें केतु: साझेदारी में दूरी या आदर्शवाद। लग्न से यह आपके एकादश भाव (लाभ और नेटवर्क) से गुज़रता है। आपकी कुंडली में मिथुन राशि में 36 सर्वाष्टकवर्ग बिंदु हैं (प्रबल)। वहाँ से केतु की दृष्टि आपके तृतीय भाव, पंचम भाव और सप्तम भाव पर है।

### ❖ वक्री चरण

गुरु या शनि के वक्री होने पर उनके विषयों की समीक्षा होती है और टले हुए निर्णय फिर सामने आते हैं।

| ग्रह | से | तक | राशि |
|---|---|---|---|
| शनि | 11 अक्टूबर 2026 | 12 दिसंबर 2026 | मीन |
| शनि | 11 अगस्त 2027 | 25 दिसंबर 2027 | मेष |
| शनि | 23 अगस्त 2028 | 11 अक्टूबर 2028 | मेष |
| गुरु | 14 दिसंबर 2026 | 13 अप्रैल 2027 | सिंह |
| गुरु | 14 जनवरी 2028 | 15 मई 2028 | कन्या |

### ❖ जन्म-ग्रहों से सटीक संपर्क

ये वे तिथियाँ हैं जब कोई धीमा ग्रह किसी जन्म-ग्रह से एक अंश के भीतर आता है, हर गोचर के सबसे संवेदनशील क्षण।

| तिथि | गोचर ग्रह | जन्म ग्रह | विषय |
|---|---|---|---|
| 26 अक्टूबर 2026 | गुरु | सूर्य | गुरु आपकी मूल पहचान का विस्तार और संरक्षण करता है |
| 15 जनवरी 2027 | गुरु | सूर्य | गुरु आपकी मूल पहचान का विस्तार और संरक्षण करता है |
| 23 जून 2027 | गुरु | सूर्य | गुरु आपकी मूल पहचान का विस्तार और संरक्षण करता है |
| 17 जुलाई 2027 | गुरु | बुध | गुरु आपकी सोच का विस्तार और संरक्षण करता है |
| 9 अक्टूबर 2028 | गुरु | शुक्र | गुरु आपके स्नेह का विस्तार और संरक्षण करता है |

अभी आप साढ़े साती में नहीं हैं; अगला चक्र लगभग दिसंबर 2043 से फ़रवरी 2052 तक है।

# जीवन भर साढ़े साती और ढैया

यह आपसे कैसे जुड़ता है: “जीवन भर साढ़े साती और ढैया” धनु राशि के साहसिक चंद्र वाले उदार-हृदय सिंह लग्न के व्यक्ति के एक और पहलू को देखता है; इसे किसी क़रीबी व्यक्ति से बातचीत की शुरुआत बनाएँ।

शनि लगभग हर साढ़े उनतीस वर्ष में आपकी चंद्र राशि पर लौटता है, इसलिए अधिकांश लोग दो या तीन बार साढ़े साती से गुज़रते हैं। सभी चक्रों और शनि की ढाई वर्ष की ढैया (चंद्र से चौथे और आठवें) की पूरी सूची नीचे है।

| चक्र | चरण | राशि | से | तक | आयु |
|---|---|---|---|---|---|
| 1 | प्रथम (उदय) चरण | वृश्चिक | 2 नवंबर 2014 | 26 जनवरी 2017 | 20–22 |
| 1 | द्वितीय (शिखर) चरण | धनु | 26 जनवरी 2017 | 21 जून 2017 | 22 |
| 1 | प्रथम (उदय) चरण | वृश्चिक | 21 जून 2017 | 26 अक्टूबर 2017 | 22–23 |
| 1 | द्वितीय (शिखर) चरण | धनु | 26 अक्टूबर 2017 | 24 जनवरी 2020 | 23–25 |
| 1 | तृतीय (अस्त) चरण | मकर | 24 जनवरी 2020 | 29 अप्रैल 2022 | 25–27 |
| 1 | तृतीय (अस्त) चरण | मकर | 12 जुलाई 2022 | 17 जनवरी 2023 | 27–28 |
| 2 | प्रथम (उदय) चरण | वृश्चिक | 11 दिसंबर 2043 | 23 जून 2044 | 49 |
| 2 | प्रथम (उदय) चरण | वृश्चिक | 30 अगस्त 2044 | 8 दिसंबर 2046 | 50–52 |
| 2 | द्वितीय (शिखर) चरण | धनु | 8 दिसंबर 2046 | 6 मार्च 2049 | 52–54 |
| 2 | तृतीय (अस्त) चरण | मकर | 6 मार्च 2049 | 10 जुलाई 2049 | 54 |
| 2 | द्वितीय (शिखर) चरण | धनु | 10 जुलाई 2049 | 4 दिसंबर 2049 | 54–55 |
| 2 | तृतीय (अस्त) चरण | मकर | 4 दिसंबर 2049 | 25 फ़रवरी 2052 | 55–57 |
| 3 | प्रथम (उदय) चरण | वृश्चिक | 5 फ़रवरी 2073 | 31 मार्च 2073 | 78 |
| 3 | प्रथम (उदय) चरण | वृश्चिक | 23 अक्टूबर 2073 | 16 जनवरी 2076 | 79–81 |
| 3 | द्वितीय (शिखर) चरण | धनु | 16 जनवरी 2076 | 11 जुलाई 2076 | 81 |
| 3 | प्रथम (उदय) चरण | वृश्चिक | 11 जुलाई 2076 | 11 अक्टूबर 2076 | 81–82 |
| 3 | द्वितीय (शिखर) चरण | धनु | 11 अक्टूबर 2076 | 15 जनवरी 2079 | 82–84 |
| 3 | तृतीय (अस्त) चरण | मकर | 15 जनवरी 2079 | 12 अप्रैल 2081 | 84–86 |
| 3 | तृतीय (अस्त) चरण | मकर | 3 अगस्त 2081 | 7 जनवरी 2082 | 87 |

| चरण | राशि | से | तक | आयु |
|---|---|---|---|---|
| कंटक शनि | मीन | 2 जून 1995 | 10 अगस्त 1995 | 0 |
| कंटक शनि | मीन | 16 फ़रवरी 1996 | 17 अप्रैल 1998 | 1–3 |
| अष्टम शनि | कर्क | 6 सितंबर 2004 | 13 जनवरी 2005 | 10 |
| अष्टम शनि | कर्क | 26 मई 2005 | 1 नवंबर 2006 | 10–12 |
| अष्टम शनि | कर्क | 10 जनवरी 2007 | 16 जुलाई 2007 | 12 |
| कंटक शनि | मीन | 29 मार्च 2025 | 3 जून 2027 | 30–32 |
| कंटक शनि | मीन | 20 अक्टूबर 2027 | 23 फ़रवरी 2028 | 33 |
| अष्टम शनि | कर्क | 13 जुलाई 2034 | 27 अगस्त 2036 | 39–42 |

# मासिक दृष्टि (12 महीने)

यह आपसे कैसे जुड़ता है: "मासिक दृष्टि (12 महीने)" धनु राशि के साहसिक चंद्र वाले उदार-हृदय सिंह लग्न के व्यक्ति के एक और पहलू को देखता है; इसमें सुझाया एक व्यावहारिक क़दम चुनें और इसी महीने आज़माएँ।

अगले 12 महीने, चंद्र से: सूर्य की मासिक राशि मुख्य विषय तय करती है, तेज़ ग्रह राशि बदलने पर रंग जोड़ते हैं, और चल रही दशा / अंतर्दशा / प्रत्यंतर बताती है कि कुंडली का कौन-सा भाग सक्रिय है।

### ❖ अक्टूबर 2026

अवसरों और माँगों वाला मिश्रित महीना। सूर्य कन्या में: चंद्र से दसवें सूर्य करियर में प्रगति और मान्यता का साथ देता है। कर्क में: चंद्र से आठवें मंगल वाहन, औज़ार और जोखिम में सावधानी माँगता है। तुला में: चंद्र से ग्यारहवें शुक्र लाभ और सामाजिक आनंद लाता है। तुला में: चंद्र से ग्यारहवें बुध संपर्कों से लाभ लाता है। चल रही अवधि चंद्र/गुरु/गुरु: प्रत्यंतर-स्वामी आपके तृतीय भाव (पराक्रम और भाई-बहन) को सक्रिय करता है। इस महीने तेज़ ग्रह आपके मुख्य भावों (द्वितीय भाव) से गुज़रते हैं।

### ❖ नवंबर 2026

अवसरों और माँगों वाला मिश्रित महीना। सूर्य तुला में: चंद्र से ग्यारहवें सूर्य लाभ और वरिष्ठों का सहयोग लाता है। सिंह में: चंद्र से नौवें मंगल विश्वासों पर बहस ला सकता है। कन्या में: चंद्र से दसवें शुक्र कार्यस्थल पर सुखद संबंध लाता है। गुरु सिंह में प्रवेश करता है, जो चंद्र से आपका नवम भाव है।

### ❖ दिसंबर 2026

अवसरों और माँगों वाला मिश्रित महीना। सूर्य वृश्चिक में: चंद्र से बारहवें सूर्य विश्राम, योजना और शांत कार्य के अनुकूल है। वृश्चिक में: चंद्र से बारहवें बुध दस्तावेज़ों में सावधानी माँगता है। चल रही अवधि चंद्र/गुरु/शनि: प्रत्यंतर-स्वामी आपके सप्तम भाव (विवाह और साझेदार) को सक्रिय करता है।

### ❖ जनवरी 2027

अवसरों और माँगों वाला मिश्रित महीना। सूर्य मकर में: चंद्र से दूसरे सूर्य धन और परिवार में वाणी को केंद्र में रखता है। वृश्चिक में: चंद्र से बारहवें शुक्र सुख, यात्रा और उदार व्यय लाता है। मकर में: चंद्र से दूसरे बुध शब्दों और व्यापार से कमाई में सहायक है।

### ❖ फ़रवरी 2027

अवसरों और माँगों वाला मिश्रित महीना। सूर्य कुंभ में: चंद्र से तीसरे सूर्य पहल और प्रतिद्वंद्वियों पर सफलता का साथ देता है। धनु में: चंद्र पर शुक्र आनंद, आकर्षण और सामाजिक सहजता लाता है। कुंभ में: चंद्र से तीसरे बुध ध्यान को बहुत से कामों में बिखेर सकता है। गुरु कर्क में प्रवेश करता है, जो चंद्र से आपका अष्टम भाव है। चल रही अवधि चंद्र/गुरु/बुध: प्रत्यंतर-स्वामी आपके प्रथम भाव (स्वयं और स्वास्थ्य) को सक्रिय करता है। इस महीने तेज़ ग्रह आपके मुख्य भावों (पंचम भाव) से गुज़रते हैं।

### ❖ मार्च 2027

अवसरों और माँगों वाला मिश्रित महीना। मकर में: चंद्र से दूसरे शुक्र आय और पारिवारिक आनंद के अनुकूल है।

### ❖ अप्रैल 2027

अवसरों और माँगों वाला मिश्रित महीना। सूर्य मेष में: चंद्र से पाँचवें सूर्य संतान, अध्ययन और रचनात्मक कार्य पर ध्यान लाता है। कुंभ में: चंद्र से तीसरे शुक्र सुखद छोटी यात्राओं और रचनात्मक शौक का साथ देता है। मीन में: चंद्र से चौथे बुध अध्ययन और पारिवारिक चर्चाओं

का साथ देता है। चल रही अवधि चंद्र/गुरु/केतु: प्रत्यंतर-स्वामी आपके नवम भाव (भाग्य और गुरु) को सक्रिय करता है। इस महीने तेज़ ग्रह आपके मुख्य भावों (नवम भाव) से गुज़रते हैं।

### ❖ मई 2027

अवसरों और माँगों वाला मिश्रित महीना। मेष में: चंद्र से पाँचवें शुक्र प्रेम और सृजन के अनुकूल है। वृषभ में: चंद्र से छठे बुध समस्या-समाधान को तीक्ष्ण करता है। चल रही अवधि चंद्र/गुरु/शुक्र: प्रत्यंतर-स्वामी आपके द्वितीय भाव (धन और परिवार) को सक्रिय करता है।

### ❖ जून 2027

धैर्य और सावधानी माँगने वाला महीना। सूर्य वृषभ में: चंद्र से छठे सूर्य बाधाओं पर विजय और लंबित काम निपटाने में सहायक है। वृषभ में: चंद्र से छठे शुक्र भोग-विलास में संयम माँगता है। मिथुन में: चंद्र से सातवें बुध वार्ताएँ और समझौते लाता है। शनि मेष में प्रवेश करता है, जो चंद्र से आपका पंचम भाव है।

### ❖ जुलाई 2027

धैर्य और सावधानी माँगने वाला महीना। सूर्य मिथुन में: चंद्र से सातवें सूर्य साझेदारों और यात्रा को उभारता है। कन्या में: चंद्र से दसवें मंगल कड़ी मेहनत और महत्वाकांक्षा को प्रेरित करता है। मिथुन में: चंद्र से सातवें शुक्र साझेदारी में जीवंतता लाता है, यद्यपि ईर्ष्या भी जगा सकता है। इस महीने तेज़ ग्रह आपके मुख्य भावों (एकादश भाव और द्वितीय भाव) से गुज़रते हैं।

### ❖ अगस्त 2027

अवसरों और माँगों वाला मिश्रित महीना। सूर्य कर्क में: चंद्र से आठवें सूर्य स्वास्थ्य और छिपे मामलों में सावधानी की सलाह देता है। कर्क में: चंद्र से आठवें शुक्र अप्रत्याशित उपहार या साझा संसाधन ला सकता है। सिंह में: चंद्र से नौवें बुध योजनाओं में बदलाव ला सकता है। चल रही अवधि चंद्र/गुरु/सूर्य: प्रत्यंतर-स्वामी आपके प्रथम भाव (स्वयं और स्वास्थ्य) को सक्रिय करता है।

### ❖ सितंबर 2027

अवसरों और माँगों वाला मिश्रित महीना। सूर्य सिंह में: चंद्र से नौवें सूर्य बड़ों, गुरुओं और सिद्धांतों से जुड़े प्रसंग लाता है। तुला में: चंद्र से ग्यारहवें मंगल प्रयास से लाभ में सहायक है। कन्या में: चंद्र से दसवें बुध कार्यस्थल पर संवाद के लिए उत्पादक है। चल रही अवधि चंद्र/गुरु/चंद्र: प्रत्यंतर-स्वामी आपके पंचम भाव (संतान और बुद्धि) को सक्रिय करता है।

# पारंपरिक उपाय (वैकल्पिक)

> यह आपके लिए क्यों मायने रखता है: ये वैकल्पिक अभ्यास आपकी कुंडली के उन हिस्सों के लिए चुने गए हैं जिन्हें देखभाल चाहिए; बहुत से नहीं, अपनी दिनचर्या में फ़िट होने वाला एक चुनें।

उपाय निर्बल, पीड़ित या वर्तमान में चल रहे ग्रहों के लिए वैकल्पिक पारंपरिक अभ्यास हैं। इन्हें नीचे आपकी कुंडली से चुना गया है। इनमें समय और ध्यान के अतिरिक्त कुछ नहीं लगता।

| ग्रह | सुझाव का कारण |
|---|---|
| गुरु | शत्रु राशि में; षड्बल में सबसे निर्बलों में; वर्तमान अंतर्दशा स्वामी; इस रिपोर्ट के विषय का कारक |
| मंगल | शत्रु राशि में; षड्बल में सबसे निर्बलों में |
| बुध | अस्त (सूर्य के बहुत निकट) |
| शुक्र | नीच राशि में |
| चंद्र | वर्तमान महादशा स्वामी |

### ❖ गुरु के लिए

पारंपरिक रूप से संबद्ध देवता: बृहस्पति / दक्षिणामूर्ति। दिन: गुरुवार। दान: हल्दी, चने की दाल या पुस्तकों का दान, शिक्षकों की सेवा। आदत: अध्ययन, मार्गदर्शन और भोजन में संयम। मंत्र (वैकल्पिक): ॐ गुरवे नमः।

### ❖ मंगल के लिए

पारंपरिक रूप से संबद्ध देवता: हनुमान / कार्तिकेय। दिन: मंगलवार। दान: लाल मसूर का दान, भाई-बहनों की सहायता, सैनिकों या खिलाड़ियों का सहयोग। आदत: ज़ोरदार व्यायाम और क्रोध-प्रबंधन। मंत्र (वैकल्पिक): ॐ मङ्गलाय नमः।

### ❖ बुध के लिए

पारंपरिक रूप से संबद्ध देवता: विष्णु। दिन: बुधवार। दान: हरी मूँग, पुस्तकें या लेखन-सामग्री का दान, विद्यार्थियों की सहायता। आदत: पठन, पहेलियाँ और सावधान वाणी। मंत्र (वैकल्पिक): ॐ बुधाय नमः।

### ❖ शुक्र के लिए

पारंपरिक रूप से संबद्ध देवता: लक्ष्मी। दिन: शुक्रवार। दान: सफ़ेद मिठाई, चावल या वस्त्र का दान, कलाओं का सहयोग। आदत: सौंदर्य, संगीत और सम्मानजनक संबंध। मंत्र (वैकल्पिक): ॐ शुक्राय नमः।

### ❖ चंद्र के लिए

पारंपरिक रूप से संबद्ध देवता: शिव / पार्वती। दिन: सोमवार। दान: दूध, चावल या सफ़ेद वस्त्र का दान, माता की सेवा। आदत: पर्याप्त जल, शांत संध्या और डायरी-लेखन। मंत्र (वैकल्पिक): ॐ चन्द्राय नमः।

### ❖ रत्नों के विषय में

पारंपरिक रत्न-सलाह लग्नेश (सूर्य) और पंचमेश व नवमेश (गुरु, मंगल) से आरंभ होती है। रत्न वैकल्पिक हैं; दबाव में कभी न ख़रीदें, और ऊपर के अभौतिक अभ्यासों को प्राथमिकता दें।

उपाय केवल पारंपरिक सुझाव हैं। ये वैकल्पिक हैं, किसी परिणाम की गारंटी नहीं देते, और किसी चीज़ के निदान, इलाज, उपचार या रोकथाम का दावा नहीं करते। कुछ भी ख़रीदना आवश्यक नहीं, और हम उपाय, अनुष्ठान या रत्न नहीं बेचते।



# शब्दावली

इस रिपोर्ट में प्रयुक्त शब्द, संक्षेप में।

| शब्द | अर्थ |
|---|---|
| लग्न | जन्म के समय पूर्वी क्षितिज पर उदित राशि; प्रथम भाव और सभी भावों का आरंभ-बिंदु। |
| राशि | 30° का राशि-चक्र खंड। "आपकी राशि" प्रायः चंद्र राशि होती है। |
| नक्षत्र | 13°20′ के 27 चंद्र-नक्षत्रों में से एक; जन्म-नक्षत्र चंद्र का नक्षत्र है। |
| पद (चरण) | नक्षत्र का चौथाई भाग (3°20′); हर पद एक नवांश राशि से जुड़ता है। |
| भाव | घर; जीवन के बारह क्षेत्रों में से एक। |
| भावेश | भाव की राशि का स्वामी ग्रह; इसकी स्थिति बताती है कि भाव के विषय कहाँ ले जाते हैं। |
| ग्रह | वैदिक ज्योतिष के नौ ग्रह: सूर्य से शनि तक तथा राहु और केतु। |
| राहु-केतु | चंद्र के उत्तरी और दक्षिणी पात; बिना पिंड के छाया ग्रह, सदा आमने-सामने। |
| बल (गरिमा) | राशि में ग्रह की सहजता: उच्च, स्वराशि, मित्र, सम, शत्रु या नीच। |
| मूलत्रिकोण | ग्रह की स्वराशि का विशेष भाग जहाँ वह विशेष उद्देश्य से कार्य करता है। |
| वक्री | पृथ्वी से पीछे की ओर चलता दिखने वाला ग्रह। |
| अस्त | सूर्य के बहुत निकट ग्रह; इसके कारकत्व कम दिखाई देते हैं। |
| दृष्टि | ग्रह की भावों पर दृष्टि; सभी ग्रह सातवें को देखते हैं, मंगल, गुरु और शनि (और कई मतों में राहु-केतु) की विशेष दृष्टियाँ हैं। |
| युति | एक ही राशि में दो या अधिक ग्रह। |
| केंद्र | भाव 1, 4, 7, 10: कुंडली के स्तंभ। |
| त्रिकोण | भाव 1, 5, 9: कृपा और पुण्य के भाव। |
| दुःस्थान | भाव 6, 8, 12: बाधा, रूपांतरण और हानि के भाव। |
| उपचय | भाव 3, 6, 10, 11: समय और प्रयास से सुधरने वाले भाव। |
| वर्ग | विभाजन कुंडली जो जीवन के एक क्षेत्र को विस्तार से दिखाती है, जैसे विवाह के लिए D9 या करियर के लिए D10। |
| नवांश (D9) | नौवें भाग की कुंडली; D1 के बाद सबसे महत्वपूर्ण वर्ग। |
| दशमांश (D10) | दसवें भाग की कुंडली, करियर के लिए। |
| विंशोत्तरी दशा | जन्म के चंद्र-नक्षत्र पर आधारित 120 वर्षों का ग्रह-अवधि चक्र। |
| महादशा / अंतर्दशा / प्रत्यंतर | दशा-पद्धति की मुख्य अवधि, उप-अवधि और उप-उप-अवधि। |
| गोचर | ग्रहों की वर्तमान चाल, जिसे जन्म कुंडली के सापेक्ष, प्रायः चंद्र से, पढ़ा जाता है। |
| साढ़े साती | चंद्र से बारहवीं, पहली और दूसरी राशि में शनि का लगभग साढ़े सात वर्ष का गोचर। |
| अष्टकवर्ग | बिंदु-पद्धति जो बताती है कि हर राशि हर ग्रह के लिए कितनी सहायक है; योग सर्वाष्टकवर्ग कहलाता है। |

| शब्द | अर्थ |
|---|---|
| बिंदु | अष्टकवर्ग का शुभ अंक। |
| षड्बल | ग्रहों का छह प्रकार का बल; यह रिपोर्ट इसका सांकेतिक आंशिक रूप दिखाती है। |
| विंशोपक | विभाजन कुंडलियों में ग्रह की गरिमा से बना 20-अंकीय बल। |
| योग | ग्रहों का परिभाषित संयोजन जो किसी संभावना का वर्णन करता है। |
| दोष | पारंपरिक पीड़ा-संयोजन; वर्णनात्मक, कोई दंड नहीं। |
| तिथि | चंद्र दिवस; सूर्य से चंद्र की दूरी से मापी जाती है, हर चंद्र मास में 30। |
| करण | तिथि का आधा भाग। |
| नित्य योग | सूर्य और चंद्र के भोगांशों के योग से बने 27 योगों में से एक; पंचांग का अंग। |
| वार | सूर्योदय से गिना जाने वाला सप्ताह-दिवस। |
| अयनांश | सायन और निरयन राशि-चक्र का अंतर; यह रिपोर्ट लाहिरी अयनांश का उपयोग करती है। |
| चर कारक | अंशों के क्रम से जैमिनी कारक, आत्मकारक (आत्मा) से दारकारक (जीवनसाथी) तक। |
| आरूढ़ | भाव की "छवि": उसके विषय संसार को कैसे दिखते हैं (स्वयं के लिए AL, विवाह के लिए UL)। |
| अवस्था | अंशों के अनुसार ग्रह की आयु-अवस्था, बाल से मृत तक। |
| विक्रम संवत / शक | पारंपरिक भारतीय संवत; वर्ष चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से आरंभ होता है। |

# महत्वपूर्ण अस्वीकरण

**केवल मार्गदर्शन और मनोरंजन।** ज्योतिष रिपोर्ट केवल मार्गदर्शन, आत्म-चिंतन और मनोरंजन के लिए हैं। ये पारंपरिक पद्धतियों पर आधारित हैं, वैज्ञानिक रूप से प्रमाणित नहीं हैं और किसी परिणाम की गारंटी नहीं देतीं। ये चिकित्सा, कानूनी, वित्तीय, मनोवैज्ञानिक या अन्य पेशेवर सलाह का विकल्प नहीं हैं। रिपोर्ट के आधार पर स्वास्थ्य, कानूनी या वित्तीय निर्णय न लें।

**यह रिपोर्ट कैसे बनी।** कुंडली कंप्यूटर द्वारा गणना की जाती है (स्विस एफ़ेमेरिस, लाहिरी अयनांश) और व्याख्याएँ AI सहायता से लिखी व मनुष्यों द्वारा संपादित हैं। कोई ज्योतिषी व्यक्तिगत रिपोर्ट की समीक्षा नहीं करता।

परिणाम दिए गए जन्म विवरण की सटीकता पर निर्भर करते हैं; गलत जन्म समय से लग्न, भाव और समय-निर्धारण बदल सकते हैं।

ज्योतिषियों की पद्धतियाँ (अयनांश, भाव-पद्धति, राहु-केतु की गणना) अलग-अलग होती हैं; कोई अन्य ज्योतिषी अलग निष्कर्ष पर पहुँच सकता है।

जहाँ परंपरा किसी अवधि या ग्रह-स्थिति को चुनौतीपूर्ण बताती है, वह किसी हानि की भविष्यवाणी नहीं है। आपके निर्णय और परिस्थितियाँ कहीं अधिक मायने रखती हैं।

जिन क्षेत्रों में भविष्य-कथन (फ़ॉर्च्यून-टेलिंग) विनियमित है, वहाँ के ग्राहकों के लिए यह रिपोर्ट केवल मनोरंजन हेतु प्रदान की जाती है।

यदि आप मानसिक संकट में हैं, तो कृपया किसी स्थानीय हेल्पलाइन या आपातकालीन सेवा से संपर्क करें। भारत में आप टेली-मानस (Tele-MANAS) मानसिक-स्वास्थ्य हेल्पलाइन 14416 पर संपर्क कर सकते हैं।

किसी परिणाम की गारंटी नहीं है। अपने निर्णयों की पूरी ज़िम्मेदारी आपकी अपनी है।

Kundli Reports · kundlireports.com · support@kundlireports.com
रिपोर्ट SAMPLE · निर्माण तिथि 28 नवंबर 2026 · गणना: स्विस एफ़ेमेरिस (AGPL), लाहिरी अयनांश, पूर्ण-राशि भाव, माध्य राहु-केतु। · नमूना, काल्पनिक जन्म विवरण।
टाइपफ़ेस: Eczar, Crimson Pro, Martel, Kalam और Noto Sans Devanagari (SIL Open Font License)।